

योगनिष्ठ पूज्य जैनसाधु श्रीमद् बुद्धिसागरजी अने तेमनो काव्य संग्रह.

हरकोइ मनुष्यने सुख प्राप्त करवानी अभिलाषा होय छे. अने ए सुख माटेज प्रत्येक प्राणीओ विविध प्रकारनी प्रवृत्तिमां प्रवृत्त थता जणाय छे, तेमां ते मार्गना परंतरे आवी कोइ विजयवंत निकळवा नथी तो एक बाजुए विरल विरल पुरुषो सत्सुखमां निमग्न थयेला होय छे. विशेष स्तुतिपात्र एनेज मानी शकाय के, जाते सत्सुखानन्दी होइ बीजानुं दुःख टाळवा प्रवृत्ति करे छे.

हुं बीजाने सुख आपीश एम धारी घणा माणसो पोताने प्राप्त थयेल साधनो पोताथी अधः स्थितिवाळाने पुरां पाडवा जाय छे. राजाओ, शेठीआओ, अने धनवंत जनो, धनलक्ष्मी एज सुखनुं साधन माने छे अने एथीज बीजा सुखी थशे एम विचारी धनादिकथी अनेक प्रकारे सहाय आपे छे पण आ मार्ग मध्यम छे. कारण के धनादिक पदार्थ मात्र आजन्मपर्यंतने माटे पण अनिश्चयात्मक सुखस्वरूप होय छे. ए करतां महात्मा पुरुषो उपदेशादिथी हृदयपूर्वकनुं शुद्ध अध्यात्मज्ञानथी विभूषित् ज्ञान आपे छे. ए ज्ञानथी उत्पन्न थयेल निजानंद स्वरूप सुख कदी एटले जन्मांतरमां पण नष्ट थतुं नथी. ए सर्व कोइ मार्गवाळा माने छे.

उपदेश उभय प्रकारे आपी शकाय छे प्रत्यक्षपणे, अने अप्रत्यक्षपणे, ज्यां सुधी शरीर आलोकपर विचरी शके छे. त्यां सुधीना माटेज प्रत्यक्षपणे उपदेश आपी शकाय छे. पण ग्रंथादिक बनावी अविचळ अक्षर देहथी आपवामां आवतो अप्रत्यक्षपणे उपदेश क्यां सुधी त्यांचो काळ रही शके ए कहेवुं मानवनी

बुद्धिनी बहार छे छतां एटलुं तो मानवुं पडशे के लांबो काळ सुधी ए अक्षरदेह परोपकारार्थ टकी शके छे.

प्रत्यक्ष अने अप्रत्यक्षोपदेश पण उभय प्रकारनो होय छे. एक गद्यमां अने बीजो पद्यमां अक्षरोने अमुक प्रकारनी गोठवणी शिवाय मात्र रसपूरित भावार्थवाळुं जे लखाण ते गद्य कहेवाय छे. अने वर्णमात्राने अमुक प्रकारनी गणमात्राए बद्धकृतिमां लखेल लेख पद्य कहेवाय छे आ बेय अक्षरदेह स्वरूप छे. पण बुद्धिनी लालित्यता भाषा गौरव ने हृदय पटपर छाप पाडनार भाव पद्यमां, गद्य करतां अधिक अंशे समायेल छे. साधारण वार्ताओ करतां कवि लोकोए लखेला कविताओना ग्रंथो केवी अस्तित्वता भजवी उन्नतता भोगवे छे ए कोनी जाण बहार छे.

पद्यमां पण बे भेद छे. पिंगळ पद्य, शार्दुलविक्रीडित, स्रगधरा, शिखरिणी आदि वर्ण मेळना छंदो. ए प्रथम प्रकार छे. अने रागरागणीमां भजन कीर्तनो, पद ख्याल, ठुमरीओ, गजलो ए पद्यनो बीजो प्रकार छे. पहेला प्रकार करतां पण काळबळ, देशनी स्थिति रीति मानवनी मनोविचारणाओने अवलोकी, आ पद्यना बीजा प्रकारने अमो प्राधान्य मानीशुं कारण जे भणेल वर्ग होय छे. अने तेमां पण जेमणे पिंगळ वगेरेनो अभ्यास करेलो होय छे उपरांत रस अलंकारना जेओ ज्ञाता होय छे तेमने प्रथम मार्ग मरम मालुम पडशे पण हिंदनी हालनी प्रजा अधमथी ते उत्तम वर्ग सुधी संगितपर जेटली मस्त छे तेटली प्रथम प्रकारमां गौण अंशे छे.

मानव तो शुं पण सर्प. हरिण. आदि पशु जातिमां संगीत साम्राज्य भोगवे छे. सुंदर चंद्रमानी पवित्र श्वेत छाया अने पवननी सुमट लहरीओमां वींणानाद आरंभेल रागध्वनि हरिणनां

मान्य भाषाओ छे तो ते भाषा प्रिय केम नही.?

तेमने पण अमो खुल्ला हृदयथी कहिशुं के, गुजरातमां अत्यारे गुजराती भाषा जाणनार जेटलां माणसो छे तेथी केटलाक ओछा अंशे अंग्रेजी अगर संस्कृत भणेलाओ छे. माटे संस्कृत जाणनार माटे संस्कृत भाषा उत्तम अने अंग्रेजीवाळाने इंग्रेजी ठीक. संस्कृत भणेलाने इंग्रेजी नकामी, ने इंग्रेजीवाळाने संस्कृत नकामी छतां गुजराती तो बेउने उपयोगी छे माटे गुजराती भाषानुं माधान्य कहीए ए अमने ठीक जणाय छे गुर्जर देशवाळा मनुष्योने गुर्जर भाषा मातृ भाषा गणाय छे मातृ भाषामां जे हृदयना उद्गार नीकळे छे ते अन्य भाषामां नीकळता नथी.

जे वखतमां संस्कृत भाषा आर्यावर्त्तमां चालती ते वखतमां संस्कृत ग्रंथो रचाया छे. पण काल वळे जेम जेम भाषामां फेरफार थई प्राकृत भाषाओ थवा मांडी त्यारे ते ते भाषाओनुं संस्कृत करतां प्राधान्यत्व थयुं. हाले तो संस्कृत अने इंग्रेजी भाषाओनां गुजरातीमां भाषान्तर बनाववां पडे छे. अमो एम नथी कहेता के संस्कृत भाषा करतां गुजराती अने बीजी प्राकृत भाषाओ चिडायती छे. संस्कृत भाषा घणी गौरवतावाळी छे ए नक्की छे पण हाल आपणा देश, धर्म अने व्यवहारना उदय माटे गुजराती भाषामां ज जनसेवा बजाववानी छे तेम बीजा देशवाळाए पोत पोतानी भाषामां सेवा बजाववा जेवुं छे.

जेम संस्कृतमां एक अष्टक कर्युं होय अने हिन्दवाल तरीके तेने जन समाजमां मोकल्युं होय तो तेने हजारमां बे चार जणज आदर पूर्वक स्वीकारशे पण जो गुजरातीमां भजन, ख्याल के ठुमरी के दुहा चोपाइ-ना रूपमां रसीलो श्लोक मोकलवामां आवे तो हजारे लगभग सात्र? उपर स्वीकारनार मळशे एटले अभ-

य पण भणेलाना मुखथी सांभळी तेने समजी आल्हादशे. आगळना संस्कृतभाषाना जमानाना संगितपर असारना लोकोनुं हृदय प्रेम तत्त्वाळुं तेटलुं होय एम परिपूर्ण लागतुं नथी. कारण संस्कृतना तमाम ग्रंथो छंदोमां छे. कोइ पण संगितमां कचित् मालुम पडे छे. शोभन स्तुतिना कर्त्ता शोभन मुनि, विनयविजयजी, यशोविजयजी, जयदेव जेवा ओए एक वखत आ मार्गे प्रकाश कर्यो जणाय छे पण तेना पछी ते मार्गे कोइ पंडित परवर्यो होय एम जणातुं नथी.

अरे अत्यारे अनेक जातना लोको पण एकतारो, मंजीरानी धूनमां वे घडी संगितमयमार्गी भजनमां मस्त जणाय छे. तथा केटलाक ठुमरी अने साधारण पदोमां ईश्वर स्तवनादि पोताना हृदयने प्रीय लागे तेवा रागोमां गाय छे. केटलाक लोको भैरवी, मालकोश, धनाश्री, सारंग, कल्याण, वगेरे रागोमां सतार, हारमोनीयम वगेरे वाद्योमां, छाया जमावी घडीभर दुःखनी विस्मृति करावे छे. नाटकोमां पण गायन, गायन ने गायन ज. अर्थात् आखा देशोना देशोमां संगीतनी लगनी लागी रही छे.

तो आवे समये संगीतद्वाराए लोकोनां हृदयने उन्नत करवां. ए एक मुख्य कर्त्तव्य छे.

जैन साधु योगनिष्ठ पूज्य श्री बुद्धिसागरजी.

एओना करेला भजनपद संग्रहना चार भाग म्हें वांच्या छे. अने ए अवलोकनथी म्हारुं हृदय शांत थाय छे. कारण व्यवहार परमार्थ अने स्वदेश ए त्रणनी उन्नतिना मार्ग नयनां. पदमां, ग्रंथो वांची एमने अन्य मतपना मुकाम वगेरेनुं हित मांडयुं छे. एमना भजनोना शांतिना पदो ते ज तेम तेम वांचता जइए त्यारे तेम तेम पुनः पुनः वांचवा ए कविनां मा जिज्ञासा थाय छे.

एमना माटे कवीश्वर माघनुं वाक्य सफळ छे,

क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति,

तदेवरूपं रमणियतायाः

जे जे पदार्थ जोतां छतां पण फरी' जोवा आकर्षण करे ते ज रमणीयता.

पहेला भागमां भाषा मस्त छे. एटले पोताना एक अध्यात्म निशानने लेइ सहज स्फुरणाथी ए भाग रच्यो छे तेमां आनंदघन अने चिदानंदजीनी भाषानुं खास अनुकरण कर्युं छे. तेथी ते अप्रासंगिक नहि गणाय. आज रीतने अनुसरी सरस्वतिचंद्रमां द्विभाषिक जे होरी लखी छे.

मैंतो नाहिरे रहुंगी ए नगरमें,

घोळे दहाडे कीशनजी लुंटे छे अमने,

ए गोपीओनां शुद्ध प्रेमने आकर्षाइ प्रेम वाक्यो अने आगल्ना महान् कवीश्वरोए विरहावस्थामां के मस्तावस्थामां झाड पहाड नद सरोवरोने मनुष्यो पासे प्रश्नो पुछावल होय ए छे एम केहेवायज केम ? नज कहेवाय.

तद्वत् आ सागरजी कृत कवितानो प्रेम तथा स्वात्ममस्तावस्थाने लेइ आनंदघन तथा यशोविजयजी वगेरेनी रीतिने अनुसरतां कोइ आक्षेप मूके तो अमो हर्दिः नाशीये छीए,

भजन करले भजन करले,

भजन काल्हे माईरे,

दुनिर्भादारी दुःखनो क्यारी,

जुठी जगतनी सगाईरे,

ए भजन करती वखतनो कर्त्तानो उमंग एम वैराग्यावस्था अने भजननो राग, ढाळो, सरेसर असरकारक छे, अने एनी

मान्यता थोडा समयमां एटली थइ छे के हरकोइ धर्मवाळा पण कळवमां, भजनमां, अने एकांतमां, उत्साहमां एने उचरता जणाय छे. विजापुर वगेरेमां वगडाओमां पण लोको हरतां फरतां वैराग्यथी गाय छे. ए शिवाय चिदानंदजी तथा आनंदघनजीनां प्रेमनी मूर्तिस्वरूप थोडां भजनो पण ए भागमां कर्ताए स्नेहे आकर्षाइ दाखल करेलां छे.

कौन गुन भयोरे उदासी
भमरा कौन गुन भयोरे उदासी.
आनन्दघनजी.

तथा

मत कोइ प्रेमके फन्दपरे
परत सो निकसत नाही. मत०
प्रेमके कारन पपैआ पुकारत
दीपक पतंग जरे मत०

* * *

आनन्दघन प्रभु आय मीलो तब
तुम विरहकी पीरटरे मत०
आनन्दघनजी.

आनदघनजी जैनोमां एक योगी महात्मा थइ गया छे,

श्रीमान् बुद्धिसागरजीने अमो जैनोमां तो आनंदघन अने चिदानन्दनी जोडमां मेळवी ए त्रणनी त्रीपुटी करी आल्हादीए छीए. कारण के उपरोक्त बन्ने महात्माओना विचारो स्वात्मनिष्ठतानो कविताओमां क्वचित् भिन्न जणाता नथी

बीजो भाग हालनी गुर्जर भाषामां रच्यो छे ने घणीखरी

कविता पिंगळमां वतावेल छंदोमां छे. ते शुद्ध व्यवहारने अति उपयोगी छे. कारण दया, विवेक, न्याय, सत्य आदि लक्षणो आवाळवृद्ध सर्व दर्शनवाळाने उपयोगी छे ए संबंधीनाज लेखो छे. भाषा सरल छे, रसहृदयभेदक छे उपरोक्त वैराग्य. सुख दुःखमां समभाव, निंद्रा त्याग, स्वार्थ स्वरूप, परमार्थ स्वरूप, दान स्वरूप, कपट स्वरूप, उपकार महिमा, आदि अनेक उपदेशो समाया छे. वळी योग मार्गमां पोते निष्पक्षपाती होवाथी, योग महिमाना विषयोनां तेमनां भजनो बहुज आनंद आपे छे. ४४ मा पत्रे योग माटे थोडा झूलणा छंद छे. तेमांथी अवकाश स्थल संकोचने लेइ एक बे टांकी बतावुं छुं.

योग विद्यातणुं धाम चेतन प्रभु,
शक्ति सिद्धो समी रही प्रकाशी
योगविद् मानवी चित्तमां ध्यानथी,
पिण्ड ब्रह्माण्ड भावो विलासी. १

चक्र षट् भेदवां वायुनां पिण्डमां,
गगनगढ चालवुं वंक नाले;
ज्योति जळ हळ अति शोक चिन्ता नथी,
हंसलो शान्ति सुख मांहि म्हाले
पिण्ड ब्रह्माण्डनी ऐक्यता आत्ममां,
शुद्ध उपयोगथी जेह जागे;
अष्ट सिद्धि सदा हस्त जोडी रहे,
चित्त रंगाय नहि बाह्य रागे,
अल्लमनी धूनमां भासता दिन मणि,
भक्ति उन्मादथी यत्न थागे;
बुद्धिसागर सदा ज्योतिमां जागजे,

शुध्धचेतन प्रभु चित्त प्यारो,

आ छंदोमां कर्तानुं विद्वान्‌पणुं यथार्थ जणाय छे. योगविद्यानुं धाम परमात्मा छे. सिद्ध समान शक्ति योगमां छे. अर्थात् सिद्ध थवुं होय तो पण योग शक्तिथी थइ शकाय छे. पिण्ड तथा ब्रह्माण्डनी ऐक्यता योगथी थइ शके छे. छचक्र भेदीने गगनगढरुप ब्रह्मरंध्रमां जवुं. त्यां जवा वंकनाल कहेतां मेरु दंड मार्ग छे. गया बाद अनंततेजोमय ऐश्वर्यमय आत्मानो भास थाय छे. चिंता अने शोक त्यां जणातां नथी. पिन्ड ब्रह्मांडनी ऐक्यता आत्मामां थाय छे. त्यारे अष्ट सिद्धि हाथ जोडी वरवा खडी थइ जाय छे पण ते बाह्य रागवाळी सिद्धिओमां ते योगीनुं मन रंगातुं नथी.आसक्त थतुं नथी अलक्ष्यनुं स्वरूप वैखरीना शब्दोथी वर्णी शकातुं नथी. आत्मा वर्णोथी परिपूर्ण रीते लखातो नथी. तेम अज्ञानीना परिपूर्ण लक्ष्यमां आवतो नथी, एटलो ऐश्वर्यवंत छे. ते भक्तिना उत्साहथी तेने मेळववा यत्न करो.

आ वातने योगीओ कबुल करे छे.

यथा सिंहो गजो व्याघ्रो,
भवेत् वश्यं शनैः शनैः

सिंह गज व्याघ्र वगेरे प्राणीओ हळवे हळवे युक्तिथी वश्य थाय छे. तेमज प्राणने वश्य करवो अन्यथा साधकनो प्राण नाश थाय छे.

आम एक भजनमां भक्तियोग वैराग्यादिक संपूर्ण समाया छे, माटे कर्तानुं ज्ञान. भक्ति.क्रिया ए त्रण पदार्थपर वखाण करवे लाग छे. जे जे भजनो नाहक जोइए. तेमां निबद्ध थइए छीए माटे अमो तो थोडी थोडी रचीओमां नव कर्तानो निर्देश अने एटालोज छीए कारण टेक भजनोनुं अवलोकन करवां जो ए छंदो करवां

बीजा नवा कोण जाणे केटला घणा ग्रंथ थाय एम छे.

त्रीजा तथा चोथामां तो मात्र अलख खुमारीज छे. एक विद्युत् चमत्कारमां जेम मोतिढार परोववा जेटली एकाग्रता अने बाह्यवृत्तिनी निवृत्ति जोइए तेटलीज निवृत्ति लेइ स्वात्मलक्ष्यमां कर्त्ता चाल्या जाय छे जाणे एक मुक्त महद् पुरुष होय नहि ! उपरना बे करतां आ बे भाग वधारे हृदयाकर्षनार छे भाषा उच्च छे.

देह तंबुर विषे एक बे वाक्यो.

देह तंबुरो सात धातुनो
रचना तेनी वेश बनी
इडा पिंगला अने सुषुम्णा
नाडिनी शोभा अजब घणी.

देह तंबुरो अलख धुनमां, परा पश्यंतिथी वागे;
जाग्रत् तुर्यावस्थामांहि, चेतन यथाक्रमे जागे.
देह तंबुरो वगाडनारो, चिदानन्द घटमां जागे;
बुद्धिसागर अलख धूनमां, अनंत सुख छे वैराग्ये.

आ आत्मभावनी उच्चदशानी पराकाष्टा कहीए तो चाले. आत्मखुमारी, योगविषय, तत्वज्ञान, वगेरेनां हेडींगवाळी कविताओ अति उत्कृष्ट छे.

अमो हद बहार जइ वखाणता नथी. पण हृदय पूर्वकनी लागणी साथे कहीएछीएके आत्मज्ञान स्वदेशोदय, व्यवहारोदय माटे सर्वे जणने ए भाग घट्ट उपयोगी छे. जैनोना तीर्थंकरोनी स्तुतिओ एमां समायली छे ते जैनोने अति उपयोगी छे. पण दया, दान तपश्या, ज्ञान भक्ति, वैराग्य, योग आदिना विषयो उपरना निर्लोभताए जनकल्याणमाटे ज ए विरक्तपुरुषे जे प्रयत्न कर्यो छे तेने वच्चवाट आपीएछीए पुस्तकोनुं मूल्य एटलुं



सरल राख्युं छे के ए सुशोभित पुस्तकोना मूल्य करतां छपाव-
नारने खर्च वधारे छे. एम करवानुं कारण तेमनी परोपकार
दृष्टिज छे.

हवे अमो एटलुं कहीने विरमीशु के श्री बुद्धिसागरजी जेवा सत्यग्राही, ज्ञानी, योगी आत्मनिष्ठ अने परोपकार परायण पुरुष धर्म मार्गनो उद्धार करो एटलुंज नही पण व्यवहार तथा देशनुं पण उदय करो ते माटेज तेमनुं जीवन परमात्मा दीर्घ करे. तथास्तु सं. १९६५ विजया दशमी.

वरसोडा निवासी पंडित भोळानाथ शर्मा.

भजनसंग्रहभागचतुर्थ संबंधी लेख्य.

नवरस रंगित काव्यना आस्वादथी जे सुख थाय छे ते सुख खरेखर अध्यात्म रसनी आगळ एक बिंदु मात्र पण नथी. अध्यात्मरसमां रंगित थतां पराभाषा स्वयमेव खीले छे, अने जे वस्तुनो अनुभव थाय छे, ते वैखरीवाणी द्वारा अक्षर रुपे बहिर् प्रकाशे छे. आ भजन संग्रह चतुर्थ भागमां पण विशेषतः तेवीज स्थिति थएली छे. संवत १९६५ ना माह शुदी बीजना दीवसे अमदावादथी डभोइ तरफ जवा विहार कर्यो. त्यारे विहारमां जे जे गामो आवतां तेमां अनुपाधिदशायोगे जेवा जेवा संयोगो पामी जेवा जेवा आध्यात्मिक विचारो उद्भवता हता. ते काव्यरुपे गोटववामां आव्या छे. अमदावादथी मातर अने मातरथी कावीठा अने कावीठाथी बोरमद थइ पादरा जवानुं थयुं. पादरामां

वकीलजी शा. मोहनलालभाइ हीमचंदभाइ उत्तम आत्मार्थी श्रावक व्रत धारी छे. त्यां मास कल्प करतां. प्रथम चोवीसी रचवामां आवी. चोवीसीमांनां केटलांक स्तवन पादरामां पूर्ण कर्यां. त्यार बाद त्यांथी डभोइ जवानुं थयुं. सं. १९६५ फागण सुदी ११ ना दीवसे डभोई जइ श्री यशोविजयजी उपाध्यायनी पादुकानां दर्शन कर्यां. परमानंद थयो. त्यां श्री यशोविजयभीनी देरी पासे येभी चोवीसी संपूर्ण रची. अने श्री यशोविजयजी महाराजनी गुंहली स्तुति भजन वगेरे काव्य बनाव्यां. डभोईमां फागण शुदी १४ ना रोज संघ समक्ष होली करवी नहि एवो ठराव उपदेशथी थयो. डभोइथी वडोदरा आववानुं थयुं वडोदरा शहेरमां फंटीयाळानी धर्मशाळामां उतरी त्यां केटलांक भजन रच्यां.सांथी मामानी पोळना उपाश्रये आवी सांकेटलांक भजनरच्यां. मामानी पोळमां शा. केशवलाल लालचंद, तथा अमृतलाल तथा माणेकलाल भाविक श्रावको छे. चैत्र सुदी ४ ना रोज श्रीमत् सयाजीराव गायकवाडनी इच्छाना आग्रहथी लक्ष्मी विलास पेलेसमां आत्मोन्नति विषयनुं भाषण आप्युं. त्यांथी विहार करी पादरामां आववानुं थयुं वकीलजी मोहनलाल हीमचंदनो पुत्र सवाइ मरण पामवाथी तेमने शोक थयो हतो तेथी उपदेश आपी शांत कर्या. त्यांथी विहार करी खंभात चैत्रशुदी बारसना रोज आववुं थयुं. त्यांना पुस्तकोना भंडार जोया. त्यां सात दीवस व्याख्यान आप्यां त्यां परब्रह्मनिराकरणग्रंथ रचवामां आव्यो त्यांथी नार गाममां आववानुं थयुं त्यां चार जाहेर व्याख्यान आप्यां. त्यांथी पेटलाद, सुणाव थइ वसो आववानुं थयुं. वसोमां जाहेर चार भाषणो आप्यां लोकोने सारी असर थइ. त्यांथी सेंदा आव्या त्यां एक जाहेर भाषण आप्युं. त्यांथी वैशाख सुदी



तभाइ प्रसिद्ध अने वळी लक्ष्मीनी पधरामणी थइ तेथी कीर्तिमां वृद्धि थइ. धर्मनां कार्य विशेषतः करवा लाग्या. श्री नेमसागरजी तथा श्री बुटेरायजी वगेरे पवित्र साधुओनी भक्ति करवा लाग्या. साधुओनी धर्म देशना सांभळवा लाग्या, शेठाणी गंगाबेननां पगलांथी सर्व प्रकारे श्रावकधर्मनी शोभा वधवा लागी, शेठ दलपतभाइए १९२२ नी सालमां श्रीसिद्धाचलजीनो संघ कहाड्यो अने तेमां सारी रीते धननो व्यय कर्यो, एक उजमणुं कर्युं तेमां सारी रीते रुपैया वापर्या. शेठ दलपतभाइए सिद्धाचल तीर्थनां धर्म कार्य करवामां तन मन धनथी प्रयत्न कर्यो छे. शेठ. दलपतभाइ भगुभाइए घणां श्रावक योग्य धर्मनां कार्य कर्यां छे. तेमनो देहोत्सर्ग थयो छे तेमना त्रण पुत्र हाल विद्यमान छे. जैन श्वेतांबर कोन्फरन्सना जनरल सेक्रेटेरी. शेठ लालभाइ दलपतभाइ शेठ. मणिभाइ दलपतभाइ तथा शेठ. जगाभाइ दलपतभाइ बी. ए.

शेठ लालभाइ दलपतभाइ कोन्फरन्सना जनरल सेक्रेटरी तरीके थया छे. तथा आणंदजी कल्याणजीनी पेढीनो वहीवट सारी रीते करे छे. स्थावर तीर्थनी रक्षामां अग्रगण्य भाग ले छे शेठ मणिभाइ तथा शेठ जगाभाइथी पण धर्मनां कृत्यो सारी रीते कराओ एम इच्छाय छे. शेठाणीनुं नाम प्रसिद्ध अमर राखवा माटे त्रण पुत्रोए मळी त्रीस हजार रुपैया काढी, एक झवेरी वाडाना नाके श्राविकाशाला बांधवानुं नक्की कर्युं छे तेनो लाभ श्राविकाओने आपवानी मगवदना करवामां हाल प्रयत्न थाय छे श्री रविसागरजी महाराजने गंगा बेन शेठाणी गुरु करी माने छे. रविसागरजीनी पासे उपधानमां क्रिया प्रथम नेमसागरजी ह ी नेमसागरजी महाराजना सदुपदेशथी धार्मिक ... गंगा रुपमणी तथा माणिकुंवर थइ तथा ते समागे गंगा बेन शेठाणीनो श्री रविसागरजी महाराज

उपर भक्ति राग छे. रविसागरजी महाराजना संघाडामां अग्रगण्य श्राविका हाल ते वर्ते छे. शेठाणीए अनेक तीर्थनी घणीवार यात्राओ करी छे. जंगम तीर्थ साधुओनी पण अनेक यात्राओ करी धर्म देशना सांभळी छे. शेठाणी साधु साध्वीओने पूर्ण भक्तिथी वहोरावीने खाय छे. तपश्चर्या करवामां उत्साही छे. देव गुरुनुं आराधन यथामति शक्तिथी सारी रीते करे छे. आवी उत्तम शेठाणीना आग्रहथी अमदावादमां सं. १९६५ नुं चोमासुं करी भव्य जीवोना हित माटे भजनसंग्रह चोथो भाग तैयार कर्यो छे. आध्यात्मिक भजनो अंतरनी स्फुरणा सहेजे उद्भववाथी बन्यां छे. अने नीति आदि पदो तेवी औपदेशिक स्फुरणा लावी बनाव्यां छे.

निष्काम भावनाथी आ प्रवृत्ति थई छे अन्य दर्शनवाळाओ पण आ भजनने वांची सन्मार्गमां प्रवर्ते छे. निश्चयनयनी प्राधान्यताए केटलाक आत्माना आध्यात्मिक उद्गार नीकळ्या छे. केटलाक व्यवहार नयना प्राधान्यताए उद्गार नीकळ्या छे. ज्यां त्यां नयो वडे सापेक्षबोध समजवो. राग वा कोई विषय न बेसे तो पंडितो पासेथी खुलासो मेळवी निःशंक थवुं. भजनसंग्रह-चतुर्थभागमां श्री यशोविजयउपाध्यायकृतसीमंधरजिनस्तवन, तथा बे तेमनां स्तवन तथा परमेष्ठीगीता, तथा समुद्रवहाणसंवाद तथा ब्रह्मगीता, सिद्धाचल स्तवन तथा संवत.१३२७नी सालनो सात क्षेत्रनो रास यथामति शुद्ध करी तथा फुटनोट करी छपाव्यो छे. खंभातना भंडारमांथी सात क्षेत्रनो रास शोधतां नीकळ्यो छे. आगळ उपर आ छपायलो रास तथा ते जुनो एम बे बराबर तपासी पूर्ण शुद्ध करी रास छपाववा विचार थशे गुर्जर भाषाना अभ्यासकोने आ रास अत्यंत उपयोगी थशे विशेष कंइ भूलचूक रही होय तो पंडित पुरुषो सुधारशो

भव्य जीवाना हित माटे आ पुस्तक अमदावादना शा. मोहनलाल हीमचंदना पुत्रोए पोतानी माता जासुदना स्मरण माटे लक्ष्मीनो व्यय करी छपाव्युं छे तेथी तेमने तथा वांचकोने सदाकाल लाभ थशे. ज्ञान मार्गमां आवी तेमनी प्रवृत्ति देखी अन्य पण ज्ञानमां लक्ष्मीनो व्यय करशे आवा पुस्तको छपाववा माटे तेमने धन्यवाद घटे छे. झवेरी चमनभाई मोहनलालना आग्रहथी ग्रंथ छपाव्यो छे. अध्यात्मज्ञानप्रसारक मंडलना सद्गृहस्थो तन मन धनथी आवा उत्तम ग्रंथो छपावी प्रसिद्ध करी परोपकार करे छे तेथी ते मंडलना गृहस्थोने धन्यवाद घटे छे

लेखक मुनिबुद्धिसागर–अमदावाद.

बे बोल.

मंडळे शरु करेल ग्रन्थमाळा पैकीनो आ सातमो ग्रन्थ छे. जे ग्रन्थमां मुनिवर्य श्रीमद् बुद्धिसागरजी महाराज रचित स्तवनो पदो उपरांत श्रीमद् यशोविजयजीनी कृतिनां पदो पण छे. हालमां पुस्तको घणी प्रकारनां घणी संस्थाओ तरफथी प्रगट थाय छे पण आ शैलीवाळा ग्रन्थो छेल्ला केटलाक सैकाओमां कोइक ज तरफथी लखाया हशे. आवा प्रकारना ग्रन्थनो आ चोथो भाग प्रगट थयो छे अने तेज उपरथी जोइ शकाशे के जनसमाजनी ते तरफ रुचि वृद्धि पामती जाय छे; केमके विविध विषयोथी भरपूर साथे बोधक, अने रसिक छे. जेम जेम आवा ग्रन्थोनुं वांचन, मनन, वधतुं जशे तेम तेम तत्त्व स्वरूपनो प्रकाश वृद्धि पामशे.

आवा ग्रन्थो प्रगट करवाने समाज: तरफथी मंडळने जुदा जुदा गृहस्थो तरफथी मदद मळे छे अने तेथी मंडळ पोताना कार्यमां आगळ वधे छे. मंडळ इच्छे छे के आ ग्रन्थमाळाना १०८ मणका अनेक गृहस्थोनी सहायताथी सत्वर प्रगट थाओ.

आ ग्रन्थ अमदावादवाळा डा. मोहनलाल हेमचंद सुपुत्रो तरफथी संपूर्ण मदद करी प्रगट करवामां आव्यो छे जे माटे मंडळ तेओने तेओना द्रव्यनो आ रीते करेला सदुपयोग माटे धन्यवाद आपे छे

अध्यात्मज्ञानप्रसारक मंडळ.

भजनपदसंग्रह चोथा भागनी अनुक्रमणिका.





अथ श्री

योगनिष्ठ मुनिवर्य बुद्धिसागरमहाराज कृत

स्तवनपद (भजन) संग्रह.

चतुर्थ भाग आरभ्यते.

ऋषभदेव स्तवनम्.

प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए—ए राग.

ऋषभ जिनेश्वर वंदना, होशो वारंवारः
पुरुषोत्तम भगवान निराकार संत छो, गुणपर्याय आधार. ए टेक.
उत्पत्ति व्यय ध्रौव्यता, एक समयमां हि जोयः
पर्यायार्थिकनयथी व्यय उत्पत्ति छे, द्रव्यथकी ध्रुव होय. ऋ. १
वस करतां सामर्थ्यना, होय पर्याय अनन्तः
अगुरु लघुनी शक्ति ते देहमां जाणीए, अनन्त शक्ति सतंत ऋ. २
परमभाव ग्राहक प्रभु, तेम सामान्य विशेषः
ज्ञेय अनन्तनुं तोल करे प्रभु ताहरो, क्षायिक एक प्रदेश. ऋ. ३
स्थिरता क्षायिक भावथी, मुक्तथी कही नहि जायः
अनन्त गुण निज कार्य करे लही शक्तिने, उत्पत्ति व्यय पाय.ऋ.४
गुण अनन्तनी ध्रौव्यता, द्रव्यपणे छे अनादिः
गुणनी शुद्धि अपेक्षी पर्याये करी, भंगनी स्थिति छे सादि.ऋ.५
सादि अनंति मुक्तिमां, सुख विलसो छो अनंतः
सुख ज्ञेयादिक ज्ञानमां ज्ञाता जगगुरु, ज्ञान अनंत वहंत. ऋ. ६
रागद्वेष युगल हणी, थइया जग महादेवः
बुद्धिसागर अवसर पामी भक्तिथी, पामे अमृतमेव. ऋ. ७

२

अजितनाथ स्तवनम्.

श्री संभवजिन ताहरुरे, अकल अगोचर रूप—ए राग.

अजित जिनेश्वर सेवनारे, करतां पाप पलाय; जिनवरसेवो
सेवो सेवोरे भविकजन सेवो, प्रभु शिव सुख दायक मेवो.
प्रभु सेवे सिद्धि सुहाय.—जिनवर.—एटेक.

मिथ्या मोह निवारीनेरे क्षायिक रत्न प्रहाय. जिनवर.
चारित्र मोह हठावशांरे, स्थिरता क्षायिक थाय; जिनवर. १

क्षपक श्रेणि आरोहीनेरे, शुक्ल ध्यान प्रयोग. जिनवर.
ज्ञानावरणीयादिक हणीरे, क्षायिक नव गुण भोग. जिनवर. २

अष्टकर्मना नाशथीरे, गुण अष्टक प्रगटाय; जिनवर.
एक समय सम श्रेणिएरे, मुक्तिस्थान सुहाय. जिनवर. ३

नात्यंताभाव मुक्तिनोरे, जडिममयी नहि खास. जिनवर.
रूपोमयरे नहि व्यापिनीरे, नहि व्यावृत्ति विलास; जिनवर. ४

सादि अनंति स्थितिथीरे, सिद्धबुद्ध भगवंत जिनवर.
झळहळ ज्योति ज्यां जगमगेरे, ज्ञेयतणो नहि अंत जिनवर. ५

परज्ञेय ध्रुवता त्रिकालमांरे, उत्पत्ति व्यय साथ; जिनवर.
निजज्ञेय ध्रुवता अनन्तनोरे, पर्यायसह शिवनाथ. जिनवर. ६

परजाणे परमां न परिणमेरे, अशुद्धभाव व्यतीत; जिनवर.
बुद्धिसागर ध्यानथीरे, थावे ध्यानी अजित जिनवर. ७

श्री संभवनाथ स्तवनम्.

देखो गति दैवनीरे-ए राग.

संभवजिन तारशोरे, तारशो त्रिभुवननाथ संभव जिन तारशोरे.

निमित्त पुष्टालंबनेरे, साध्यनी सिद्धि कराय;
उपादाननी शुद्धतारे, निमित्त विना नहि थाय. संभव. १

द्रव्य क्षेत्र काल भावथीरे, निमित्तना बहु भेद;
ज्ञान दर्शन चारित्रनारे, निमित्त टाळे खेद. संभव. २

शुद्धदेव गुरु हेतुछेरे, उपादान करे शुद्धि;
उपादान अभिन्नछेरे, कार्यथी जाणो सुद. संभव. ३

कार्य द्रव्यथी भिन्नछेरे, निमित्त हेतु व्यवहार;
शुद्धादिक षट भेदछेरे, व्यवहार नयना धार. संभव. ४

भिन्न निमित्त पण कार्यमांरे, उपादान करे पुष्टि;
निमित्त पण उपादानथीरे, थाय न साध्यनी दृष्टि.संभव. ५

पुष्टालंबन जिनविभुरे, आदर्यो मन धरी भाव,
उपादाननी शुद्धिमां रे, बनशे शुद्ध बनाव. संभव. ६

त्रिकरण योगथी आदर्यो रे, मन धरी साध्यनी दृष्टि;
बुद्धिसागर सुख लहेरे, पामी अनुभव सृष्टि. संभव. ७

६

अभिनंदन स्तवनम्.

धन प्रभु तुम गुन ओलख–ए राग.

अभिनन्दन जिनरूपने, ध्यानमां स्मरणथी लावुं रे;
ध्यानमां लीनता योगथी, सुख अनन्त घट पावुं रे. अभि १

मन वच कायना योगथी, स्थिरता जेह प्रमाण रे;
तदनुगत वीर्यना उल्लसे, भाव क्षयोपशम गुण स्थाणे रे. अभि. २

असंख्यप्रदेशमयी व्यक्तिमां, ध्यानथी ऐकयता थाय रे;
पंडित वीर्य त्यां संपजे, उज्ज्वल अध्यवसाय रे. अभि. ३

क्षण क्षण उज्ज्वल ध्यानमां, प्रगटतो सहज आनन्द रे;
घाय जड विषयना सुखनो, वेगथी नासतो फन्द रे. अभि. ४

अन्तरशुद्धपरिणति थकी, भावथी होय निज मुक्ति रे;
शुद्ध नय स्थानना भावथी, प्रगटती ए तत्त्वनी युक्ति रे० अभि. ५

क्षयोपशम ज्ञान वीर्यथी, क्षायिक धर्म प्रकाश रे;
निर्विकल्प उपयोगमां, श्रुतज्ञान एक स्थिर थाय रे. अभि ६

भावश्रुतज्ञान आदरे, जीव ने जिनरूप थाय रे,
बुद्धिसागर जिन भजता [illegible] अभिनंदन ७

५

सुमतिनाथ स्तवनम्.

विरति ए सुमति धरो आदरो, ए राग.

सुमति जिनेश्वर शुद्धता, शुद्धता परम स्वभावरे
अस्तिता नास्तिता एकता, ज्ञातृता नहि परभावरे. सुमति १.
भिन्न अभिन्नता नित्यता, तेम अनित्य पर्यायरे;
एकसमयमांहि संपजे, पर्याय उपजे विलायरे. सुमति. २
अगुरु लघु पर्यायनी, शक्ति अनन्ति सदायरे;
परिणमे असंख्य प्रदेशमां, कारक षट् उपजायरे. सुमति ३
आदि अनादि षट्कारको, व्यक्तिपणे एकेक प्रदेशरे;
अनादि अनन्त स्थिति शक्तिथी, कारक षट् लहो वेशरे.सुमति.४.
एक अनेकता वस्तुमां, नित्य अनित्यता धाररे;
समय सापेक्ष विचारतां. होय अनेकान्त विस्ताररे. सुमति. ५
सदसत् कथ्य अकथ्य छे. जिनवर धर्म अनन्तरे:
ज्ञानमां ज्ञेयनी भासना. जाणे एक समय भदन्तरे. सुमति. ६
सम्यग् ज्ञान स्वभावथी. प्रभु तुज रूप जणायरे:
पारमपाणने संगीथी. धर्म अनेक परन्नायरे सुमति ७
मन वच काय अर्पीन तुं. आप्यो दीनर्था मारे
तुजमुज एकता संपजे. बुद्धिसागर निर्धारे सुमति ८

६

पद्मप्रभु स्तवन.

विरति ए सुमति धरी आदरो, ए राग.

पद्म प्रभु अलख निरञ्जन, सिद्धना आठ गुणधारीरे
साकार उपयोगे चेतना, निराकार जयकारीरे. पद्म. १

अमर अचर अगोचर विभु, नाम न रूप न जातिरे;
जगगुरु जय श्री चिंतामणि, त्रण भुवनमांहि ख्यातिरे. पद्म. २

वचनातीत परमातमा, अनुभव विण न जणायरे
दिशी देखाडी आगम रहे, अनुभवे प्रभु परखायरे. पद्म. ३

सद्गुरु तीर्थ उपासना, स्याद्वाद सूत्रनो बोधरे;
परंपर गुरुगम जोडतां, करे भवी जिनवर शोधरे. पद्म. ४

ज्ञानना मानमां ध्यान छे, ध्यानथी होय समाधिरे;
पद्म प्रभु एक तानमां, भेदमां जाय उपाधिरे. पद्म. ५

अनुभव अमृत स्वादतां, चित्त अन्यत्र न जायरे
चकोर जेम चंद्र तेम राचतुं, परम प्रभुरूप मांयरे. पद्म. ६

सुख अनंतनी राशिमां, जीवनमुक्तपद पायरे;
बाह्यनां सुख रुचे नहि, निश्चय सुख निज मांयरे. पद्म. ७

परपरिणति रंग परिहरी, शुद्ध परिणतिमांहि रंगरे;
बुद्धिसागर जिनदर्शन, देखता प्रेम अभंगरे पद्म. ८

७

सुपार्श्वनाथ स्तवनम्.

नदी यमुनाके तीर ए-राग.

सुपार्श्व प्रभु जिनराज कृपालु तारशो,
वीनवती मुज प्रेम धरीने स्वीकारशो;
राग द्वेष अन्याय नृपति जोर टाळशो,
शुद्धरमणता सन्मुख दृष्टि वाळशो. १

विषय वासना पासथी प्रभुजी छोडावजो,
परम दयालु देव दया दील लावजो;
अनुभव अन्तरदृष्टिनी दृष्टि जगावजो,
परमानन्दनुं पात्र सेवक मुज थावजो. २

केवलज्ञाननी ज्योतिमां ज्ञेय अभिन्न छे,
षड्द्रव्यादिक ज्ञेय पणो वळी भिन्न छे;
ज्ञेयाकारे ज्ञान परिणमे जाणजो,
भिन्नाभिन्न स्वरूप अनेकांत आणजो.

ज्ञेयापेक्षे ज्ञान अनन्तुं जिन कहे,
ज्ञेयनी पासे ज्ञान गया वण प्रभु लहे;
दर्पण क्यांइ न जाय दर्पणमां भासता छे
ज्ञेयाकारता ए दृष्टांत न्याय छे.

ज्ञेयथी के ज्ञेय ज्ञानमांहि भासशे,
ज्ञान अचिन्त्यस्वभाव हृदयमां भावजे:

ज्ञेय विना सहु ज्ञाननी शून्यता जाणीए,
षड् द्रव्यो पर्याय अनन्त मन आणीए. ५

अस्ति विना न निषेध घटे कोइ द्रव्यनो,
द्वि पण नहि अद्वैत निषेध केम सर्वनो;
द्वैतनुं ज्ञान थया पण अद्वैत थुं कहो,
भासे ज्ञानमां द्वैत ससभाव सदहो. ६

द्रव्य अने पर्यायथी ज्ञेय अनन्तता,
वस्तुधर्म स्याद्वाद त्यां एकानेकता;
ध्रुवता ज्ञेयना द्रव्यपणे नित्यता खरी,
उत्पत्ति व्यय ज्ञेय अनित्यता अनुसरी. ७

जीवद्रव्य एक व्यक्ति अनादि अनंत छे,
गुण पर्यव आधार चेतनजी सन्त छे.
बुद्धिसागर जिनवर वाणी सद्दहे,
समकित श्रद्धायोगे अपेक्षा सहु लहे. ८



चंद्रप्रभु स्तवनम्।

ए अब शोभा सारी हो मल्लिजिन. ए राग.

चंद्र प्रभु पद राचुं हो, चिद्घन, चंद्रप्रभु पद राचुं;
मन मान्युं ए साचुं हो चिद्घन, चंद्रप्रभु पद राचुं.
पद अखंड अनन्त गुण लक्ष्मी, तेना प्रभु तमे दरिया;
सघाए ज्ञानादिक लक्ष्मी, व्यक्तिपणे तमे वरिया हो. चि. १

अनाद्यनन्तने आदि अनन्त, सत्ता व्यक्ति सुहाया;
अस्तिनास्तिमय धर्म अनन्ता, समय समयमां पाया हो. चि. २

क्षपक श्रेणिए उज्ज्वल ध्याने, घातक कर्म खपाव्यां;
दग्ध रज्जुवत् कर्म अघाति, तेरमे चउदमे नसाव्यां हो. चि. ३

केवल ज्ञाने ज्ञेय अनन्ता, समय समय प्रभु जाणो;
अव्याबाध अनन्तु वीर्य, समय समय प्रभु माणो हो चि. ४

ऋद्धि तमारी वेवीज मारी, कदीय न मुजथी न्यारी;
चंद्र प्रभु आदर्श निहाळी, आत्मिक ऋद्धि संभारी हो. चि. ५

निज स्वजाति सिद्ध निहाळी, अजवृन्दगत हरि चेत्यो;
निज स्वजातीय सिद्ध संभारी, जीव स्वपदमां वेतो हो. चि. ६

अन्तर दृष्टि अनुभव योगे, जागी निजपद रहियो;
बुद्धिसागर परम महोदय, शाश्वत लक्ष्मी लहियो हो. चि. ७

१०

सुविधिनाथ स्तवन.

नदी यमुनाके तीर–ए राग.

सुविधि जिनेश्वर देव दया दीनपर करो,
करुणावंत महंत विनति ए दील धरो;
भवसागरनी पार उतारो कर ग्रही,
शक्ति अनन्तना स्वामी कहावोछो सही. १

तमनो शो छे भार कहो रवि आगळे,
कीडीनो शो भार के कुंजरने गळे;
कर्मतणो शो भार प्रभुजी तुम छते,
सिंहतणो शो भार अष्टापद ज्यां जते २

शुं खद्योततनुं तेज रवि ज्यां झळहळे,
तेम शुं मोहनुं जोर के उपयोग नीकळे;
ससलानुं शुं जोर सिंह आगळ अहो,
अनेकांत ज्यां ज्योति एकांतनुं शुं कहो ३

परम प्रभु वीतराग राग त्यां शुं करे,
देखी इन्द्रनी शक्ति के सुरसहु करगरे;
प्राणजीवन वीतराग हृदयमां मुज वश्या,
तें देखी मोह योधके सहु दूरे खस्या. ४

गुण पर्यायाधार स्मरण त्हारु करु,
ध्यान समाधि योगे अलख निज पद वरु;
परम ब्रह्म जगदीश्वर जय जिनराजजी,
शरणे आव्यो सेवक राखो लाजजी. ५

वार वार श्री वीनति जाणो लहु कहुं,
वार जगाडो न लेश दुःख में बहु सहुं:
बुद्धिसागर सन्त भक्तिथी उद्धारजो,
वन्दन वार हजार विनति ए स्वीकारजो. ६

श्री शीतलनाथ स्तवनम्.

शीतलजी शंखाणीरे शीतल जिनंदजुं.
प्रभु विना क्षण मात्र नहि सोहावतो:
सेवी विना नहि दीठो ने जाणी शके.
रूप प्रभुनुं देखी मन हरखावतो. शीतलजी. १

अन्तरना उपयोगे प्रभुनी दिल वसता,
भक्ति आधीन प्रभुनी मान मनावतो:
अनुभवयोगे रंग मजीठनो लागीयो.
प्रभुगुणना स्वादे आत्मा हरखतो. शीतलजी. २

देव प्रभुना दर्शनमां स्थिरता थती.
देव प्रभुनी आनन्द भोगे वेदतो:
आनन्द लाग मोहनी दूर देवता.
थती तुमारी सारी भोर देवतो शीतलजी. ३

अन्तरमांथी प्रदेशे शीतलता थती,
अदभुत शैली लागे कुल करो

औदयिक भाव निवारी उपशम आदिथी;
टाळे सघळा मोहतणा महाफंदजो. प्रीतलडी. ४

गुणस्थानक निःसरणि चढतो आतमा,
उज्ज्वळ योगे पामे शिवपुर म्हेलजो।
क्षायिक भावे सुख अनंतु भोगवे,
निजपद प्रभुता धारी करतो खेलजो. प्रीतलडी. ५

साम्य भावनी सर्व उपाधि नासतां,
प्रभु विरहनो नाश थशे निर्धारजो।
अनुभव योगे रंगायो जिनरूपमां,
पार्श्व प्रभु मम अन्ते जयकारजो. प्रीतलडी. ६

निजगुण स्थिरतामां रंगायुं सहजथी,
वस्तु धर्म ज्ञानादिक हुं आधारजो;
बुद्धिसागर अनुभव वाजां वागीयां,
भेट्या शीतल जिनवर जग जयकारजो. प्रीतलडी. ७

श्रेयांसनाथ स्तवन.

श्री वीर प्रभु घरमे ए राग.

श्रेयांस प्रभु अन्तर्यामी, क्षायिक नवलब्धि धणी;
ज्ञाता भ्राता परोपकारी, निर्भय योगी दिनमणि.
प्रभु शुद्धस्वरूप त्हारु जेवुं, प्रभु शुद्ध स्वरूप म्हारु तेवुं;
उज्ज्वल ध्याने खेंची लेवुं, श्रेयांस. १

प्रभु नाम रूपथी भिन्न खरो, प्रभु अनन्त गुणनो भव्य दरो;
में स्थिर उपयोग दील धर्यो, श्रेयांस. २

उत्पाद व्यय ध्रुवता भोगी, योगातीतपण निर्मल योगी;
कर्मातीतथी तुं नीरोगी, श्रेयांस. ३

ध्याने प्रभुनी पासे जाउं, साधनथी साध्यपणुं पाउं;
ज्ञानादर्शे प्रभु पटलावुं, श्रेयांस. ४

प्रभु दर्शन देशो दिल रसिया, प्रभु मेवे म्हारा दिल वसिया;
स्थिर उपयोगे जिन उल्लसिया, श्रेयांस. ५

प्रभु परममहोदय पद आपो, प्रभु जिन पदमां मुजने थापो;
कर्मो कर्म अनादि सहु कापो. श्रेयांस. ६

प्रभु उपादान योगे आवो, भक्तिथी निज गुण विकसावो;
बुद्धिसागर [illegible] लावो, श्रेयांस. ७

१४

वासुपूज्य स्तवनम्.

गिरुआरे गुण तुम तणा. ए राग.

वासुपूज्य त्रिभुवन धणी, परमानन्द विलासीरे;
अकळकळा निर्भय प्रभु, ध्याने नासे उदासीरे. वासुपूज्य. १
जगजीवन जगनाथ छो, परमब्रह्म महादेवारे;
व्यापक ज्ञानथी विष्णु छो, सुरपति करे पद सेवारे. वासुपूज्य. २
आदि अनन्त तुं व्यक्तिथी, एवंभूतथी योगीरे;
अनाद्यनन्त सत्तापणे, गुणपर्यवनो भोगीरे. वासुपूज्य. ३
व्याप्य व्यापकता अभेदता, ज्ञाताज्ञेय अभेदीरे;
भिन्नाभिन्न स्वभाव छे, भेदरहित पण वेदीरे. वासुपूज्य. ४
परम महोदय चिन्मणि, अजरामर अविनाशीरे;
नित्य निरञ्जन सुखमयी, व्यक्तिशुद्ध प्रकाशीरे. वासुपूज्य. ५
निरक्षर अक्षर विभु, जग बंधव जग त्रातारे;
क्षायिक नवलब्धि धणी, ज्ञेय अनन्तना ज्ञातारे. वासुपूज्य. ६
पुरुषोत्तम पुराण तुं, तुज ध्याने सुख लहीशुंरे;
बुद्धिसागर शुद्धता, पामी जिनपद रहीशुंरे. वासुपूज्य. ७



१५

विमलनाथ स्तवनम्.

ज्यां लगे आतम तत्त्वनुं-ए राग.

विमल जिन चरणनी सेवना, शुद्ध भावे करशुं;
अन्तर ज्योति झळहळे, शिव स्थानक ठरशुं विमल. १

पुद्गल भावना खेळथी, चित्त वृत्ति हठावुं;
परमानन्दनी मोजमां, निर्मळ पद पावुं. विमल. २

अन्तर रमणता आदरी, ध्रुवता निजवरशुं;
मनमोहन जग नाथना, उपयोगथी तरशुं. विमल. ३

असंख्यप्रदेशी आतमा, नित्यानित्य विलासी;
स्याद्वादसत्तामयी सदा, जोतां टळती उदासी. विमल. ४

पुद्गल ममता त्यागीने, अन्तरमां रहीशुं;
अनुभवअमृत स्वादथी, अक्षय सुख लहीशुं. विमल. ५

काया वाणी मनथकी, विमलेश्वर न्यारो;
शुद्ध परिणति भक्तिथी, भेटीशुं प्रभु प्यारो. विमल ६

स्थिर उपयोग प्रभावथी, एकतानथी मळशुं;
बुद्धिसागर भक्तिथी, ज्योति ज्योतमां भळशुं. विमळ. ७

अनंतनाथ स्तवन.

शांति जिन एक मुज. ए राग.

अनन्त जिनेश्वर नाथने, वन्दतां पाप पलायरे;
रवि आगळ तम शुं रहे, प्रभु भजे मोह विलायरे अनन्त. १
अनन्त गुणपर्यायपात्र तुं, व्यक्ति एवंभूत साररे;
संग्रह नय परिपूर्णता, ध्याता ते व्यक्तिथी धाररे. अनन्त. २
उपशमभाव क्षयोपशमथी, साध्यनी सिद्धि करायरे;
धर्म निज वस्तु स्वभावमां, स्थिर उपयोग सुहायरे. अनन्त. ३
ज्ञानदर्शन चरणगुण विना, व्यवहार कूल आचाररे;
साध्यलक्ष्ये शुद्ध चेतना, जाणवो शुद्ध व्यवहाररे. अनन्त. ४
द्रव्य क्षेत्र काळ भावथी, पर्याय द्रव्य अनन्तरे;
शुद्ध आलंबन आदरी, व्यक्तिथी थाय भदंतरे. अनन्त. ५
स्वकीय द्रव्यादिक भावथी, अनंतता अस्तिपणे साररे;
पर द्रव्यादिक अस्तिनी. नास्तिता अनन्त विचाररे अन. ६
वीर्य अनन्त सामर्थ्यथी, उत्पाद व्यय मति द्रव्यरे;
छति पर्यायथी ध्रुवता, समय समयमांहि भव्यरे. अनन्त. ७
धर्म अनन्तनो स्वामी छुं, ध्यानमां ध्येय स्वरूपरे;
बुद्धिसागर निज द्रव्यनी, शुद्धि ते जय जिन भूपरे अनन्त. ८

धर्मनाथ स्तवनम्.

धर्म जिनेश्वर गाउं रंगशुं–ए राग.

धर्म जिनेश्वर वंदु भावथी, वस्तु धर्म दातार जगत्मां;
वस्तु स्वभाव ते धर्म जणाववा, षड् द्रव्योमांहि सार. जगत्मां १
ज्ञेय हेय आदेय जणाववा, सकल द्रव्यछेरे ज्ञेय; जगत्मां
उपादेय चेतननो धर्म छे, पुद्गल आदिरे हेय. जगत्मां. २
भावकर्म ते रागने द्वेष छे, काल अनादिथी जाण, जगत्मां.
द्रव्यकर्मनुं कारण तेह छे, नोकर्म निमित्त आण, जगत्मां. ३
अशुद्धपरिणति योगे बंध छे, शुद्ध परिणतिथी छे मुक्ति, जगत्मां
अन्तरचेतनसन्मुख योगथी, शुद्ध उपयोगनी युक्ति, जगत्मां ४
कर्त्ता हर्त्ता चेतन कर्मनो, बाहिर अन्तर योग, जगत्मां
आत्मस्वभावे रमणता आदरे, प्रगटे शिव सुख भोग, जगत्मां ५
सुख अनन्तनी लीला ध्यानमां, चेतन अनुभव पाय, जगत्मां;
ध्रुवयोगतणी स्थिरता होवे, वीर्य अनन्त प्रगटाय, जगत्मां. ६
सविकल्पसमाधि शुभउपयोगमां. ध्याता ध्येयनो भेद, जगत्मां;
शुद्धउपयोगे शुद्ध समाधिमां. टळतो विकल्पनो खेद, जगत्मां. ७
अन्तरमां उतरीने पारखो, निर्मल सुखनोरे नाथ, जगत्मां:
बुद्धिसागर समता एकता, लीनता योगे सनाथ. जगत्मां ८

शान्तिनाथ स्तवनम्.

साहिब सांभळोरे संभव. ए राग.

शान्तिनाथजीरे, शान्ति साची आपो;
उपाधि हरीरे, निज पदमां निज थापो. शान्ति. १

शान्ति केम लहुंरे, तेनो मार्ग बतावो;
विनति माहरीरे, स्वामी दीलमां लावो. शान्ति. २

शान्ति प्रभु कहेरे, धन्य तुं जगमां प्राणी;
शान्ति पामवारे, मनमां उलट आणी. शान्ति. ३

जड ते जडपणेरे, चेतन ज्ञान स्वभावे;
भेदज्ञानना योगथीरे, समकित श्रद्धा थावे. शान्ति. ४

सद्गुरु परंपरारे, आगमना आधारे;
उपशम भावथीरे, शान्ति घटमां धारे. शान्ति. ५

साधु संगतेरे, पामी ज्ञाननी शक्ति;
समता योगथीरे, प्रगटे शान्ति व्यक्ति. शान्ति. ६

चेतन द्रव्यनुंरे, करवुं ध्यान श भावे;
चंचलता हरे रे, साची शान्ति आवे. शान्ति. ७

सत समाधिमांरे, शान्ति सिद्धि बतावे;
रसीया योगियोरे, शान्ति साची पावे. शान्ति ८

सिद्ध समा थईरे, शान्ति रूप सुहावे;
स्थिर उपयोगथीरे, बुद्धिसागर पावे. शान्ति. ९



१९

कुंथुनाथ स्तवनम्

सांभळजो मुनि-ए राग.

कुंथु जिनेश्वर जगजयकारी, चोत्रीस अतिशय धारीरे;
पांत्रीस वाणी गुणथी शोभे, समवसरण सुखकारीरे. कुंथु. १

वस्तुधर्म स्याद्वाद प्ररूपे, केवलज्ञानथी जाणीरे;
धर्म ग्रही पाळी शिव लेवे, जगमांहि बहु प्राणीरे. कुंथु. २

सप्त भंगीने सात नयोथी, षट् द्रव्योने जणावेरे;
उपादेय चेतनना धर्मो, शोधी शिव परखावेरे. कुंथु. ३

शुध्धुं आत्म स्वरूप बतावी, मिथ्या भर्म हठावेरे;
अस्तिनास्तिनयधर्म अनन्ता, द्रव्य द्रव्यमां भावेरे. कुंथु. ४

चार निक्षेपे चार प्रमाणे, वस्तु स्वरूपने दाखेरे;
द्रव्य क्षेत्रने काल भावथी, वस्तु स्वरूपने भाखेरे. कुंथु. ५

आनन्दकारी जगहितकारी, गुणपर्यायाधारीरे;
उत्पत्ति व्यय ध्रुवतामयी प्रभु, शाश्वत पद सुखकारीरे. कुंथु. ६

निज स्वरूप ए जिनवर सेवी, लहीए अनुभव मेवारे;
बुद्धिसागर ज्ञान दिवाकर, सहेजे योग पद सेवारे. कुंथु. ७

अरप्रभु स्तवनम्.

तुम बहु मैत्रीरे साहिबा. ए राग.

अरजिनवर प्रभु वन्दना, होजो वारंवार;
क्षायिक रत्नत्रयी वर्यो, शुद्ध बुद्धावतार. अर. १
अष्टकर्मना नाशथी, अष्ट गुण धरंत;
गुण एकत्रीशने ते वर्या, साध्य सिद्धि वरंत. अर. २
क्षपकश्रेणि रणक्षेत्रमां, हण्यो मोह प्रचंड;
त्रिभुवनमां साम्राज्यनी, चलवी आण अखण्ड. अर. ३
घाति कर्म प्रकृति हरी, पाम्या केवलज्ञान;
पुरुषोत्तम अरिहाप्रभु, दीधुं देशना दान. अर. ४
योगविकार समावीने, शेष कर्म जे चार;
हणीने शिवपुर पामीया, धन्य धन्य अवतार. अर. ५
तुम पगले अमे चालशुं, पामीने परमार्थ;
अनुभव रंगे भेटीने, प्रभु थाशुं सनाथ. अर. ६
प्रेम भक्ति उल्लासमां, श्रुतज्ञाने शिव माग;
बुद्धिसागर ध्यानमां, प्रभुना पदमांहि राग. अर. ७

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

मुनिसुव्रत स्तवनम्.

तार हो तार प्रभु मुज सेवक भणी–ए राग.

तार हो तार प्रभु शुद्ध दिनकर विभु, शरण तुं एक छे मुख स्वामी
ज्ञान दर्शन धणी सुख ऋद्धि घणी, नामी पण वस्तुतः तुं अनामी तार१
भोगी पण भोगना फंदथी वेगळो, योगी पण योगथी तुं निरालो;
जाणतो अपरने अपरथी भिन्न तुं, विगत मोही प्रभु शिव म्हालो. तार२
द्रव्य क्षेत्र अने कालने भावथी, आत्म द्रव्ये प्रभु तुं सुहायो;
स्वगुणनी अस्तिता नास्तिता परतणी, शुद्धकारकमयी व्यक्ति पायो ३
शुद्ध परब्रह्मनी पूर्णता पामीने, विष्णु जगमां प्रभु तुं गवायो
कर्म दोषे हरी हर प्रभु तुं थयो, सत्य महादेव तुं छे सवायो.तार तार४
शुद्धरूपे रमी राम तुं जग थयो, शुद्ध आनन्दतानो विलासी;
रहेम करतां थयो शुद्ध रहेमान तुं, शुद्ध चैतन्यता धर्म काशी. तार.५
नामने रूपथी भिन्न तुं छे प्रभु, जाण तो तत्त्व स्याद्वाद ज्ञानी;
शरण तारू ग्रहुं चरण तारू लहुं, रही नही वात हे नाथ छानी.तार६
भक्तिना तोरना जोरमां प्रभु मळ्या, सहज आनंदना ओघ प्रगटया;
जाणुं पणकही शकुं केम निर्वाच्यने,सकळविषयोतणाफंदविघट्या.ता७
एकता लीनता भक्तिना तानमां, घेन आनंदनी दील छवाइ;
बुद्धिसागर प्रभु भेटीया भावथी, मुक्तिनी घेर आवी वधाइ.तार.८

२३

नमिनाथ स्तवनम्.

ए गुण वीर तणो न विसारु. ए राग.

नमि जिनवर प्रभु चरणमां लागुं, शुद्ध रमणता मागुंरे;
बाह्य परिणति टेव निवारी, शुद्धोपयोगे जागुंरे. नमि. १

अन्तरदृष्टि अमृतवृष्टि, सहजानन्द स्वरुपरे;
तन्मयता प्रभु साथे करतो, शुद्ध समाधि अनुपरे. नमि. २

असंख्यप्रदेशी चेतनक्षेत्र, गुण अनंत आधाररे;
उत्पत्ति व्यय ध्रुवता समये, द्रव्यपणुं जयकाररे. नमि. ३

ज्ञानचरण पर्यायनी शुद्धि, मुक्ति प्रभु मुख भाखेरे;
अस्तिनास्तिनी सप्त भंगीथी, षद् द्रव्योने दाखेरे. नमि. ४

शद्वादिक नयशुद्ध परिणति, उत्तर उत्तर साररे;
कारणे कार्यपणुं नीपजावे, द्रव्यभावे निर्धाररे. नमि. ५

निमित्त शुद्धालंबन सेवी, उपादान गुण शुद्धिरे;
शुद्धरमणता योगे करतो, पामे क्षायिक ऋद्धिरे. नमि. ६

सुखसागर कल्लोले चढीयो, लही सामर्थ्य पर्यायरे;
शुद्ध परिणति चंद्र प्रकाशे, आनन्द क्यांय न मायरे.नमि. ७

शुद्ध परिणति चरण शरणमां, शुद्धोपयोगे रहीशुं रे;
बुद्धिसागर ज्ञान दिवाकर, स्वपरप्रकाशी थइशुं रे. नमि. ८

२४

नेमिजिन स्तवनम्.

तुम बहु मंत्री रे साहिबा–ए राग.

नेमि जिनेश्वर वन्दना, होशो वार हजार,
त्रिकरण योगेरे सेवना, प्रीति भक्ति उदार. नेमि. १

सालंबन ध्याने प्रभु, दीलमां आवो सनाथ;
उपयोगे तुज धारणा, आवागमन ते नाथ. नेमि. २

नामादिक निक्षेपथी, आलंबन जयकार;
निरालंबन कारणे, तुज व्यक्ति सुखकार. नेमि. ३

सविकल्प समाधिमां, भासो हृदय मझार;
अन्तर अनुभव ज्योतमां, निर्विकल्प विचार. नेमि. ४

भेदाभेद स्वभावमां, अनन्त गुण पर्याय;
छति सामर्थ्य पर्यायनी, शक्ति व्यक्ति सुहाय. नेमि. ५

झळहळज्योति ज्यां जागती, भासे सर्व पदार्थ;
बुद्धिसागर ज्ञानमां, सिद्ध बुद्ध परमार्थ. नेमि. ६

२५

पार्श्वनाथ स्तवनम्.

साहिब सांभळोरे संभव-ए राग.

पूर्णानन्दमांरे. पार्श्व प्रभु जयकारी;
ध्रुवता शुद्धतारे. शाश्वत सुख भंडारी. १

केवलज्ञानथीरे, लोकालोक प्रकाशो;
ध्याता ध्यानमां रे, साहिब निज घर वासो. २

सहजानन्दनारे. समये समये भोगी;
रत्नत्रयी प्रभुरे. क्षायिक गुणगण योगी. ३

व्यक्ति तुज समीरे, भक्ति तुज मुज करशे;
तुज आलंबनेरे, चेतन शिवपुर ठरशे. ४

साचा भावथीरे, जिनवर सेवा करशुं;
शुद्ध स्वभावमां रे, क्षायिक सद्गुण वरशुं. ५

झटपट त्यागीने रे, खटपट मननी काची;
मळशुं भावथी रे, अनुभव व्यक्ति ए साची. ६

हळीयो देवशुंरे, ते जन शिव सुख पावे;
साची भक्तिथी रे, आविर्भाव सुहावे. ७



२६
महावीर स्तवन.

साहिब सांभळोरे संभव अरज हमारी. ए राग.

श्री महावीर प्रभुरे, लळी लळी पाये लागुं;
श्री महावीरपणुरे, प्रभु तुज पासे मागुं. श्री. १
द्रव्यभाव वे भेदथीरे, निक्षेपे तेम जाणो;
सातनयोवडेरे, महावीर मनमां आणो. श्री. २
नवधा भक्तिथीरे, महावीर प्रभुथी हळवुं;
स्वजाति ध्यानथीरे, आविर्भावे मळवुं. श्री. ३
श्रुत उपयोगथीरे, प्रगटे वीर्य स्वभावे;
ध्रुवता योगनीरे, महावीर घटमां आवे. श्री. ४
घातोघातथीरे, हळतां मळतां शान्ति;
शुद्ध स्वभावमांरे, रमतां लेश न भ्रान्ति. श्री. ५
सत्ताए रहीरे, वीरता ध्याने प्रगटे;
शब्दादिकनयेरे, कर्म मलिनता विघटे. श्री. ६
अनुभव योगमांरे, महावीर नयणे देखे;
मिथ्यामोहनेरे, आपस्वभावे उवेखे. श्री ७
शुद्ध स्वभावमांरे, महावीर प्रभु पर आवे;
वीर्य अनन्ततारे, बुद्धिसागर पावे. श्री. ८

२७

कलश.

गाइ गाइरे ए जिनवर चोवीशी गाइ.

अन्तर अनुभव योगे रचना, जिनआणाथी बनाइरे. ए जिनवर०

जिन भक्तिथी शक्ति प्रगटे, प्रगटे शुद्ध समाधि;
मिथ्या मोहक्षये समकित गुण, नासे विपनी आधिरे. ए जि. १

जिन गुणना उपयोगे निजगुण, प्रगटे अनुभव सावो:
तिरोभावनो आविर्भाव छे. मेदथी त्यां रावोरे. ए जि. २

अनेकान्तनयज्ञान प्रतापे, पंचाचारनी शुद्धिः
उपशम क्षयोपशमने क्षायिक. भावे प्रगटे ऋद्धिरे. ए जि. ३

प्रभु गुण गावे भावना भावे. नागकेतु परे शुद्धि;
द्रव्य स्तवना भाव पूजा छे, सालंबननी युक्तिरे. ए जि. ४

सालंबन योगी जिन ध्याने. निरालंबन थावे:
कारण कार्यनुं त्यां जाणो. ज्ञानी हृदयमां भावेरे. ए जि. ५

जिन भक्ति निज शक्ति वधारे. शुभ उपयोगना दावे;
शुद्धोपयोगे सहेजे आवे. स्याद्वादी मन भावेरे. ए जि. ६

गाम डभोइ यशोविजय गुरु. चरणनी यात्रा कीधी:
उपाध्यायनी देरीमां रचना. पूर्ण चोवीशीनी सिद्धिरे. ए जि. ७

उपाध्याय गुरु चरण पसाये. भक्ति रंग उर धारी:
भावपूजा जिनवरनी करतां. जयजय मंगलकारीरे. ए जि. ८

संवत ओगणीश पांसठ साले. फाल्गुन पूर्णिमा सारी:
रविवार दिन चडते पहोरे. पूर्ण रची जयकारीरे. ए जि. ९

लोढण पार्श्व जिनेश्वर भेटे. जे भणशे नरनारी:
बुद्धिसागर पग पग मंगल. पामे सुख निर्धारीरे ए जि. १०

स्थिरउपयोगथीरे, जयलक्ष्मी झट वरशुं. धन्य. ८
ज्ञानी संगतेरे, अनुभव वातो करशुं;
प्रभुता आत्मनीरे, सहज दशामां वरशुं. धन्य. ९
ऋद्धि आत्मनीरे, तेमां क्षण क्षण राचुं;
शुद्धताभावथीरे, बुद्धिसागर याचुं. धन्य. १०

सहज स्वरूपवन्दन.

जय सहज स्वरूपी, रूपारूपी, जगगुरु स्वामी, निर्नामी. १
जयजय सुखकारी जग बलिहारी, बहु उपकारी, जय स्वामी. २
हुं शरण ग्रहुंछुं पाय पडुंछुं. विनति करुंछुं, शिरनामी. ३
अमपपद चहुंछुं करगरी कहुंछुं, शरणे रहुंछुं, बहुनामी. ४
मने मार्ग बतावो, करुणा लावो, दिलमां आवो, विश्रामी. ५
विनती उर धारो, सेवक तारो, शरण तमारो, हे स्वामी. ६
आपो सुख शान्ति, टाळी भ्रान्ति, अर्पी कान्ति, गुणरामी. ७
जय सद्गुरु देवा, करुंछुं सेवा, मीठा मेवा, शिवरामी. ८

शुद्धदृष्टि. दुहा.

शुद्धदृष्टि उपयोगमां, अनुभव सुख पमाय;
टळे विकल्पनी श्रेणियो, परम प्रभु परखाय. १

शुद्धसमाधि स्वरूपमां, निर्विकल्प उपयोग;
परमज्योति झळके भली, आनन्दअनुभव भोग २

अन्तर्दृष्टि शुद्धिथी, जीवन जग जयकार;
चिदानन्द मेळो मळे, नासे दुःख विकार. ३

चैतन्यसृष्टिव्यक्तिनी, लीळा अपरंपार;
स्वयं देखतो जाणतो, अनुभव निश्चयधार. ४

विवेकदृष्टिजागृति, निद्रा नहीं लगार;
ज्ञानदृष्टिरविनी प्रभा, त्यां नहि तमः प्रचार. ५

जड चेतननी भिन्नता, इष्टानिष्ट न दृष्टि;
निर्मलज्ञाननी ज्योतिमां, समतामेघ सुवृष्टि. ६

मतिभेदे प्रगटतुं, सुख अनन्त अपार;
भोगवतां निज सुखने, नासे मिथ्याचार. ७

विषयवृत्तिवेगो टळे, गुणस्थानक सोपान;
चढतां निर्मलता घणी, अनुक्रमे भगवान. ८

वैराग्ये मन निर्मलुं, ज्ञाने निज उपयोग;
वीर्ये स्थिरता संपजे, होवे शिवसुख भोग. ९

परम प्रभु ध्याने मळ्या, आव्यो अनुभव बेश;
बुद्धिसागर भक्तिथी, सहजानंद हमेश. १०

३२

डभोइ लोढणपार्श्वनाथ स्तवन.

सुमतिनाथ गुण शुं मळीजी–ए राग.

लोढण पार्श्व जिनेश्वर वंदु, भाव धरी सुखकारी;
धरणेन्द्र पद्मावती सेवे, पार्श्व यक्ष गुणकारी.
प्रभुजी म्हारा जगमां तुज बलिहारी. १
मन वचन कायाथी भक्ति, करतां मंगलकारी;
ऋद्धि सिद्धि तुष्टि पुष्टि, अनुभव सुख निर्धारी. प्रभुजी. २
हरिहर ब्रह्मा अलख निरंजन, वर्तो जग जयकारी;
पुरिसादानी पुरुषोत्तम तुं, जग जन आनंदकारी. प्रभुजी. ३
तुज सेवाथी शिव सुख मेवा, चिंतामणि हितकारी;
कामकुंभ श्री कल्पवृक्ष तुं, परमानंद पदधारी. प्रभुजी. ४
तुज सेवामां निशदिन रहीशुं, प्राणजीवन उर धारी;
बुद्धिसागर प्रेमे गावे, लेशो आ विनति स्वीकारी. प्रभुजी. ५

अथ पुद्गल छत्रीशी ॥ दुहा ॥

नित्यानित्यानेक एक, भिन्नाभिन्न स्वरूप;
तेने प्रणमो भविमना, लोकाग्रे चिद्रूप. १
आत्मस्वरूप विचारणा, आत्मध्यानमां लीन;
चेतन उपयोगी थइ, करे कर्मने छिन्न २
धर्म धर्म जग सहु करे, करता पर उपदेश;
आत्मधर्म विचार वण, समजे नहि ते लेश. ३

धर्म नाम सामान्यमां, मूर्खजनो भरमाय;
आपआपनी ताणमां, राग द्वेष नंहि जाय. ४

नदी प्रवाहे काष्ट जेम, सरितामांहि तणाय;
मनप्रवाह मोहथी, भव्यजनो भटकाय. ५

अनेकमत जगमां अहो, भिन्न भिन्न कहे तत्त्व;
सत्यतत्त्व सापेक्ष वण, समजे नहि जग सत्त्व. ६

फेर फुंदडी खावतां, स्थावर फरतुं जणाय;
मिथ्याज्ञाने जीवने, ए उखाणो न्याय. ७

दुःषम पंचम काळमां, यथामति अनुसार;
एकांते उपदेश दे, मतिया जन निर्धार. ८

षट् दर्शनना चक्रमां, युक्ति वृन्द विस्तार;
काल अनादि अनंतथी, सामान्ये ते धार. ९

भेद तेहना बहु कथा, पुण्यवंत लहे पार;
शुद्ध धर्मने आदरी, तरशे आ संसार. १०

यावत् चेतन धर्मनो, मर्म न समजे लोक;
तावत् कष्ट क्रिया सहु, थाशे जाणो फोक. ११

रत्नत्रयिना स्वामी जे, तीर्थंकर भगवंत;
समवसरणमां बेसीने, दिये देशना संत. १२

देव मनुष्य तिर्यंचने, उपदेशे जिन धर्म;
जिनवर वाणी सुणतां, भागे मिथ्या भर्म. १३

कर्मरूप पुद्गलतणो, काल अनादि योग;
चतुर्गतिमां भटकतां, सुख दुःख धरे वियोग. १४

पुद्गल संगे राचियो, नाच्यो माच्यो छेक
निगोद दुःख शुं विसर्युं, भूल्यो सत्य विवेक. १५

५

बहिरात्मभावना त्यागीने, शुद्ध स्वरूप निहाळ;
परपुद्गलसंयोग सहु, जाणो माया जाळ. १६
आतम ते परमातमा, व्यापी रह्यो शरीर;
आपोआप विचारतां, चेते चेतन धीर. १७

रूपानो भ्रम सीपमां, देहे चेतन भ्रम;
मोहे मुंझी आतमा, बांधे छे सहु कर्म. १८
बाजीगर बाजी रचे, जूठी रचना जेम;
म्हारु त्हारु जूठ छे, चेतन मुंझे केम. १९

चतुर्गतिना चोकमां, वेचायो बहु वार;
त्हारु मान शुं त्यां रह्युं, चेतन चित्त विचार. २०
एकेन्द्रिमां तुं भम्यो, वनस्पति निर्धार;
लशुन आदुमां उपन्यो, मूळी मान विचार. २१
शंख कोडा जन्म लेइ, पाम्यो दुःख अपार;
जु मांकण अवतारमां, मान नहि मन धार. २२
वृश्चिक भ्रमरा कीट थइ, भटक्यो वारंवार;
आत्मतत्त्वश्रद्धा विना, थइ न शान्ति लगार. २३
जलचर खेचर भूचरे, भमियो वार अनेक;
दुःख अनंतां त्यां सह्यां, जाग जाग धरी टेक. २४
परमाधामी वश पड्यो, ज्यां नहि सुख लगार;
छेदन भेदन ताडना, क्षेत्र वेदना घार. २५

हाय हाय त्यां तें करी, रोतो लेमे महार;
अधुना ए तुं भूलियो, जैनधर्म निर्धार. २६
नरकमांहियी नीकळुं, करु कर्मनो अन्त;
धर्म भावना त्यां गइ, चेत चेतन गुणवन्त. २७

जैनधर्मथी संपजे, सकल शर्म निर्धार;
वारंवार नहि मळे, सामग्री सुखकार. २८
जन्म्यो त्यारे लेश न, साथे लाव्यो जाण;
कुटुंब लक्ष्मी कामिनी, दुःख उपाधि खाण. २९
रत्नद्वीपमां जाइने, रत्न न लेवे जेह;
मूढ तुल्य शुं तुं थयो, चेत चेत सुखगेह. ३०
चार दीवसनी छांयडी, वाय ऋद्धिनी होय;
पांमी तेनो मद करे, भूल्यो मूढ ते जोय. ३१
संगत तुजने जेहवी, तेवो तुं थइ जाय;
मृत्यु शिरपर गाजतुं, आयु नष्टज थाय. ३२
लाखवातनी वात एक, संक्षेपे सुण भव्य;
जैनधर्म आराधना, जगमां ए कर्तव्य. ३३
आत्मभावमां रमणता, सत्य शर्म दातार;
पुद्गल ममता परिहरी, चेतो चित्त मझार. ३४
शुद्धचेतना योगथी, होशे सुख अनन्त;
शुद्धचरणना योगथी, भाखे छे भगवन्त. ३५
श्वासोश्वासो जाय छे, अनंत मूल्य समान;
बुद्धिसागर ध्यानथी, प्रगट थशे भगवान्. ३६
पुद्गल छत्रीशी कही, चेतनने हितकार;
गाम पादरा शोभता, शान्तिनाथ जयकार. ३७
वकील मोहनलालना, हेते कीधी सार;
आत्मभावमां जे रमे, ते पामे भवपार. ३८
ओगणिस अट्ठावननी, फाल्गुन कृष्ण रसाल,
तृतिया दीथी वांचतां, थाशे मंगलमाल. ३९

श्री यशोविजय उपाध्यायगुणस्तवन. (गुंहली.)

अली साहेली. ए राग.

वाजकुवरजी यशोविजयजी, मुनिवर चन्दन कीजीए;
धन्यधन्यखरे, उपाध्याय दर्शन करतां मन रीजीए. १
सम्वतसत्तरशत जयकारी, जिन शासनश्वेतांवरभारी;
वाचक प्रगटया जग सुखकारी, वाचक १
वैरागी, त्यागी, सौभागी, अन्तरदृष्टि घटमां जागी;
जिनशासन शोभाना रागी, वाचक २
जंगम तीरथ ज्ञानी ध्यानी, परभावतणा नहि अभिमानी;
श्रुतज्ञाने वात न को छानी, वाचक ३
भाषा पुस्तक रचना सारी, संस्कृत भाषामां हुंशियारी;
शतग्रंथ रच्या ज्ञाने भारी, वाचक. ४
जिनसूत्र हार्द अनुभव जाणे, जे मत पोतानो नहिताणे;
जे वर्ते चढते गुणठाणे, वाचक. ५
जिनशासन जेणे अजवाळ्युं, श्रुततीरथ जीर्ण थतुं वाळ्युं;
नास्तिक पन्थोनुं बी बाळ्युं. वाचक. ६
अनुभवअमृतरसना भोगी, जे सहजपणे अन्तरयोगी;
मिथ्यात्वभावथी नहि रोगी, वाचक. ७
महाधर्म प्रभावक जे शूरा, शाब्दिकतार्किक पंडित पूरा;
षर्दाज्ञाने जे भरपूरा. वाचक. ८
बहु देशोदेश विहार कर्या, उपदेशे जीव अनेक तर्या;
गुर्जर देशे जे बहु विचर्या वाचक. ९
स्वर्गगमन गाम डभोई थयुं, अविचल जेनुं जग नाम रह्युं;
जीवंतां शिव सुख दील लह्युं, वाचक. १०

फागण एकादशी अजवाळी, ओगणीस पांसठनी लटकाळी;
गाम डभोई आव्या गुणभाळी, वाचक. ११
श्रीवाचकपद वंदन कीधुं, अनुभवअमृत प्रेमे पीधुं;
बुद्धिसागर कारज सिध्युं, वाचक. १२

श्री यशोविजयजी उपाध्याय गुंहली.

वेनी रविसागर गुरु वंदीए–ए राग.

प्रेमे यशोविजय गुरु वंदीए, जे पंचमहाव्रतधारीरे;
साल सत्तरशतमां जे थया, उपाध्याय पदवी जयकारीरे. प्रेमे. १
बारवर्ष काशीमां जे भण्या, वैयाकरण नैयायिक मोटारे;
तार्किक शिरोमणि पद लयुं, काढी नाखे मिथ्यात्वना गोटारे. २
देशोदेश विहार कर्या घणा, गुर्जर मालव हिंदुस्थानरे;
मरुधरमांहि विचर्या घणा, टाळे परवादि अभिमानरे. प्रेमे. ३
विजयप्रभसूरीश्वर राज्यमां, जिनशासन उन्नति कीधीरे;
अष्टोत्तरशत शुभ ग्रंथने, रची कीधी धर्म प्रसिद्धिरे. प्रेमे. ४
आनन्दघन मुनिवरने मळ्या, अष्टपदी त्यारे बनाइरे;
तेम आनन्दघनजीए रची, जुओ ज्ञानतणी अधिकाइरे. प्रेमे. ५
अध्यात्मस्वरूपमां लीलता, निश्चय व्यवहारमां पूरारे;
वैरागी त्यागीशिरोमणि, ज्ञान ध्यान समाधिमां शूरारे. प्रेमे. ६
सत्तरशतीपस्तालीशमां, मौन एकादशी सुखकारीरे;
स्वर्गगमन डभोइमां कर्युं, एवा गुरुनी जाउ बलिहारीरे. प्रेमे. ७

ओगणीस पांसठनी सालमां, एकादशी फागण श्रुद्धवाळीरे;
भेटी यशोविजय गुरु पादुका, मारा मनतो आज दीवाळीरे. प्रेमे. ८
एवा सद्गुरुना गुण गावतां, थाउ अनुभव अमृत भोगीरे;
बुद्धिसागर संयम श्रेणिपर, चढे समता समाधिए योगीरे. प्रेमे. ९

उपाध्याय गुंहली.

सजनी मोरी पाम जिनेश्वर-ए राग.

गुरु म्हारा यशोविजय जयकारीरे,
गुरु म्हारा दर्शननी बलिहारीरे;
गुरु म्हारा प्रतिबोध्यां नर नारीरे,
गुरु म्हारा जगमांहि उपकारीरे. १

गुरु म्हारा उपाध्याय पद धारीरे,
गुरु म्हारा जगमां महा अवतारीरे;
गुरु म्हारा अनुभव अमृत वधारीरे,
गुरु म्हारा वाणी जग हितकारीरे. २

गुरु म्हारा ग्रंथ रच्या सुखकारीरे,
गुरु म्हारा धर्मनी देशना भारीरे;
गुरु म्हारा ध्यान समाधि प्यारीरे,
गुरु म्हारा मिथ्यात्व हरे भारीरे. ३

गुरु म्हारा वाणी दुःख हरनारीरे,
गुरु म्हारा निरखद प्रभवनारीरे;

गुरु म्हारा त्यागी दुनियादारीरे,
गुरु म्हारा परिणति त्यागी नठारीरे. ४

गुरु म्हारा दर्शन द्यो निरधारीरे,
गुरु म्हारा स्हाय करो अणधारीरे;
गुरु म्हारा तुज आणा शिव वारीरे,
गुरु म्हारा मळजो भक्ति विचारीरे. ५

गुरु म्हारा उत्कृष्ट अनगारीरे,
गुरु म्हारा वर्ते पाद विहारीरे;
गुरु म्हारा अरजी लेजो स्वीकारीरे,
गुरु म्हारा भक्ति एक तमारीरे. ६

गुरु म्हारा आव्या डभोई चित्तधारीरे,
गुरु म्हारा मळीया मंगळकारीरेः
गुरु म्हारा बुद्धिसागर अनगारीरे,
गुरु म्हारा वंदन वार हजारीरे. ७

श्री यशोविजय पादुका–दर्शन वंदन.

लावणी.

धन्य धन्य दीवसने धन्य वडी छे आज.
भेटया यशोविजयजी भवजल तरवा काजेः
गुरु भेटीने हरखित थयुं मन मारु अपार,
जिनशासन वर्ते [illegible] १

गुरु अष्टोत्तर शत ग्रंथ रच्या जयकारी,
तार्किक शिरोमणि पदवी जगमां धारी;
गुरु उपाध्याय पदवीना धारक प्यारा,
श्वेतांबर संघे प्रगटया जयजयकारा. २
संवत सत्तर पिस्तालीश मागशिर मास,
उज्ज्वल अगियारस गुरुनो स्वर्गे वास;
दर्भावती नगरी गुरुजी जग हितकारी,
बुद्धिसागर वन्दे छे वार हजारी. ३
गुरु मळीया प्रेमे वीनति उर स्वीकारी,
दीठा चक्षुथी करुणाना भंडारी;
गुरु भक्ति वशमां अनुभव द्यो निर्धारी,
क्षणक्षणमां वंदन होशो वार हजारी. ४
जय मंगलकारी मूर्ति तव मनोहारी,
देशो दर्शनने पुनः पुनः उपकारी;
जे प्रेम धरी आ गाशे नरने नारी,
बुद्धिसागर सुख पामे मंगलकारी. ५

श्री यशोविजयजी आवाहन मंत्र स्तवनम्.

द्वारकांना वासीरे अवसरीए व्हेला आवजोजी—ए राग.

मन मंदिरना वासीरे, सद्गुरुजी वहेला आवजोजी;
आवो आवो भक्तिवशे भगवान्. मन.
वाचक पदना अधिकारीरे, यशोविजयजी आवजोरे;
नहि आवो तो थाशे सेवकना बेहाल. मन. १

कामने हठावीरे, स्थिरता शुद्ध आपजोजी;
टाळो टाळो मन चंचलताना वेग. मन. २

लोभने हठावोरे, संतोष गुण आपीनेजी;
आपो आपो सुख समाधि अपार. मन. ३

शान्ति तुष्टि दातारे, शुद्धि करो बुद्धिनीजी;
टाळो टाळो विषय वासनाना दोष. मन. ४

भक्तिना भेर्यारे, व्हेल्या प्रभु आवशोजी;
करो लीला ल्हेर गुरुजी अपार. मन. ५

साची भक्ति जाणीरे, वार न लगाडशोजी;
देशो दर्शन कृपा करी साक्षात्. मन. ६

बुद्धिसागर प्रेमेरे, दीठा गुरु देवताजी;
फळी फळी मननी सघळीरे आश. मन. ७

उपाध्याय स्तवनम्.

धनधटा भुवन रंग छाया—ए राग.

नमुं यशोविजय गुरुराया, जिनशासन जय वर्ताया;
सचर पिस्तालीस आया, मौन एकादशी सुखदाया.
समे स्वर्ग गमन सिधाव्या. नमुं–जिन. १

वाचकनी पदवी पाया, संवेगी मुख्य कहाया;
शुभ तार्किक ग्रंथ रचाया. नमुं–जिन. २

श्वेतांबर संघ सुहाया, दर्भावती नगरी आया;
धन्य धन्य गुरु महाराया, नमुं-जिन. ३
कीर्तिथी त्रिभुवन छाया, करो सहाय गुरु मन भाव्या;
बुद्धिसागर गुण गाया. नमुं-जिन. ४

शुद्ध ब्रह्मज्ञान.

मन मोह्या जंगल केरी हरणीने—ए राग.

शुद्ध चिद्घनरूपने ध्याउंरे, शुद्ध चिद्घन रंगने ध्याउंरे; शुद्ध.
कामने मारी मोहने हठावी, ब्रह्मरूप होइ जाउंरे. शुद्ध. १
अलखनी अवधूत दशामां, क्यांइ न जाउं आउंरे। शुद्ध.
अनहद सुर बजावी ध्याने, मोहनुं जोर हठाउंरे. शुद्ध. २
अन्तरनो अलबेलो भेटी, परमानंदमय थाउंरे; शुद्ध.
श्वासोश्वासे अजपाजापे, चिदानंदघन गाउंरे. शुद्ध ३
सुरता लागी कबु न छूटे, प्रभु मळे हरखाउंरे; शुद्ध.
इंडा पिंगला सुषुम्णा साधी, ब्रह्मरन्ध्रमां जाउंरे. शुद्ध. ४
ध्यान समाधि शुद्ध जगावी, परमब्रह्म थइ जाउंरे. शुद्ध.
बुद्धिसागर अक्षय निरंजन, शक्ति अनंत जगाउंरे. शुद्ध. ५



उपाध्याय स्तवन.

सुमतिनाथ गुणशुं मलीजी. ए राग.

ज्ञान दाता दाता गुरुजी, वाचकवर जयकार;
यशोविजयजी भेटीयाजी, गाम डभोइ मझार.
मनमोहन स्वामी, धन्य धन्य तुम अवतार. १
चार अनुयोगे करीजी, देशना अमृतधार;
अन्तर अनुभव दाखवोजी, श्रुतवाणीनुं सार. मन० २
चउ निक्षेप प्रमाणथीजी, सातनयोथी विचार;
षद्द्रव्यो दर्शावताजी, गुणपर्यायाधार; मन० ३
उपादेय चेतन खरोजी, पुद्गल वस्तुथी भिन्न;
असंख्यप्रदेशी आतमाजी, ज्ञान आनन्द छे चिन्ह. मन ४
भूत चतुष्के ते नहिजी, ज्ञान आनन्द स्वभाव;
ज्ञानानन्द स्वभावथीजी, चेतन निजगुणदाव. मन. ५
अन्तरदृष्टि खोलतांजी, स्थिरतायोगे जणाय;
परम प्रभुना परखतांजी, आनन्द चित्त न माय. मन ६
अन्तर दुःखने बाहिर दुःखडां, योगारंभे जणाय;
बाहिर दुःखने अन्तर सुखडां, स्थिरता योगे सुहाय.मन.७
अन्तर सुखनी श्रद्धा वण तो, बाहिर सुख न त्यजाय;
यदि त्यजे पण ज्ञान विना जीव, पाछो तिहां भटकाय.मन.८
अनुभव रंग मजीठ समो ज्यां, लाग्यो त्यां बहु सुख;
अन्तरमां रंगातां ज्ञाने, नासे अनादिनां दुःख. मन. ९
शुद्ध चेतना ध्यानथीजी, अनुभव अमृत स्वाद,
बुद्धिसागर योगथीजी, प्रगटे अनहद नाद मन. १०

अध्यात्म वचनामृत ग्रन्थ.

दुहा.

ऐन्द्रवृन्दनतवीर जिन, नमतां आत्मप्रकाश;
अध्यात्म सुखमां मग्नता. शाश्वत शिवपुरवास. १
आत्माने उद्देशीने, पंचाचार प्रधान;
शब्द अर्थ योगे सदा. लहीए आतमज्ञान. २
मैत्र्यादि वासित चित्त. निर्मल बाह्याचार;
अध्यात्म तत्त्व निर्मळ करुं, स्ववर्यथी जयकार ३
एवंभूतनये भलो, प्रथम अर्थ सुखकार;
यथायोग्य बीजो कयो; अर्थ ऋजु व्यवहार ४
विगतनय भ्रांति जना, स्वरूप सन्मुख चित्त;
स्याद्वाद दृष्टि द्रव्य तत्त्व, आत्मपात्र गुणवित्त ५
युक्ति धेनुने अनुसरे, मनोवत्स धरी प्रेम.
तुच्छाग्रह मन वांदरुं. खेंचे पुच्छने तेम. ६
अनर्थ माटे युक्तियो, हठ कदाग्रह जोर;
बुद्धि अवळी परिणमे, हस्ति हणे मत तोर. ७
पामी हणे नहीं पामीने. करे विकल्पो मूढ;
हस्ती हणे ए न्यायमां. समजो साचुं गूढ. ८
हेतुवादथी जाणीए. अतीन्द्रिय सहु ज्ञेय;
फाल निश्चय तत्त्वमां. हेय ज्ञेय आदेय ९
आगमवादे आप्तनी. करी परीक्षा सत्य;
परोक्ष वस्तु सद्दहो. चेतन आदि सुकृत्य १०
छद्मस्थ केवलज्ञान वण. चक्षु रहित कहेवाय;
हस्तस्पर्श सम शास्त्र ज्ञान, युक्ति मनःपर न्याय ११

नाग्राश निरपेक्षने, शुद्ध नहि हितकार;
मेव मीतहण नारने, नहि पदस्पर्श विचार. १२

वचन अहो वीतरागनां, सर्वे छे जयकार;
कर्युं मयोजन मानिने, वदे जूठ दुःखकार. १३

रागद्वेषाभावथी, भाखे केवळी सत्य;
सत्य वचन श्रद्धा थतां, प्रगटे उत्तम कृत्य. १४

जिनवाणी आराध करे, कर्तां भव्य जिनराज;
श्री जिनवर आराध करे, सर्वे सिद्धि साम्राज्य १५

सर्व प्रभुतारी सहु, अपि प्रभु छे देव;
सर्वे प्रभु सिद्धो कर्या, नाम प्रभु मुनि सेव. १६

कर छेदने तापथी, यथा सुवर्ण परखाय;
सूत्र तथा परखाय छे, पंडित गणमो ग्याल. १७

विधि अने प्रतिषेधनी, कष शुद्धि कहेवाय;
अधिकार ज्यां वर्णव्या, आग परा गुणदाय १८

ध्यानाध्ययन विधि अने, हिंसादिकना त्याग;
निषेध मार्गो मार्गणा, प्रगटे सद्गुण राग १९

यथै काय विधिश्रने, कल्पन कथा मारग;
आनुपूर्वीक वांचवी, कष शुद्धि दुःख दूर. २०

विधि सर्वे निषेधनी, क्रिया सेवन योग;
वर्णन यद ने ताप छे, छेद शुद्धिमय योग. २१

मर्दरव मोरिपवी, गरे मन [illegible];
[illegible] शुद्धि ने मार्गोन, मन न टोपनो साथे. २२

[illegible]. २३

आत्मतत्त्व उद्देशीने, करे क्रियाओ सर्वः
पण हुं तुं नहि यादमां, टाळे सघळा गर्व. २४
हुं तुं वृत्ति यादमां, वर्ते तो अज्ञानः
आत्मतत्त्वना ज्ञानथी, नासे मिथ्या भान. २५

चक्षु थकी देखाय जे, पौद्‌गलिक पर्याय;
जडता तेमां व्यापी छे, समजुने समजाय. २६
जड वस्तु चेतन नहि, जडथी चेतन भिन्नः
आत्मरुपने ध्यावतां, शुद्ध समाधि लीन. २७

जडमां सुख न होय छे, सुख नहि जडनो धर्मः
जडना मोहे प्राणिया, बांधे निशदिन कर्म. २८
क्षणिक जड वस्तु अहो, ने पर शानो रागः
ज्ञानदृष्टिथी देखतां, प्रगटे छे वैराग्य २९

भेदज्ञान प्रगटया थकी, प्रगटे अन्तरदृष्टिः
गुणपर्याय विचारणा, प्रगटे निजगुण सृष्टि. ३०
अन्तरदृष्टि धारणा, अन्तरदृष्टि ध्यान;
अन्तरदृष्टि समाधिमां, प्रगटे छे भगवान्. ३१

अन्तरदृष्टि योगथी, प्रगटे वीर्य अनंत;
चिदानन्दनी पूर्णता, परमब्रह्म भगवंत. ३२
शोधकदृष्टि जो जगे; तो तुं अन्तरशोध;
स्थिरोपयोगो शोधतां, प्रगटे साचो बोध. ३३

हुं तुंनो अध्यास जे, जडमां ने सहु फोक;
जड धर्मो नहि आत्मना, मूके दुनिया फोक- ३४
देहादिकनां कल्पने, माने आत्मिक कृत्य;
आत्म धर्म नहि जाणतो, शुं पामे ते सत्य. ३५

धामधूम पुद्गलतणी, तेमां माने धर्म;
बाह्यदृष्टिजन भूलता, बांधे उलटां कर्म. ३६
कर्मयोगथी भोगवे, पुद्गलना पर्याय;
अन्तरथी न्यारो रहे, ज्ञानी नहि लेपाय. ३७

ज्ञानी अने अज्ञानिनां, बाहिर् कृत्य समान;
भोजन आदि जाणीए, अन्तरथी असमान. ३८
खावे पीवे ज्ञानी पण, रहे अन्तरथी भिन्न;
पण अज्ञानी मोहथी, बाह्य भाव लयलीन. ३९

दयाक्षमा आचारथी, ज्ञानीजन व्यवहार;
जगमां साचो जाणीए, परोपकृति करनार. ४०
विवेकदृष्टि रत्नवण, अन्तर बाह्याचार;
अज्ञानिना फोक छे, मापेसाएँ भार. ४१

अहंभाव जडमां जगे, अन्तरमां अंधेर;
अहंभाव जडनो टळे, चिदानंदनी लहेर. ४२
पुद्गलना पर्यायने, चुंथ्याथी शुं सुख;
सुखबुद्धि भ्रांति थकी, अने दुःखनुं दुःख. ४३
करो उपायो कोटिपण, जडमां सुख न लेश;
अहंभाव जडमां थतां, मोहादिकनो क्लेश. ४४
अहंभाव जडमां जगे, राग द्वेषनुं जोर;
अहंभावमां ममता, त्यां अंधारुं घोर. ४५
जे जे अंशे नासतो, अहंभाव त्यां धर्म;
समजु तत्त्व विचारीने, टाळे सघळां कर्म. ४६
जड वस्तुमांहि वस्यो, जड वस्तुनो भोग;
अन्तरथी न्यारो रहे, धरी शुद्ध उपयोग. ४७

रागदोष परिणाम वण, कर्मनो होय न बंध;
विवेक दृष्टि देखतां, लागे पुद्गल धंध. ४८
अन्तरदृष्टि योगथी, रागद्वेष नहि होय;
हुं छुं शुद्ध स्वभावमां, नडे न कोने कोय. ४९
शुद्धरूपमां हुं सदा, परमां नहि तलभार;
अहंभाव जडमां ग्रही, भूल्यो हुं संसार. ५०
पण पुद्गल ते हुं नहि, जाण्युं निश्चय सर्व;
कर्त्ता भोक्ता भावनो, टळ्यो अनादि गर्व. ५१
हुं कर्त्ता भोक्ता खरो, शुद्ध गुणपर्याय;
परमां म्हारुं कंइ नहि, निश्चय ए सुखदाय. ५२
अन्तरदृष्टि योगथी, चिदानंदनी मोज,
भोगवता ते जन अहो, जेणे कीधी खोज. ५३
खंडन मंडन शुं करुं, चिद्घन नहि खंडाय;
बाकी जे खंडाय ते, पुद्गलना पर्याय. ५४
आत्मधर्म जिन धर्म छे, बाकी जडना धर्म;
आत्मधर्म समज्या विना, होय न शाश्वत शर्म. ५५
आत्मधर्ममां जिनपणुं, बाकी जड जंजाळ;
जडमां धर्म नहि कदा, करशे ज्ञानी ख्याल. ५६
जड लक्ष्मीनी लालचे, मूर्खजनो ललचाय;
मायाना कीडा बनी, चतुर्गति भटकाय ५७
चिदानन्द चेतन प्रभु, निर्भय नित्य महान;
परमज्योति सुखमय सदा, इष्टदेव भगवान ५८
सत्ताए अरिहंत तुं, सोमयो सिद्धप्रकार;
सिद्धसूरि वाचक मुनि, परमेष्टि निर्धार. ५९
अतीन्द्रिय अक्षर तुं हि, निरंजन गुणवान;

वचनागोचर तुं प्रभु, धरु हुं मनमां ध्यान. ६०
ध्याता ध्येयाभिन्नतुं, कथंचित् तुं भिन्न;
शुद्धस्वरूपाधारमां, अन्तरयोगे लीन. ६१
म्हारु त्हारु सहु मेटयुं, टळ्या विषयना खेद;
स्थिरोपयोगे आत्ममां, निज धर्मोथी अभेद. ६२
शुद्ध रमणता आत्ममां, चिदानन्द भंडार;
बाह्य रमणता त्यां टळे, निश्चय मनमां धार. ६३
निश्चयनय निज रूपमां, जन्मजरानो नाश;
अनुभव अन्तर धारीए, छोडी भवनी आश. ६४
अनुभवामृत स्वादतां, धन्य सफल अवतार;
परम प्रभुता संपजे, निश्चय धर्म विचार. ६५
अनन्त धर्म छे आत्ममां, जडमां न रहे लेश;
धामधूममां धर्म नहि, बाह्य विषयमां क्लेश. ६६
बाह्य विषयनी मोजमां, माने धर्म गमार;
उपादान निजधर्म छे, चेतनमां जयकार. ६७
उपादाननी शुद्धिनी, परिपूर्णता सिद्ध;
स्याद्वादी मन जाणशे, प्रगट अक्षय ऋद्धि. ६८
जडनी ताणाताणमां, वादविवादे कर्म;
समजु समजे ज्ञानथी, साधे शाश्वत धर्म. ६९
स्याद्वादद्दष्टि थकी, नासे वादविवाद।
अनुभवीने ध्यानमां, प्रगटे अनहदनाद. ७०
बहुल जनो व्यवहारमां, राचे माचे नित्य;
अल्पजनो साधु वरे, अनेकांतनयरीत. ७१
अनेकान्तनय पारखे, ते पामे परमार्थ;
द्रव्यानुयोगे करी, पामे शिवपुर सार्थ. ७२

आत्मद्रव्य आदेयछे, शुद्ध समय पण तेह;
अनन्तगुण पर्यायमय, आत्मद्रव्य सुखगेह. ७३
आत्म द्रव्यमां लीनता, सहजयोग निर्धार;
परमपन्थ जिनवर कह्यो, अन्तरंग सुखकार. ७४
अनन्त ज्योति झळहळे, भासे लोकालोक;
आत्मद्रव्य जाण्या विना, पामे जगजन शोक. ७५
आत्मद्रव्यना ज्ञानथी, आनन्द हर्ष अपार;
आत्म धर्म अन्तर रह्यो. जगमां जयजयकार. ७६
यम नियम आसन अने, प्राणायाम विचार;
प्रत्याहारने धारणा, ध्यान समाधि सार. ७७
योगाष्टकनी साधना, निर्मल आत्म प्रकाश;
जैनागम गुरुगम थकी, परम प्रभुता वास. ७८
षड्द्रव्योमां आत्मद्रव्य. स्वपर प्रकाशक जाण;
प्रति शरीरे भिन्न भिन्न, अनंत चेतन आण. ७९
केवलज्ञान प्रत्यक्षथी, लोकालोक जणाय;
देखे तेवुं जिन कहे, श्रद्धा मोक्षोपाय. ८०
जडनी शक्ति अनन्त पण, जडमां रही समाय;
चेतनशक्ति अनन्त पण. जडमां कदी न जाय. ८१
अनाद्यनन्ति भंगीथी. षड्द्रव्यो वर्णाय;
आत्मद्रव्य चिन्शक्तिथी, प्रगटपणे परखाय. ८२
दर्शन ज्ञानानन्दगुण, चेतन तेनु पात्र;
सर्वनीय शिरोमणि. चेतन द्रव्य सुपात्र. ८३
नवधा भक्ति आत्मनी. षट्कारकनी शुद्धि;
सम्यग् ज्ञान चारित्र्यथी. प्रगटे क्षायिक शुद्धि. ८४
क्षायिक शुद्ध स्वभावमां. परमेश्वर कहेवाय;

व्यापे ज्ञाने विष्णु ते, सापेक्षे सुखदाय. ८५
रागद्वेष प्रणाशथी, महादेव जयकार;
अनंत केवलज्ञानथी, ब्रह्मा जग मनोहार. ८६
क्षायिक भावे खेंचतो, अनंत गुण तेहेत;
कृष्णरूप पण आतमा, अभिधेय संकेत. ८७
कर्म इण्याथी जीवते, शिवरूप सोहाय;
आतम ते परमात्मा, व्यक्ति अनंत ग्रहाय. ८८
नाम रूपथी भिन्नछे, निश्चयथी निर्धार;
अहं ममत्व विनाशथी, सिद्ध बुद्ध जयकार. ८९
अन्तरदृष्टि देखतां, प्रगटे वीर्य अनंत;
क्षायिक शुद्ध स्वभावमां, सुख विलसे भगवंत. ९०
अनेकान्तनयदृष्टिथी, सम्यक् जीव जणाय;
जिनदर्शनमां आत्मना, भेदो सर्व समाय. ९१
सप्तनयोना ज्ञानथी, सापेक्षा समजाय;
सापेक्षाए सर्व धर्म, जिनदर्शनमां माय. ९२
अनेकान्तनयमां अहो, भेद न किंचित्‌मात्र;
अनेकान्तनय आत्मज्ञान, समजे सज्जन पात्र. ९३
नित्य अनित्य विभेदथी, वेद बौद्धनो वाद;
जिन दर्शनमां बे मळे, अनेकान्तनयवाद. ९४
कर्तृत्वेतरवाद पण, अनेकान्तनय मान्य;
सर्वधर्म ग्राहक अहो, जिनदर्शन प्राधान्य. ९५
मतना खेद टळे सहु, जो समजे नयवाद;
सापेक्षाए सर्व धर्म, माने नय स्याद्वाद. ९६
स्याद्वादनयदृष्टिथी, समता प्रगटे वेश;
समकित चरित्र योगथी, आनन्द होय हमेश. ९७

क्षायिक केवलज्ञानमां, भासे सर्व पदार्थ;
केवलज्ञानाधार जीव, परम प्रभु परमार्थ. ९८
चिदानन्द चेतन प्रभु, मब्ता सुरता प्रेम;
सुरता अन्तर लावीए, प्रगटे मंगल क्षेम. ९९
ध्यान धारणातानमां, देखो चेतन देवः
शुद्ध समाधियोगमां, अनुभवामृतमेव १००
उपयोगी चेतन तरे, भवोदधिने खास;
चिद्घनअसंख्यप्रदेशनो, रोम रोम विश्वास. १०१
परमशुद्ध परमार्थ छे, आत्मतत्त्व आदेय;
सर्व द्रव्यतो ज्ञेय छे, पुद्गलकर्म छे हेय. १०२
आत्मरमणता धर्म छे, बाह्यरमणता कर्म;
आविर्भावे आत्ममां, प्रगटे शाश्वत शर्म. १०३
अन्तरथी न्यारा रही, करे बाह्यनां कर्म;
ज्ञानी सहजदशा थकी, पामे शाश्वत शर्म. १०४
जे जे अंशे जाय छे, कर्म उपाधि दूरः
ते ते अंशे जाणशो, चिदानन्द भरपूर. १०५
शब्दब्रह्मथी भिन्न छे, परब्रह्म जयकारः
परब्रह्म अन्तर रह्युं, अन्तरदृष्टि धार. १०६
निश्चयने व्यवहारथी, ध्यावो अन्तर्देवः
अनन्त सुखनुं पात्र छे, क्षण क्षण कीजे सेव. १०७
श्वासोश्वासे ध्याइए, रही ध्याने गुलतानः
पूर्णानन्दी प्रगटने, सहजशुद्ध भगवान. १०८
अष्टोत्तरशत दोहरा, परिपूर्ण आ ग्रन्थ;
वांचे ध्यावे जे जनो, पामे निश्चय पन्थ. १०९
संवत ओगणिस पांसठ, मगिसरा दिन चार:

सम्यग् ज्ञाने भेद टळ्या सहु, शुद्ध चेतन रत्न ग्रहायोरे. शुद्ध.
जिनागम गोपयने पीतां, हुंतो अजरामर दर्शायोरे. शुद्ध. ४
हूं तुंनो बहु भेद टळ्यो झट, क्षयोपशमज्ञानथी गायोरे. शुद्ध.
बुद्धिसागर उपशमभावे, रोम रोम आनन्दथी छायोरे. शुद्ध. ५

अधिकारी समजी शके.

श्री राग.

म्हारु गायुं जाणे अधिकारीरे, नहितो होय ताणंताण भारीरे; म्हारु.
सातनयोना सम्यग् ज्ञाने, जाणे तत्त्व विचारीरे. म्हारु. १
सापेक्षाए वस्तु विचारे, तेनी छे बलिहारीरे; म्हारु.
मतिपाशेर बाडा बांध्या, एकांत पक्ष वधारीरे. म्हारु. २
पाडामांहि बकरां रहेवे, सिंह न रहे क्षणवारीरे; म्हारु.
स्याद्वादनय जाणे त्यारे, हठ न रहे तलभारीरे. म्हारु. ३
अन्तर मलकर्मांहि शान्तिकारक, स्याद्वाद जयकारीरे; म्हारु.
आतम ने परमातम साचो, शोधो अन्तरदृष्टि उतारीरे. म्हारु. ४
मनमोहन ईश्वर अविनाशी, जीव ने शिव सुखकारीरे. म्हारु.
बुद्धिसागर नित्य निरंजन, अजरामर पद धारीरे. म्हारु. ५

आश्चर्यज्ञान.

श्री राग.

एक अचरिज मनमां आयुंरे. सिंह पाछळ ससलुं धायुंरे; एक.
साधुजन वेश्यायी रमतो, गावे राजा प्रजानुं गायुंरे. एक. १
उलटी नदीमां योगी झीले, अंधायी रतन परखायुंरे; एक.
वहाणमांहि समुद्र समायो. सूर्य चोमेर वादळ छायुंरे. एक. २
गर्भमांहि तो बहु बहु बोले, जन्म्या पछी ते मौन रहेवायुंरे;एक.
अंधकजन अंधकने दोरे, धूळ ढगलामां रत्न ढंकायुंरे. एक. ३
गुरु करे चेलानी सेवा, इन्द्रजाळे जगत् भरमायुंरे; एक.
ज्यां त्यां वानर पूजा थाती, एक वाइथी नगर आ वसायुंरे. ४
उपजे विणसे ध्रुव कहावे, ज्यां त्यां जोवुं त्यां एह छवायुंरे:एक.
बुद्धिसागर सन्तो राया, जेणे राज्य त्रिभुवननुं पायुंरे. एक. ५

शुद्धभक्ति.

श्री राग

शुद्धभक्तिना रंगमां रमीशुंरे. प्रभु भक्तिनां भोजन जमीशुंरे: शुद्ध
भक्तिथी अन्तर नहि प्रभुनुं. आडुं अवळुं जनानुं खमीशुंरे. शुद्ध १
जिनवरनी आज्ञा भक्तिथी, लक्ष चोराशीमां न भमीशुंरे. शुद्ध
अनुभवरंगे रंगाइने. इन्द्रि पंचने स्थिर दमीशुंरे शुद्ध २
भक्ति मशालो ज्ञानाग्निथी, आत्मघन पामने धमीशुंरे शुद्ध.
बुद्धिसागर तन्मय थइने, प्रभु देवीने प्रेम नमीशुंरे. शुद्ध. ३

स्वानुभव निश्चयः

श्री राग.

ज्ञान ध्यानमां जीवन गाळुंरे, शुद्ध होवे अन्तर अजवाळुंरे; ज्ञान.
उपाधि संयोगो आवे, समभावथी नहि कंटाळुंरे ज्ञान. १
पुद्गलपनथी कदी न शान्ति, शुद्धऋद्धि अन्तरमां भाळुंरे; ज्ञान.
स्थिर उपयोगे रहेवुं निशदिन, रागद्वेष उदयने टाळुंरे. ज्ञान. २
मनमोहन अलबेलो भेटुं. योग ममपने नित्य ताळुंरे; ज्ञान.
उपशम, आदि भावमां राचुं, परभावतणुं बीज बाळुंरे. ज्ञान. ३
निन्दाविकथा इर्ष्या त्यागी, द्रव्यभाव दयाने पाळुंरे; ज्ञान.
समता सरोवरमांहि झीली, सत्य अनुभव सुखमां म्हालुंरे. ज्ञान. ४
असंख्यप्रदेशी चिद्घन व्यक्ति, जडपुद्गल जाणुं निरालुंरे; ज्ञान.
बुद्धिसागर परम महोदय, शुद्ध लक्ष्मी अनंत संभाळुंरे. ज्ञान. ५

सर्वनी उन्नति थाओ ॥

श्री राग

सर्व जीवोनी उन्नति थाओरे शुद्ध प्रभुस्वरूप प्रगटाओरे; सर्व.
आत्मवत् जीवोमां दृष्टि, मैत्रीभावना मन प्रगटाओरे सर्व. १
पोताना सम अन्य जीवोना प्राणो मन प्रिय लगाओरे. सर्व.
मातृदृष्टियी सर्व जीवोनुं भलुं [illegible] करावोरे सर्व. २
सव जीवोना सद्गुण देखी प्रमोद मन प्रगटाओरे. सर्व.
द्रव्यभावथी सव जीवोपर [illegible] सर्व. ३
दुःखियाजीवपर करुणा दृष्टि [illegible] सर्व.

मनना दोष टळो सहु मेला, दयादृष्टिथी नित्य चलाशोरे. सर्व ४
वेगे माया फंदो टळशो, प्यारा प्रभु हृदय परखाशोरे; सर्व.
बुद्धिसागर आनंद मंगल, जय जय जगत वर्ताशोरे. सर्व. ५

समभाव.

श्री राग.

समभावे रहेवुं सुखकारीरे, उपाधि भिन्न विचारीरे; समभावे.
नहि कोइ व्हालुं नहि कोइ वैरी, अहो ममता दुःखनी क्यारीरे. सम. १
कोइक निन्दो कोइक वन्दो, अरति रति बहु दुःखकारीरे. सम.
जे जे थावे ते सहु थावो, दृष्टि तटस्थ में निर्धारीरे. सम. २
मन कल्प्युं इष्टानिष्टत्व, ते सहु दूर निवारीरे। सम.
अन्तरमां रमशुं मन प्रेमे, बाह्य परिणति दूर निवारीरे. सम. ३
राग द्वेष बेथी छे बंधन, मुक्ति छे ध्यानथी सारीरे. सम.
परम प्रेम धारीशुं निजमां, शाश्वत सुख घट धारीरे; सम. ४
शुक्तिनां सुख मुक्तिमां छे, समता सुख अहीं महा भारीरे; सम.
बुद्धिसागर समता प्रगटी, आनंद मंगलकारीरे. सम. ५

सत्य शोधी लीधुं,

श्री राग.

में शोध्युं जगत्मांहि सारुरे, मने लाग्युं अन्तरमां प्यारुरे. में.
पुद्गल शोध्युं सुख न भास्युं, में चेतनमां सुख धार्युरे. में. १

स्वरूप शोधी लीधुं माह, म्होटुं रहाछ में मनथी धार्युरे. मैं.
जडमां रहुं पण जडथी न्यारो, हवे इन्द्रिय सुख विसार्युरे. मैं. २
रागद्वेषपरिणतिथी न्यारो, शुद्ध चेतन हुं ए विचार्युरे. मैं.
रमुं हवे हुं चिदानन्दमां, श्रद्धा भक्तिमां मन ठार्युरे. मैं. ३
मोहमायामां मन नहि लागे, मन मर्कट सो हवे हार्युरे. मैं.
प्रेमना प्याला पीधा प्रेमे, सुख शाश्वत दिल उतार्युं रे. मैं. ४
तेजतणु पण तेज छतुं में, मने रत्न जड्युं अणधार्युरे. मैं.
बुद्धिसागर मंगळ लीला, साध्युं मम स्वरूप मुज सारुरे. मैं. ५

नात जात विसारी,

श्री राग.

मैं नात जात सहु त्यागीरे, हुं तो थइयो अन्तर गुणरागीरे. मैं.
सद्गुरुए सत्य बताव्युं, मने अन्तरमां लय लागीरे. मैं. १
नर के नारी नहि नपुंसक, बन्यो ज्ञानगर्भित वैरागीरे. मैं.
बाह्य भोगनी इच्छा विरमी, थाउं सद्गुणथी सौभागीरे; मैं. २
वस्तुस्वभाव ते धर्म ग्रह्यो मैं, शुद्ध अन्तर सुरता जागीरे। मैं.
बुद्धिसागर अन्तर सुखमां, भावे राग न जग पण रागीरे. मैं. ३

इष्टदेव निमंत्रण ॥

श्री राग.

इष्टदेव हेते म्हारे मन्दिरे, दया दृष्टि हृदयमांहि धारोरे; इष्ट
नाम मंत्र तुज निशदिन स्मरुं, हुं करुं तमारो विचाररे. इष्ट १

मनमोहन अन्तर अलबेला, इष्ट सिद्धि कृपालु बतावोरे; इष्ट
जाप जपुं हुं निशदिन वारो, तुज ध्याने हुं जगमां चावोरे. इष्ट २
मंत्र कल्प सिद्धि सहु थावे, मळ्यो मळेछे इष्टनो ल्हावोरे; इष्ट
वचन सिद्धि रुद्धि सहु होवे, एम निश्चयथी करु दावोरे. इष्ट ३
शासन सानिध्यकारी देवा, ज्यां त्यां मंगळ माळा रचावोरे;इष्ट
नाम न बोलुं हृदये स्थापुं. चिदानंद प्रभुता मिलावोरे. इष्ट ४
अनंत सुखनी ल्हेरो प्रगटे, प्राणजीवन दीलमांहि मावोरे; इष्ट
बुद्धिसागर अनुभव सुखनी, लीला हृदयमां ठावोरे. इष्ट ५

श्री यशोविजय उपाध्याय आमंत्रण ॥

श्री राग.

यशोविजय उपाध्याय आवोरे, आवो सद्गुरु व्हेला आवोरे;य०
इष्ट गुरु तुं सानिध्यकारी, मने सत्य समाधि बतावोरे. य० १
शुद्धोपयोगे साह्य करे तुं. क्षणमात्र न वार लगावोरे; य०
परम महोदय लक्ष्मी दाता, अनेकान्तस्वरूप जणावोरे. य० २
मन मंदिरमां दीपक सम तुं. शुद्ध अनुभव हृदयमां ठावोरे;य०
चोल मजीठनो रंग लगावो, गुरु ज्यां त्यां जय वर्तावोरे. य० ३
दर्शन देइ आनंद आप्यो, मने मळ्यो चिदानंद ल्हावोरे: य०
रोम रोम आनंद बहु प्रगटयो, हुं तो गावुं गुरुनां वधावोरे. य० ४
देवता थइने दर्शन देता. मन मंदिरमां गुरु च्हावोरे: य०
बुद्धिसागर जय गुरु देवा, शुद्ध दर्शन ग्रह प्रगटावोरे. य० ५

६२

परोपकार

परोपकारे रीजीए. परोपकारे धर्म;
परोपकाराभ्यासथी, नासे सघळां कर्म. १
द्रव्य भाव बे भेदथी, परोपकार कहाय;
निश्चयने व्यवहारथी, तेना भेद ग्रहाय. २
परोपकारे ज्ञानृता, परोपकारे मुक्ति;
परोपकारे सत्य धर्म, तत्त्व वातनी युक्ति. ३
परोपकारे उच्च भाव, जगमां कीर्ति गवाय;
परोपकार सद्गुण विना, नीचा सर्व गणाय. ४
उपकारे जे रक्त छे, धर्मी सत्य विचार;
परस्पर उपकार छे, तत्त्वार्थ सूत्र मझार. ५
उपकारी अरिहन्त छे, परमेष्ठीमां मुख्य;
परोपकार कर्या विना, कोइ न होय प्रमुख ६
उपकृति दुर्लभ अहो ! शुभोन्नति करनार;
धन्य धन्य ते प्राणिया, तरे अने तरनार. ७
सम्यक्त्वज्ञान प्रदानथी, परोपकार महान्
उत्तम जन सौ राचता, भाखे छे भगवान् ८
ज्ञान दान उपकार छे, देवो पर उपदेश,
मोटो परोपकार छे, टळता सघळा क्लेश. ९
करे एकेन्द्रिय उपकृति, निज शक्ति अनुसार;
मनुष्य थई जे नहि करे, तेनो धिक् अवतार. १०
तन मन धनने ज्ञानथी, करवो परोपकार;
बुद्धिसागर सुख लहे, चिदानन्द जयकार. ११

६३

परमब्रह्म निराकरण ॥

छप्पय छंदः

प्रणमुं श्री परमेश जगत्मां केवळ ज्ञानी,
पूजे चोसठ इन्द्र चरण पण नहि जे मानी;
महिमा अपरंपार जगत्मां शक्ति अनन्ति,
घातक कर्म व्यतीत प्रभुनी निर्मळ व्यक्ति;
द्रव्य क्षेत्रने कालभावे स्थिति अनादि अनन्त छे,
एक व्यक्ति अपेक्षतायी स्थितिहि सादि सांत छे. १
अरिहंत ते बुद्ध तत्त्वनुं ज्ञान लह्यायी,
अरिहंत ते विष्णु ज्ञानमां सर्व ग्रह्यायी;
भासे ज्ञेय अनंत ज्ञानमां ब्रह्मा माटे,
राग द्वेषनो नाश महेश्वर जिनवर माटे;
आत्मोन्नतिनी प्राप्ति करवा मार्ग तेनो अनुसरो,
माध्यस्थ दृष्टि राखी भव्यो सिद्धि शाश्वत सुखवरो. २
षड्द्रव्योनुं ज्ञान कर्याथी विवेक दृष्टि,
सम्यग्दृष्टि प्रगटे भासे गुणगण वृष्टि.
नव तत्त्वो पण षड्द्रव्योमां समाय जाणो,
अष्ट पक्षनुं ज्ञान करी साचुं मन आणो;
सप्त नयने सप्त भंगीयी द्रव्य षड्ने धारीए,
बुद्धिसागर अनेकान्तथी तत्त्व सत्य विचारीए. ३
स्याद् अव्यय छे अनेकान्त नयथीनक मार्गे,
सापेक्षाए वस्तु धर्म छे चित्त उमार्गे:
सापेक्षाए षड्दर्शन जिन दर्शन अंगो.
सापेक्षाए वस्तु ज्ञानना सत्य तरंगो:

द्वैत अने अद्वैत मत पण निरपेक्षाए भिन्न छे,
स्याद्वादनी सापेक्षताथी अनेकांत अभिन्न छे. ४
जड चेतन बे तत्त्व विचारे द्वैत कहावे,
पण कालमां जड चेतन बे भिन्न सुहावे;
चेतनथी नहि जगदुत्पत्ति न्याय विचारे,
भ्रमपणे प्रगटे नहि जडता ज्ञानी धारे;
जीव अजीव बे भिन्न तत्त्व छे धर्म तेना भिन्न छे,
भिन्न धर्मी भिन्न रहेवे सत्य ए आकीन छे. ५
काल अनादि कर्म जीव संयोगे विचारो,
अशुद्ध परिणति योगे कर्त्ता कर्मनो धारो,
कर्मभेद छे आठ पुद्गल द्रव्य कहावे;
कर्म प्रयोगे चेतन चतुर्गतिमां जावे;
जन्म जराने मरण हेतु कर्म भेदो धारीए,
एक चेतन कर्म बे एम द्वैतताने विचारीए. ६
कर्मयोगथी द्वैतभाव मनमांहि निरख्यो,
कर्मटळे अद्वैत भाव शुद्धातम परख्यो;
प्रथम द्वैत पश्चात् अहो अद्वैतपणुं छे,
सापेक्षाए आम ज्ञानिए सत्य भण्युं छे;
माया ब्रह्मनी कही अरे जे अद्वैतपणाने थापता,
सम्यक्त्व ज्ञान विना अरे ते सप्ततत्त्व उत्थापता ७
ब्रह्म एकने तेमांथी बहु प्रगट्युं थावे,
एकोऽहं बहुस्याम् श्रुति आधारे भावे।
ब्रह्मनुं उपादान कहो केम अब्रह्म ज थावे.
विरुद्ध धर्मनुं उपादान नहि ब्रह्म सुहावे
ब्रह्म विचारी जो कहो तो बहुरूप नहुं रहे,

पण नित्य ब्रह्मने कहो विकारी दोष एतो नहि मटे. ८
ब्रह्म विकारी कारण तेनुं कहेवुं पडशे,
नहि कारण वण कार्य दोष ए मोटो नडशे.
ब्रह्म विकारी स्वयं मानशो तो बहु दोषो;
कदा टळे न विकार फोक निजमतने पोषो,
परथी ब्रह्म विकार हेतु त्यां कर्म खरे अरे मानशो;
मानो मत स्याद्वाद त्यारे शुद्ध श्रद्धा आणशो. ९
नित्य एक जो ब्रह्म बहु ते शाथी थावे:
मानो भ्रांति दोष श्रुति तव व्यर्थ कहावे
भ्रांति कारण ब्रह्म कहो तो ब्रह्मज भ्रांति,
भ्रांति कारण कर्म कहो तो कर्मनी कांति;
कर्म ब्रह्म बे वस्तुमाने अद्वैत ब्रह्म ते क्यां रह्युं,
ब्रह्म शाथी अनेक थावे ज्ञानिए कहो शुं कह्युं. १०
ब्रह्म कहो सक्रिय यदि तो पक्षनी हानी,
ब्रह्म कहो अक्रिय तदा बहुता केम मानी;
इच्छाविशिष्ट ब्रह्म कहो तो भ्रमणा आवे,
इच्छा ब्रह्मनो गुण एम तो कोइ न गावे:
एक वस्तु थावे बहु त्यां कर्म कारण जो कहो,
कर्म ब्रह्मथी भिन्न माने द्वैतता मनमां लहो. १०
कर्म ते ब्रह्म स्वरूप मानतां सत्य टळे छे,
ज्ञान ध्यानने सदाचार सह धर्म गळे छे;
ब्रह्म एकनुं बहुपणुं जो काल अनादि,
एकपणुं नहि थावे माने सम्यग्वादी
ब्रह्म एकनुं बहुपणुं ते काल भेद जो कहो.
हेतु विना नहि कार्य भव्यो वाद ए मिथ्या लहो. ११

ब्रह्म नित्य तो अनेक धर्मी कदी न थावे,
भिन्न धर्म न रहे एकमां व्यासज गावे;
नैकस्मिन् ए सूत्रदोप निज मतमां आवे,
सापेक्षा ए यदि कहो स्याद्वाद सुहावे,
स्वयं एक अनेक थावे वृथा प्रयासो धर्मना,
एक आतम बहुपणुं त्यां हेतु भेदो कर्मना १२
बहुत्व प्रति जो एकपणाने कारण मानो,
पाप पुण्यमय ब्रह्म दोप ए महापिछानो;
ब्रह्म एकने बहुपणुं तेनुं जो थावे,
ब्रह्म कह्युं एकांत नित्य ए मिथ्या भावे;
ब्रह्म विकारी अनित्यता त्यां कथंचित् मानशोयदा,
स्याद्वादने अवलंबवाथी पक्ष रह्यो नहि तुम तदा. १३
इच्छा रहित जो ब्रह्म कहो तो बहु फेर थावे,
इच्छा विशिष्ट ब्रह्म कहो तो दोपज आवे;
इच्छा हेतु ब्रह्म कहो तो कदी न शान्ति,
इच्छाथी यदि ब्रह्म भिन्न तो करो न भ्रांति;
ब्रह्मने समज्या विना तो भ्रांतिमां जीव झूलतो,
एक एवाहि ब्रह्म मानी भ्रांतिथी बहु फूलतो १४
एकोऽहं बहु स्याम् श्रुतिनी इच्छा कोने,
इच्छा कहो जो ब्रह्मने त्यारे दोपज जोने;
ब्रह्म एकने अनेक रूपा इच्छा आवी.
व्यापक कहो जो ~ । तहां ते प्रगटी क्यांथी;
सर्वत्रपी जो प्रगट थानी हेतु तेनो शुं अहो,
ब्रह्ममांहि ब्रह्म हेतु दोप ब्रह्मनो नो कहो १५
उपादानने निमित्त कारण भिन्न कहावे,

समजे तेने सम्यग् न्यायज मनमां भावे;
उपादान ते निमित्त नाहि छे न्याय विचारे,
ब्रह्म स्वरूपने समज्या वण तो दोष वधारे:
शक्तिने तेम व्यक्ति भावे ब्रह्म भेदो अनुसरो,
बुद्धिसागर ब्रह्म सम्यक् समजवाथी सुखवरो. १७
कर्माच्छादित ब्रह्म अने तेम कर्मथी भिन्न.
स्याद् जीवो ते ब्रह्म ब्रह्मथी जीवो अभिन्न;
मुक्ति अने संसारी द्विविध जीवो जाणो.
करे कर्मनो नाश मुक्तिना जीव वखाणो:
अष्ट कर्मावरण जेने जीवो तेहि अशुद्ध छे,
संग्रहनय सत्ता ग्रहवाथी परम ईश्वर शुद्ध छे. १८
प्रति शरीरे भिन्न भिन्न छे जीव अनंता,
जीव ते शिव स्वरूप ज्ञानियो एम वदंता:
कर्म संयोगे जीव प्राप्त ते अशुद्ध होवे.
कर्म नाशथी जीव प्राप्त ते शुद्धज जोवे.
कर्म कारण अशुद्ध परिणति बाल अनादि [illegible]
बुद्धिसागर शुद्ध परिणति कर्म नाश [illegible] १९
अशुद्ध गुण पर्याय अनंत, जोग [illegible],
[illegible] जीव [illegible]
एक जीव पण अनेक [illegible]
कारण हेतु [illegible]
[illegible] जीव [illegible]
स्याद्वाद सापेक्षपणे [illegible] २०
अनेक जीवनी सापेक्षपणे जीव [illegible]
भिन्न भिन्न छे शरीर जीवनां [illegible]

सापेक्षाए जिनवर गायुं यथार्थं सवळुं,
चक्र जीवोने परिणमे छे मनमां अवळुं;
ज्ञान एकत्र द्रव्यरूपे अनंत ज्ञेयो भासता,
एक ज्ञान अनंतरूपे एक समय प्रकाशता. २१
केवल ज्ञाने शुद्ध ब्रह्ममां श्रुति सुहाती,
एक समय पर्यायरूप अनंत पमाती;
जीव द्रव्य ते एक बहु ते एणीपेरे थावे,
शुद्धपणे परिणमतां षट्कारक जिन गावे,
शुद्धमांहि शुद्ध हेतु, अशुद्ध पुद्गल योगथी,
बुद्धिसागर अनेकांतनय समजशो श्रुत भोगथी. २२
षट्गुण हानि वृद्धि समये समये थावे,
एकोऽहं बहुस्याम् श्रुति त्यां लेखे आवे;
ज्ञानगुण छे एक अनेक पर्याय सुहावे,
उत्पत्तिव्यय ध्रुवताभंगी श्रुति सुभावे;
आत्मशुद्धि थया पछी तो अशुद्धता थावे नहीं,
शुद्धचेतन शुद्धरूपे परिणमे गुणनिज ग्रही. २३
ब्रह्मसत्ने असत् जगत् एम बहु जन बोले,
सापेक्षा समज्या वण वाक्यने कोई न तोले;
आकाशकुसुमवत जगत् असत् जो मनमा धारो.
अनेक दोषो प्रगटे त्यारे चित्त उतारो;
असत्भाव न दृष्टि देखो ज्ञानी गावे ज्ञानथी.
नभोकुसुमवत् असत मानो जाण्युं ए बेभानथी. २४
एकांते नहि असत जगत् एम जिनवर कहेवे,
सापेक्षाए समजे ते शिवसुखने लेवे;
सापेक्षावण श्रुतिवाक्यमां दोष अनेक

सापेक्षताए देह सृष्टि कर्ता हर्ता मानीए,
व्यवहार निश्चयनयथकी अहो जीव इश्वर जाणीए. २९
सापेक्षा पण कर्त्ता हर्ता इश्वरमाने.
छेहे न आत्मस्वरूप सत्य ते शुं मन जाणे;
निराकार साकार हंस इश्वर छे जाणो,
व्यवहारे साकार इतर निश्चयनय आणो;
साकार कर्म संबंधथी छे चतुर्गति जीव जाणजो;
कृत्स्न कर्मातीतयोगे निराकार शिव आणजो. ३०
कदाग्रही नहि सापेक्षाए तत्त्व विचारे,
विना विचारे धर्म भेदनां युद्ध पचारे;
धर्म भेदनो खेद टळे सहु नयना ज्ञाने,
आत्मधर्म स्याद्वाद रहे छे सत्यपिछाने;
कदाग्रही नहि धर्ममां कइ सापेक्षवानो सहु अहो,
समजीने अरे आत्मनत्वे साम्यभावे सुख लहो. ३१
माया कहो के कर्म कहो निश्चय पण ते छे,
सांख्य प्रकृति कोइ कहे पण वस्तु ए छे
सांख्यादिक भेद कर्मना समजी लेवा
करवो कर्म विनाश ध्यानथी धरीने मेवा;
चिदानन्द स्वरूप परमां शुद्धरूप [illegible].
ब्रह्म माया भेद समजी माया रूप निवारीए, ३२
नय सापेक्ष धर्म एक छे [illegible] रुचा,
[illegible] करो [illegible] मदना [illegible]
मदनावो [illegible] ना भेद न पडे,
हवे: [illegible] समजन्या मन्य [illegible]
अनेकान्तनय [illegible] साधु [illegible].

स्थूलदृष्टि जे जना तेने अहो आ नहि गमे. १३
षट्दर्शन जिन अंग कह्यां छे वातज साची.
अनेकान्त नय सहज समज्याथी वात न काची:
गंभीरनय उदार धर्ममां सर्व समातुं.
समजो ते छे स्थिर क्यांई नहि आतुं जातुं:
रागदोष जीते रमे ते जैनधर्मी जाणीए.
नात जातनो भेद नहि ए सत्यधर्म पिछाणीए. १४
नातजातनो भेद पडे त्यां धर्मनी पडती.
नातजातनो भेद नहि त्यां धर्मनी चडती:
लिंग वेषमां धर्म नहि निश्चय नय जोतां,
जड वस्तुमां आत्मभावथी धर्मज खोतां.
ज्ञानयोगे धर्म करवो सर्व लोको आदरे,
नीच जन पण उच्चभावे धर्म योगे जग तरे. १५
धर्म स्वतन्त्र आत्म विवेके सत्य विचारे.
वाडा बांधी रह्या जीवो ते सत्य न धारे:
सापेक्ष दृष्टि समज धर्मां तो सत्यज लेशो.
आलोकविनां भव्य ओर दूर नहीं रहेशो:
आलोकविनां अनेकान्तनय धर्म लावो अनुसरी.
सर्व धर्म स्याद्वाद हेतां दृढ दृष्टि धरीने. १६
धन्य धन्य वीतराग वदन जग जेणे साचो.
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] १७

वीर जिनेश्वर वचन विचारी धर्म विचारो;
सप्तभंगी नय स्याद्वाद तत्त्वने कार्य सुधारो।
प्रगटावो सामर्थ्य आत्मनुं ध्यान करीने,
धरो शक्ति विश्वास चिदानंद शर्म वरीने;
सहज शुद्ध स्वभाव पामो बाह्य ममता परिहरी,
नित्य विष्णु जीव पोते सत्य श्रद्धा मन धरी. ३८
अनेक नामथी वाच्य खरेखर छे निर्नामी,
रह्यो रूपमां अरूप भिन्न तुं सुगुण गुणरामी;
वस्तु शोधे तुं बाह्य बागमां जडता भासे,
अन्तरमां यदि शोध करे तो तत्त्व प्रकाशे;
शक्ति अनंतिनाथ आतम परम प्रभुता मेहरे,
विश्व व्यापक व्याप्य पण तुं अन्यने शुं करगरे. ३९
चिदानन्द चेतन तुं ज्यारे निजघर आवे,
सहजानंद स्वभाव गोचर घटमां पावे;
नासे देहाध्यास वासना मूळ बळे छे,
परम प्रभु विश्वास कर्मनुं जोर टळे छे;
आत्म शक्ति प्रगट करवा ध्यान अंतर धारीए,
बुद्धिसागर शिव सनातन शुद्ध धर्म विचारीए. ४०
परो आत्मनी टेक बाह्य प्रभु पूर्ण जाणो,
धरी मन्त्रतन्त्र वेष बाह्य मुख दुरस्य विरामो.
ध्यान दृष्टिथी तन्मय थाओ स्वय प्रभु छो.
ज्ञान दृष्टिथी सर्व रहस्यो स्वय विभु छो.
वीर इश्वर भेद हेतु कर्म टाळो ज्ञानथी
भक्तिमार्गे बाह्य वदन गम्यतो धूप ध्यानथी ४१
आत्मगुणनी शुद्ध प्रवृत्ति ध्याने करीए

शुद्धगुणउत्पाद दोष ते अंशे हरीए;
आत्मगुणोमां प्रेम दया गुण बहु वधारो,
सत्यधर्मने ग्रहण करीने आतम तारो;
आत्मरमणतापरम भक्ति योगो निश्चय घट वरे,
बुद्धिसागर गुरु कृपाथी परम सुख शिष्योवरे। ४२
स्वमसमी दुनियादारी सहु दूर निवारी,
परम प्रेमथी रटन करो आतम जयकारी;
पुरुषोत्तमने परमब्रह्म आतम छे पोते,
भूली निजनुं भान अरे केम बाहिर गोते;
आत्म शक्ति आत्ममां छे ध्यानथी झट जागती,
मोह निद्रा दुःखमय खरे ध्यान योगे लागती. ४३
परमब्रह्म जगदीश जीव तुं मंगलकारी,
क्यां शोधे तुं बाह्य हृदयमां देख विचारी:
निराकार भगवान् कहुं जे जे ते तुं छे,
धर निश्चय विश्वास चिदानन्द ईश्वर तुं छे;
विज्ञानघन तुं हंस निश्चय देह देवळमां रह्यो,
सत्यभानु परम महोदय कदी न जावे तुं कह्यो. ४४
सामर्थ्य प्रगटाव खरेखर मळीयुं टाणुं,
सामर्थ्य प्रगटाव मळ्युं नृभवनुं नाणुं:
सामर्थ्य प्रगटाव मोहनी खटपट वारी.
सामर्थ्य प्रगटाव ध्याननी दृष्टि धारी:
सामर्थ्यने प्रगटावरे जीव हार हिम्मत नहि जरा,
आत्मशक्ति प्रगट करी ने जगतमां जन्म्या खरा ४५
अद्भुत महा सामर्थ्य आत्मनुं योगाभ्यासे,
ब्रह्मरन्ध्रमां आवन पूरो झळहळ भासे:

शक्ति अपरंपार आत्मनी प्रगट करो झट,
वाणी अगोचर नाथ तेहनुं ध्यान धरो घट।
आत्मशक्ति प्रगट करवा योगविद्या आदरो,
जैनशैली गहन जाणी गुरुपदेशे मन धरो. ५६
कुंडेश्वम दुनिया जीव भासे भेद टळे छे,
वैर झेर ने क्लेश बुद्धि सहु दूर टळे छे;
आनंद अपरंपार अनुभव निश्चय आवे,
अशुद्ध भावनो नाश शुद्धता सहज सुहावे;
आत्मशक्ति प्राप्त करवी आत्म श्रद्धाधर रही,
बुद्धिसागर आत्मशक्ति दीलमां व्यापी रही. ५७
हरखित थी संघाण नगरमां प्रेमे आवी,
भेटया स्तंभन पार्श्वजिनेश्वर ध्यान जगावी;
प्रगट महोदय देव प्रेमथी दीठा भावे;
परम प्रभु विश्राम जिनेश्वर हृदय सुहावे;
परम प्रभुनुं ध्यान धरीने ग्रंथ रचना आ करी
परमब्रह्म नामथी शुभ भगवना कीर्ति वरी ५८
भणे गणे ने परम प्रभुना [illegible],
अजरामर पद [illegible]
वांचे [illegible]
ऋद्धिसिद्धि [illegible]
[illegible]
बुद्धिसागर [illegible]

उपदेश रत्न.

झूलणा छंद.

वित्त आप्युं नहि दुःखियाने अरे, नाम प्रभुनुं अरे केम तारे;
दोषिना दोष टाळ्या नहि प्रेमथी, जन्मीने ते अरे जन्म हारे. वि.१
सुजननी संगति सर्व मानव करे, सुजनने मान सर्वज्ञ आपे;
सद्गुणीनी प्रशंसा जगज्जन करे, सन्तनुं वेण को न उथापे. वि.२
सुजनना पेली सहु कोण एवुं थशे, प्रेम दृष्टिथकी ते विचारो;
दोषीना दोषहत् सत्य थर्यो खरो, पापीनुं पाप प्रेमे निवारो. वि.३
दोषीना दोष धोवा दयागंगथी, सन्त साचा करे कार्य एवुं;
चंड कौशिक अरे समज सद्ज्ञानथी, वीरनुं वाक्य ए चित्त लेवुं.वि.४
सर्वना श्रेयमां श्रेय म्हारु रह्युं, दोषीपर प्रेमनी दृष्टि वरसो;
भलुं करे मानवी सत्य साधु खरो, दुःख मोहाग्निने शिघ्रतरसो.वि.५
उच्चने नीचनो भेद सहु टाळीने, ऐक्यता कीजीए सर्व साथे;
उच्च ने भेद भासे नहि सर्वमां, एम भाख्युं अहो विश्वनाथे. वि.६
वचन काया अने ज्ञान सत्ता थकी, प्राणियोने पड्यां दुःख वारो;
सर्वनी उन्नति कीजीए प्रेमथी, कार्य उपकारनां धर्म धारो. वि.७
उच्च जीवन करो पुण्य करणी करो, कार्य उपकारनां साथ आवे;
बुद्धिसागर खरी धर्म करणी करो, सुजनना चित्तमां सत्य भावे वि ८

शक्ति अपरंपार आत्मनी प्रगट करो झट,
वाणी अगोचर नाथ तेहनुं ध्यान धरो घट।
आत्मशक्ति प्रगट करवा योगविद्या आदरो,
जैनशैली गहन जाणी गुरुदेवे मन धरो. ४६
कुटुंबसम दुनिया जीव भासे भेद टळे छे,
वैर झेर ने क्लेश बुद्धि सहु दूर टळे छे;
आनंद अपरंपार अनुभव निश्चय आवे,
अशुद्ध भावनो नाश शुद्धता सहज सुहावे;
आत्मशक्ति प्राप्त करवी आत्म श्रद्धापर रही,
बुद्धिसागर आत्मशक्ति दीलमां व्यापी रही. ४७
स्वस्ति श्री खंभात नगरमां प्रेमे आवी,
भेटया स्तंभन पार्श्वजिनेश्वर ध्यान जगावी;
अचळ महोदय देव प्रेमथी दीठा भावे;
परम प्रभु विख्यात जिनेश्वर हृदय सुहावे;
परम प्रभुनुं ध्यान धरीने ग्रंथ रचना आ करी,
परमप्रभु नामथी शुभ जगत्मां कीर्ति वरी. ४८
भणे गणे ते परम प्रभुता निश्चय पामे,
अजरामर पद वेश ठरे ते निर्भय ठामे;
नासे मिथ्या रोग धर्मना ध्यान प्रभावे,
अष्टसिद्धि साम्राज्य हृदयमां वेगे आवे;
ओगणीस पांसठ चैत्र पुनम ज्ञानी जय शुभ पामशे,
बुद्धिसागर गुरु कृपाथी सत्य सुखडां आपशे. ४९



७६

देहस्थ आत्मानी परमात्मावस्थानुं स्मरण.

झूलणा छंद.

समजी ले भव्य तुं समजी ले भव्य तुं खीलवजे आत्मशक्ति प्रभुनी;
आत्म सामर्थ्यथी सर्व कर्मो टळे, शक्ति हृदये धरो चिद्विभुनी स. १
आत्ममां रमणता ध्यान दृष्टि थकी, दुःखनां कारणो सर्व नाशे.
शरीर व्यापी रह्यो देहे भिन्न लह्यो, ज्ञान सामर्थ्यथी सहु प्रकाशे स. २
स्वाश्रयी थइ रहो सत्यशांति लहो, करणी जेवी तथा कार्य थावे
चितना दोषवारो महाशक्तिथी, परम आनंद पद भव्य पावे. स. ३
शुद्ध निर्भय प्रभु कृष्ण रहेमान तुं, सूर्यने विष्णु तुं प्रभु सवायो;
तेजनो पार नहि वाणी गोचर नहि, ध्यानिना ध्यानमां तुंज आयो.
झळहळे ज्योति आत्मप्रभुनी सदा, दुःखनी भ्रांतियो दूर नासे;
वीर विश्वेश तुं पिंड वसतां छतां, योगियोना हृदयने प्रकाशे. स. ५
तेजनुं तेज तुं देवनो देव तुं, ज्ञानसागर प्रभु तुं प्रमाणो;
दृश्य दृष्टा तुंहि वचन सापेक्षथी, परम ध्याने रहे प्रभु न छानो. स. ६
अलख निर्भय प्रभु विष्णुने शुद्ध तुं, शुद्धज्ञाने प्रभु था प्रकाशी;
देव वीतराग तुं शुद्ध सत्ता ग्रहे, व्यक्तिथी था प्रभो धर्मवासी स ७
सारमां सार तुं पूज्यमां पूज्य तुं. जागतो देव तुं देह दीठो;
बुद्धिसागर नमुं ज्ञान दातारने, रोम रोमे अहो नित्य मीठो. स. ८

७१

परना सारामां सारू

धाळ राग.

परना सारामां साररे, समजो नरनारीः
परन बुरामां अंधाररे, समजो नरनारी.

परना सारामां मीठुं. ज्यां त्यां जगमां दीठुंः
परनुं बुरु अनीठुंरे. समजो. १

परने आळ देवो, हिंसक जन छे वेवोः
दुर्गतिमां दुःखडां सहेवोरे. समजो, २

निश्चे बुरो दारु, तेथी न थाय सारुः
आ वचन मानो छे मारुरे. समजो ३

दया धर्म जयकारी, अन्तरमां ल्यो उतारीः
हिंसकभाव निवारीरे. समजो. ४

शत्रु मित्र समभावे, चतुर्गतिमां नावेः
चिदानन्दपद पावेरे. समजो ५.

दुःखिजन उगारो, नीति धर्म विचारोः
आवे भवदुःख आरोरे. समजो. ६

भलुं सर्वनुं कीजे. सारुं ते मानी लीजे.
बुद्धिसागर पद रीझेरे. समजो ७

करवुं तो न डरवुं.

याळ राग.

करवुं तो नहीं डरवुंरे, समजो नरनारी;
डरवुं तो नहि करवुंरे, समजो नरनारी;
आगळ विजय विचारी, कृत्य करो नरनारी;
जाओ न हिंमतहारीरे. समजो. १
चितिशक्ति खीलवनी, बाह्यवृत्ति सहु दमवी;
शुद्धप्रवृत्ति भजवीरे. समजो. २
दुनिया अरे दीवानी, वात करे दुःख खाणी;
डरो नहि गुण जाणीरे. समजो. ३
दुःखो सामे लडवुं, पाछा कदी न पडवुं;
जरा नहि लडथडवुंरे. समजो. ४
हिंमत कदी नहि हारो, धार्युं पार उतारो;
चेतन शक्ति वधारोरे. समजो. ५
धैर्य धरी सहु करीए, पाछां पगलां नहि भरीए;
बुद्धिसागर सुखवरीएरे. समजो. ६

कर्यां कर्म भोगववां.

थाळ राग.

कर्यां कर्म भोगववांरे, समता घट धारो;
उदास भावे सहवांरे, समता घट धारो.
कायर न थावुं व्हाला, वागे जो तन भाला;
थाशे मंगलमालारे. समता. १

कर्म कदी नहि मूके, दलीकना रस फुंके;
पण ज्ञानी शूर न चूकेरे. समता, २
कोइ दिन काजी पाजी, ने कोइ दिन राजी राजी;
एक वेळा नहि छाजीरे. समता. ३
कर्म आळ ले आवे, बहु फटफट जगमां थावे;
कोइ दिन कीर्ति भावेरे. समता. ४
कोइ दिन दुर भिखारी, कोइ दिन मित्रनी यारी;
क्षुधा उदरमां भारीरे. समता. ५
दुनिया पाये लागे, कांटा तो पगमां वागे;
कोइ दिन भिक्षा मागेरे. समता. ६
बांध्यां कर्म नचावे, ज्ञानी तो समता लावे;
बुद्धिसागर एम गावेरे. समता. ७

खरी वखत आवी.

धोळ राग.

खरी वखत आ आवीरे, ज्ञानी मन भावी;
देखो कर्म खपावीरे. ज्ञानी मन भावी.
कर्मोनुं बंधन टाळ्युं, परनी लघो वर्तनुं नाख्युं;
सौ दुरजनने [illegible]रे. ज्ञानी. १
अवळी नदी उतरवी, पार बेडे करवुं;
एवा [illegible] [illegible]रे. ज्ञानी. २
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible];
एवा [illegible] [illegible] [illegible]रे. ज्ञानी [illegible]

परमां चित्त न देवुं, चिदानन्द पद लेवुं;
पाप वचन नहि कहेवुंरे. ज्ञानी. ४
धीरो चित्रम म्हारा, आतम सम सर्वे प्यारा;
अन्तरमां अवधार्यारे. ज्ञानी. ५
वैरी न कोइ मारू, सर्वे जगत् छे प्यारुं;
मुजथी सर्वे न्यारुंरे. ज्ञानी. ६
क्यां आवुं के जावुं, शुं त्यागवुं के लावुं;
चेतनना घरमां मावुंरे ज्ञानी. ७
प्रभु भजननी हेवा, ज्योतिमां मळवुं मेवा;
बुद्धिसागर शुभ सेवारे. ज्ञानी. ८

चेतन हुंशियारी धर.

चाल राग.

चेतनजी धर हुंशियारीरे, हिंमत बहु धारी;
शिवा घरने मारीरे, मंगल पदकारी.
धीरो मन मयानो, ममताना घरमां आवो;
छेडो धर्मनो ज्हालोरे हिंमत. १
चाह अरणां कीजे, ज्ञानामृत रस पीजे;
मरनो नहि मरीजेरे. हिंमत. २
मनना ममता त्यागो, अनुभवथी घटमां जागो;
चिदानन्द पद पागोरे हिंमत. ३
अजर अमर सुखकारी, चेतन ना जो ते न्हारी;
धर्वे सुख मेलवीरे हिंमत. ४

कर्म विपाको सहेजे, तुं आप स्वरूपे रहेजे;
कोईने कांई न कहेजेरे, हिंमत. ५
शक्ति अनंति स्वामी, राख हवे नहि खामी;
बुद्धिसागर सुख रामीरे. हिंमत. ६

झटपट चेत.

थाळ राग.

चेतनजी झटपट चेतोरे, घटमां झट जागी;
अरे काळ झपाटा देतोरे, थाओ वैरागी.
दुःख सघळां सहीए, समभावमांहि रहीए;
परमानंदपद लहीएरे, घटमां. १
चेतन अमर कहेवायो, चिदानन्द गुण छायो;
घटमां छे दरमायोरे, घटमां. २
मोह खटपट मेली, वखत सुधारो छेल्लीः
करो न चिंता हेलीरे, घटमां. ३
छेवट वखत सुधारो, टाणुं मळ्युं न हारोः
ब्रह्मस्वरूप अवधारोरे. घटमां. ४
क्षणमां थाशे सारु, पुद्गल नहीं छे म्हारुः
मान नहि मन म्हारुरे. घटमां. ५
क्षणमां पाप जाशे, परम प्रभु परखाशे;
समभावे सुखडां थाशे रे. घटमां. ६
हिंमत हैयडे धारो, मळ्यो वखत सुधारोः
बुद्धि सागर सारोरेः घटमां. ७

८२

बाह्यधर्मक्रियाडंबर.

पैसा पैसा पैसा त्हारी.

बाह्य क्रियाडंबरमां भूल्या, भोळा नरने नारीरे;
ऊपरे ऊपरनी धर्मनी शुद्धि, भटके जग बहु भारीरे. बाह्य.
साध्य साधननुं ज्ञान न होवे, मूढमीतथी चाले रे;
सत्य वातने निश्चयनय कहे, मन आवे त्यां म्हालेरे. बाह्य.
सम्यग् आत्मस्वरूप न जाणे, बाह्य क्रियामां फूलेरे;
साध्य शून्य जे करे क्रियाओ, धामधूममां भूलेरे. बाह्य.
मन मुंडयाविण शिर मुंडावे, वेष मधुनो लजावेरे;
एक एकनां छिद्र ज शोधे, मूढनी आगळ फावेरे; बाह्य.
मन शीधा विण मन आळोवे, ज्ञान दशाविण धरेछारे;
बुद्धिसागर ध्यान क्रिया शुभ, समजो समजु वहेछारे बाह्य.

धामधूममां धर्म

राग ऊपरनो.

धामधूममां धर्म मनाव्यो, भूल्यां नरने नारीरे;
चिदानन्द नहि ओळख्यो घटमां, थाइ मति दुःखियारीरे. धामधूममां
धर्म धूतारा केइ करे छे, जग ज्योति बहु धरनारे;
भोळा जनने भरमावीने, उदर पोषण जे करनारे. धामधूममां.
घेर शीखा घडवे छे मार्गे, गर्भा बहु दुःखियारीरे;
छोंधी वधे त्यां धूर्तो फावे, [illegible]. धामधूममां.
क्रियाकांडमां साध्य शून्य थइ, मूर्ख जनो भटकायारे;

सम्यग् ज्ञानक्रियाथी मुक्ति, कोईक वीरला पायारे धामधूममां. ४
अलख स्वरूपमां साचो समजो, देह पिंडमां वसियोरे;
बुद्धिसागर ध्यान क्रिया शुभ, अन्तर अनुभव रसियोरे. धामधूममां. ५

शुद्धपरमात्मस्वरुपस्मरण.

ऐसा ऐसा ए राग.

परमबुद्ध परमेश्वर स्वामी, रूपारूप प्रकाशीरे,
चिदानन्द चेतन निर्दोषी, शाश्वत सिद्धि विलासीरे परम. १
सात नयोथी आत्मधर्मनी, स्थिति शुद्ध विचारोरे;
द्रव्यार्थिकनय नित्यपणेछे, एकरूप ध्रुव प्यारोरे. परम. २
पर्यायार्थिकनय अनित्य, पर्याय शुद्धि प्रमानीरे;
सोऽहं सोऽहं प्रभु गुण गावो, सिद्धि रहे नहि छानीरे. परम. ३
रत्नत्रयीनी स्थिरता छाजे, आनन्द अनहद राजेरे;
परम महोदय लीला प्रगटे, त्रण भुवन शिर गाजेरे. परम. ४
तत्त्वमसि निश्चयनय निर्मल, घटमां गंगा काशीरे;
बुद्धिसागर घटमां शोधो, आनन्दघन अविनाशीरे. परम. ५

चितिशक्ति सामर्थ्य.

राग उपरनो.

चितिशक्ति अनंत खीलववी, योगाभ्यास वधारीरे;
बाह्य भाव सहु दूर हरीने. सेवो धर्म सुधारीरे. चिति. १

परिपूर्ण हुं पुरुषोत्तम छुं, वीर्य अनन्तनो स्वामीरे;
जे धारु ते करी शकुं हुं, मिश्रक्षायिक गुणरामीरे. चिति. २
कोइक निन्दो कोइक वन्दो, मन आवे ते धारोरे;
पण तेथी मुज कांइ न जातुं, शुद्ध स्वभावे प्यारोरे. चिति. ३
दुनिया खोटी तो शुं मारे, सारी तो शुं मोरेरे;
समभावे आनन्दमां झीलुं, निश्चय शुद्ध विचारेरे. चिति ४
निश्चयनय आनंद स्वभावी, शोधो घट नरनारीरे;
बुद्धिसागर वीर्योत्साहे, परमब्रह्म पद भारीरे. चिति. ५

परमज्योति पद.

राग उपरनो.

परमज्योति परमेश्वर स्वामी, चिदानंद जयकारीरे;
आतम ते परमातम साचो, व्यक्तिपणे बलिहारीरे. परम. १
नित्यनिरंजन निर्भय निश्चय, व्यक्ति जीव अनंतारे;
कर्म खपाथी जीव ते शिवरुप, भाखे छे भगवंतारे. परम. २
उत्पत्ति व्यय ध्रुवता संगी, समये समये वखाणोरे;
सापेक्षाए धर्म अनंता, समजी शिव सुख आणोरे. परम. ३
नहि हुं कर्ता नहि हुं हर्ता, नहि हुं नर के नारीरे;
शुद्ध युवा के नहि नपुंसक, ज्ञात भात नहि मारीरे. परम. ४
स्याद्वाद सत्तामय पूर्ण, परमानंद पद भोगीरे;
बुद्धिसागर सुरता साधी, थावे निश्चय योगीरे. परम. ५

आश्चर्य पद.

राग उपरनो.

अचरिज मोटुं दीठुं संतो, साधु सरोवर झीलेरे;
अनहदनादे मुनिवर नाचे, दाणा घंटीने पीलेरे. अचरिज. १
वाहाण मांहि समुद्र समायो, राजा करे रंक सेवारे;
खरा बपोरे लेश न सुझे, पूजे पूजारीने देवारे. अचरिज. २
लक्ष्मीधारो भीक्षा मागे, भिक्षुक शेठ कहावेरे;
छुट्टो चोर कोटवालने दंडे, जुठुं जनने भावेरे. अचरिज. ३
नपुंसकना वशमां सहु दुनिया, दुःखने सहु पंपाळेरे;
पोताने दुनियामां शोधे, छती आंखे नव भाळेरे. अचरिज. ४
धामधूममां धर्म मनायो, भोगी जन संन्यासीरे;
जूठा बोला जग पूजाता, देखी आवे बहु हांसीरे. अचरिज. ५
पति सतीनी जोडज वीरली, अंधा अंधने दोरेरे;
बुद्धिसागर घटमां शोध्यो, आंबो शोभे मेरेरे. अचरिज. ६

जाग्रति सदुपदेश पद.

राग उपरनो.

जागीने तमे जुओ सन्यासी, जोगी, जति, विभासीरे;
खाखी, फकीर, वैरागी, त्यागी, साधु संत उदासीरे. जागीने १
समजी सारुं अंतर धारो, स्वच्छंद मनथी वारोरे;
सारुं ते पोतानुं मानी, आतमने झट तारोरे. जागीने. २
जड चेतन बे तत्त्व अनादि, कर्म ने जीव प्रदेशेरे;

परिग्रहममता.

राग उपरनो.

परिग्रहनी मूर्च्छा छे भारी, मोहां नरने नारीरे;
परिग्रह ग्रहछे अभिनव जगमां, आपे दुःखडां भारीरे परिग्रह. १
सर्व उपाधि मूळ परिग्रह, नरकगतिनी क्यारीरे;
परिग्रह मोहे धर्म न सुझे, जोशो दिल विचारीरे. परिग्रह. २
परिग्रह सन्निपात समो छे, चिंता दुःख संचारीरे;
बाह्य भावमां मनडुं भटके, जावे नरभव हारीरे परिग्रह. ३
अन्तर्धनमां विघ्न परिग्रह, जोशो मनमां धारीरे;
ज्ञान ध्याननो भंग करे छे, चेतन शक्ति सुधारीरे. परिग्रह. ४
परिग्रहमां मोटाइ धारे, भूल्या ते जन भारीरे;
बुद्धिसागर अन्तर्धनथी, चिदानंद तैयारीरे. परिग्रह. ५

शामाटे वाद करवो.

उठो चेतन आळस छंडी—ए राग

शा माटे अरे वाद करो छो, वादे सत्य न सुझेरे;
धर्मवाद पण ताणंताणा; आतम तत्त्व न सुझेरे. शा माटे. १
सातनयोनुं ज्ञान थया पण, सापेक्षा नहि आवेरे;
सापेक्षा समज्या पण चेतन, स्थिरताभाव न पावेरे. शा माटे. २
स्याद्वाद सम्यक् जे समजे, ज्ञानी तेह कहावेरे;
सद्गुण दृष्टि मनमां धारी, परमानंदपद पावेरे. शा माटे ३
इष्टानिष्टपणुं नहि परमां, समता सहज कहावेरे;

त्याग ग्रहण नहि पुद्गल वस्तु, योगी सत्य सुहावेरे, शा माटे. ४
चिदानन्दमां लीन थइने. कर्म कलंक हठावेरे:
बुद्धिसागर निर्मल चेतन, परम महोदय पावेरे: शा माटे. ५

कपटक्रियामां पाप.

राग–उपरनो.

कपट क्रियामां पाप घणुं छे, मुख मधुर मन कातीरे;
बक शान्ति कपटी मन धारे, कपट कळायुत यातीरे. कपट. १
कपटे तप जप किरिया निष्फल, मौनपणुं पण खोटुंरे;
गगन उपर चित्रामनी पेठे, कपटीनुं सहु छोटुंरे. कपट. २
काष्ठ परे सुकाइ जावे, तो पण कपटी वृरोरे:
कपटीनुं छे काळुं मनडुं, पर निन्दामां शूरोरे. कपट. ३
फल किंपाकना सरखो कपटी, अहि सम संग निवारोरे;
बाहिर जुडु अन्तर जुडु, तेनो संग निवारोरे. कपट. ४
आप स्वार्थमां निशदिन रातो, धर्मि डोळ जणावेरे;
बुद्धिसागर आत्मज्ञानथी, समजी साचुं पावेरे. कपट. ५

हे आत्मा तुं वस्तुतः सिद्ध छे.

राग उपरनो.

शुद्ध बुद्ध हुं सिद्ध सनातन, जिनवर चिन्मय काशीरे,
सत्तार्थी तुं त्रिभुवन स्वामी, चिदानन्द पद वासीरे. शुद्ध १

शिव इश्वर पुराण महोदय, पुद्गलद्रव्यथी न्यारोरे;
रत्नत्रयी विश्रामी नामी; गुण पर्यायाधारोरे. शुद्ध २
अविनाशी अकलंक स्वरूपी, परम मंगल पद धारीरे.
नित्य निरंजन निर्भय देशी, अक्रियने अणाहारीरे; शुद्ध. ३
परपुद्गल कर्त्ता हर्त्ता नहि, सहजस्वरूप सुखकारीरे;
आनन्दघननी मोजमझामां, रमण करु जयकारीरे. शुद्ध. ४
निश्चयनय एम मनमां द्दारी, व्यवहारे व्यवहारीरे.
बुद्धिसागर परम ज्योतिमां, मंगल पद घट धारीरे. शुद्ध. ५

गाडरीया प्रवाहनी अंधाधुधी.

राग उपरनो.

गाडरीया प्रवाहमां दुनीया, अंधाधुधी चालेरे;
सत्य वातनो बोध करे नहि, मन माने त्यां म्हालेरे. गाडरीया. १
सूक्ष्म बुद्धिवण गहन वातने, समजे नहि अज्ञानीरे;
आपमति त्यां युक्ति खेंचे, समजे शुं ते प्राणीरे. गाडरीया. २
सर्वज्ञ वाणीने गुरुगम, समज्या वण दुःख खाणीरे;
परम बोध प्रगटे नहि मनमां, समजे कोइ जिन वाणीरे. गाडरीया. ३
ज्ञान विना नहि भान लहे निज, अज्ञानी बहु भटकेरे;
सद्गुरु वाणी न मनमां धारे, लखचोराशी अटकेरे. गाडरीया. ४
अज्ञानी पशुसम अवतारी, ज्ञाने ते सुधरेछेरे;
बुद्धिसागर शुद्ध दशा लही, परमानंद वरेछेरे. गाडरीया. ५

आपवडाइ.

राग उपरनो.

आप वडाइ जे जन बोले, तेह टकाने तोले रे;
आप वडाइ जे जन मारे, पुस्तक जलमां बोळे रे. आप. १
आप वडाइ गुण नवि संचे, अभिमान मन आवे रे;
निजगुण निजमुखथी नव बोले, ज्ञानी जन एम गावे रे. आप. २
आप वडाइ त्यां हलकाइ, समजो नरने नारी रे;
हुं त्यांथी सद्गुण छे आघा, उपदशा नहि धारी रे. आप. ३
उत्तम जननी नीति ऊंची, करे न आप वडाइ रे;
उगे सूर्य सहु हर्ष धरे छे, बोल्या वण सुखदाइ रे. आप. ४
मोटाइथी जलधर गाजे, त्यारे जळ नहि वरसे रे;
बुद्धिसागर रहे न छानो, सूर्य उग्यो झळहळशे रे. आप. ५

शा माटे चिंता करवी.

राग उपरनो.

शा माटे अरे चिंता करवी, चिंता दुःख वधारे रे;
चिंताथी चतुराइ टळे छे, जीवंतां जाणे मारे रे. शा माटे. १
चिंता चितासम दुःखदाइ, धर्म लजावे भारी रे;
चिंताहरने मार्ग न सूझे. जोतो चित्त विचारी रे. शा माटे. २
चिंता धर्म करावे दूषण, चिंता दुःखनी क्यारी रे;
चिंतासागरमां जे पडिया. तेना नहि उगारी रे शा माटे ३
चिंता कारण चोर कर्यो छे, चिंतामां नहि सारी रे;

चिन्ता अग्नि मन पर बाळे, प्रगटे दुःखकर भ्रान्तिरे. शा माटे. ४
ज्ञान धैर्यथी चिन्ता नासे, प्रगटे छे हुंशियारीरे;
बुद्धिसागर अवसर आवे, धैर्य धरो नरनारीरे. शा माटे. ५

क्लेश त्याज्य छे.

राग उपरनो वा. प्रभात.

क्लेश तजो भरे क्लेश तजो भरे, क्लेशे लक्ष्मी टळेछेरे;
क्लेशे पर पोतानुं भूंडुं, दुःखना वृन्द मळेछेरे. क्लेश. १
क्लेशे वैर विरोध थवे बहु, सुख दहाडा परवारेरे;
क्लेशी जन संसारे कडवो, आप मरे पर मारेरे. क्लेश. २
क्लेशे कुटुंबमां नहि शान्ति, नातजातमां ओछोरे;
कडवा अग्नि सम छे क्लेशज, पडतां निज सुख शोषेरे. क्लेश. ३
क्लेशे देश राज्य अवक्रान्ति, धर्म राज्य अवक्रान्तिरे;
क्लेशे खाडुं ज्यां त्यां दीठुं, क्लेशे बहु विष भ्रान्तिरे. क्लेश. ४
क्लेशी मन पर दुःखनां वादळ, शमशे धारा धारीरे;
बुद्धिसागर शिक्षा साची, क्लेश तजो नरनारीरे. क्लेश. ५

ज्ञानी.

छप्पय छंद.

सत्य ज्ञानी छे तेह खरेखर समता राखे,
उलट आंखथी ध्यान धरी सुख रसने चाखे;
करे उपाधि दूर खरेखर मननी सघळी,
परिहरे छे दुःखकर सघळी चिंता सगळी;
द्रव्य क्षेत्रने काळ भावेज वस्तु धर्मने जाणतो,
दुर्गुणो सहु दूर करीने सद्गुणो मन आणतो. १
विस्तृतदृष्टि राखी जननुं भव्य विचारे,
सदाचार धरी आप तरेने परने तारे:
कपट क्रियामां रंगातो नहि मोह धरीने,
धामधूममां रंगातो नहि मान करीने;
स्थिरोपयोगे नित्य रहेवे पर रमणता परिहरे.
बुद्धिसागर ज्ञानी जनने धन्य छे सुखदां वरे. २
भणे भणावे ज्ञान ज्ञानिनी छे बलिहारी.
ज्ञानिनो शुभ संग ज्ञानी छे महावतारी:
ज्ञानी निर्मल वाण सुणीने सहु जन बुझे,
ज्ञाने सत्य विवेक ज्ञानथी सत्यज सुझे:
ज्ञानी सेवा जे करे ते चिदानंद पदवी वरे
बुद्धिसागर ज्ञानि जनने दुनिया वंदन करे. ३
करो ज्ञानिनुं मान ज्ञानिथी शासन चाले.
करो ज्ञानिनी सेव ज्ञानीजन हितमां म्हाले:
आत्मज्ञानिनी आण धरीने सुखमां चाले.
करे ज्ञानिनो नाश उपाधि सर्व विनाशे:

कामकुंभ सुर द्रुमथी अहो ज्ञानी उपकारी बहु,
सम्यक्त्व दर्शन जीव पामे ज्ञानी शोभा शी कहुं ४
ज्ञानि जनने सहाय करे ते प्रभुता पामे,
ज्ञानिनी बहु भक्ति करे ते ठरतो ठामे;
परखे ज्ञानी कोइ जेहने ज्ञान प्रकाश्युं,
परखे ज्ञानी कोइ चित्त समताए वास्युं;
चंद्र सूर्यने मेघथी अहो ज्ञानि महिमा बहु कह्यो,
बुद्धिसागर ज्ञानि संग आतमा निजपद लह्यो. ५
पंच महाव्रत धरे हृदयमां समता धारे,
ज्ञानतणुं फल विरति निश्चय एम विचारे;
निश्चयदृष्टि चित्त धरे व्यवहारे चाले,
स्थिरोपयोगे अनुभव सुखमां निश्चय म्हाले;
अनुभवीए अनुभव्युं छे ज्ञानफळ शिव धर्म छे,
बुद्धिसागर सन्त ज्ञानी परम शिवपुर शर्म छे. ६

कहेणी रहेणी.

छप्पय छंद.

कहेणी सम रहेणी गणे ते वक्ता साचो,
कहेणी सम रहेणी नहि जेनी ते मन काचो;
कथनी कथनारा घणे छे जगमां छाक्यो,
मामाहम पंथी सम कहेणी काढी नाख्यो;
कहेणी सम रहेणी भोगवर कोइ न विरला पारखा,
बोली समता कुंचका ने चेतनने नहि पारखा. १

नीति सद्गुण खरा जगत्मां सहु जन कहे छे,
कहेणी सम रहेणीनी वाटे विरला वहेछे;
धर्म मार्गने जाणीने वर्तनमां मूके,
विरतिनी रहेणीने विरला कदी न चूके
धर्म तत्त्वज जाणीने जे उच्च वर्तनमां रहे,
बुद्धिसागर तेह साचा सिद्ध शाश्वत सुख लहे. २
थोडी करेणी रहेणी बहु ते सज्जन डाया,
धन्य धन्य ते वीर जगत्मां जननी जाया;
पाडानी पेठे पोकारे दया न पाळे,
गद्धानी पेठे भूंके पण दोष न टाळे;
शुद्ध आत्मस्वभावमां जे रमणता करता खरे;
बुद्धिसागर तेजवन्ता सत्य सुखडां झट वरे. ३
उपर उपरथी फोनोग्राफनी पेठे बोले,
बोले पण पाळे नहि ते जन रासभ तोले;
ज्यां त्यां भाषण भवाइ छटी कशुं न पाळे,
परोपदेशे पंडित जग शुं ते अजुवाळे;
सदाचार जेमां नहिने स्वार्थथी ज्यां त्यां फरे,
उच्च सद्गुण प्राप्ति पण ते उच्च आतम शुं करे. ४
जैन मुनिवर जोडी जगमां व्रतने पाळे,
कहेणी सम रहेणी धारीने धर्म अजवाळे;
कहेणी समजे रहेणी धारे जग उपकारी,
सत्यधर्मी ए जगत्मां परोपकारी;
बुद्धिसागर कहेणी समजे रहेणी राखे ते नरा.
धन्य धन्य ते नर जगत्मां जननी धन्ये अवतर्या. ५

विद्या.

छप्पय छंद.

विद्या सुखनुं मूळ सज्जनो जाणी लेशो,
विद्याभ्यासी सज्जन सत्त्वर साचुं कहेशो;
सर्व देशमां सर्व कालमां विद्या सारी.
विद्यार्थी छे सत्य सुधारो जग जयकारी;
सर्व सुखनुं मूळ जगत्मां विद्या बुद्धि ज जाणीए,
विद्वान् जन छे सर्व पूज्य ज सत्य मनमां आणीए. १
सर्वोन्नतिनुं मूळ जगत्मां विद्या साची,
चक्षु विना जेम काया उम्मर तद्वत् काची;
मूढपणुं अळपातुं विद्या तेजे जगमां,
विद्यानो शुभराग ज्ञानीने छे रगरगमां;
सर्वभाषा जाणवाथीज बुद्धि विकसे छे खरी,
उन्नतिने शोधवामां सत्य विद्या जयकरी. २
विद्यार्थी सर्वत्र पूज्यछे नरने नारी,
विद्याथी नीतिनी वृद्धि छे सुखकारी;
आत्मतत्त्वनुं ज्ञान करावे विद्या साची,
टळे अविद्या विद्यायोगे रहेशो राची:
ज्ञातिधर्म देशोन्नतिमां भव्यविद्या मूळ छे,
अन्भी विद्या ग्रही नहि तो सर्व उपर धूळ छे. ३
चढती पडती सर्व पिछाणे विद्यायोगे.
तन धन सत्तानी प्राप्ति छे विद्याभोगे:
विद्यावण जन पशु समाना आर्यो होवे,
विद्या पामे म्लेच्छोदय पण अधना जोवे;

नीच जन पण उच्च थावे धर्मने विद्या खरे,
उच्च कूळ पण नीच थावे समजशो सज्जन अरे. ४
विद्यार्थी अवसरने जाणे प्राणी प्रेमे.
विद्यार्थी सुकृत्य करे छे निश्चय नेमे;
विद्वज्जननी संगाते थातां पाप टळे छे,
महामुनिवर ज्ञानी संगे धर्म मळे छे;
वात साची खरेखरी आ सज्जनो मन धारशो,
बुद्धिसागर जिनागमे सहु वस्तु तत्त्व विचारशो. ५

हासी.

छप्पय छंद.

हांसीथी खांसी प्रगटे छे जगमां भारी.
हांसी जननी घात करावे दुःख करनारी;
परनी हांसी करनारो जन मूर्ख कहावे,
उत्तम जननी शोभा तेथी लेश न थावे;
हास्यथी छे युद्ध भारी वैर वृद्धि छे घणी,
मूढ जनने हास्य प्रगटे होय जे अवगुण घणी. १
हांसी करतां पाप घणुं छे ज्ञानी दाखे,
मन धर्मनो होय हांसीथी छिद्रज थावे:
हांसी तजने धैर्य धरावे समजी हेते.
हांसी दुःखनुं मूळ जाणीने दूरे रहेजो:
हांसी करशो नहु जन सहु [illegible] [illegible] करे.
[illegible] अपमान पामे दुःख [illegible] जन घरे.

कुटुंबमां कंकास हासीथी राज्य विनाशे,
आवे दुर्मति पास रहे नहि सुमति पासे;
सदाचरणनो नाश हांसीथी छोकरवादी,
पामे नहि सन्मान कहे जन छे उन्मादी;
हास्य करतां जगतमां अहो दोष अनेक जन लहे,
हास्यमां अहो सार शुं छे उच तेने शुं कहे. ३
ठट्ठा हांसी दुर्गुण हेतु परखी लेशो,
परनी हांसी करवामां जन लक्ष न देशो;
परनी हांसी करवामां छे निजनी हांसी,
विद्वज्जन ओरे पाद उपर केम मारे वांसी;
उच सद्गुण धारीने अहो सत्य वाणी दिल धरो,
बुद्धिसागर सत्य शिक्षा पामी प्राणी सुख वरो. ४

दया

छप्पय छंद.

दया सर्वथी श्रेष्ठ दयामां धर्म समाया,
दया धर्मनुं मूळ दयाथी सुखसगाया;
दया धर्मथी मुक्ति दयाथी पार पळे छे.
दया धर्मथी मोक्ष दयाथी पुण्य मळे छे;
द्रव्य भाव बे भेदथी अहो दया जगतमां सार छे,
उच्चता ने उच्च भव्यो अन्य नय भवनार छे. १
निज स्वकीय नाश अन्यनो जेम थाय छे,
पोताने तेम दुःख अन्यने जेम थाय छे;

प्रिय पोताने सुख अन्यने तेमज व्हालुं,
परने नावे दुःख अहो हुं तेमज चालुं;
आत्मवृत्ति दयामयी तो मुक्ति करमां जाणशो,
समजीने अहो भव्य लोको दया धर्म मन आणशो. २
पोताना सम अन्य जीवोने निश्चय धारे,
प्राण पडे पण अन्य जीवोने कदी न मारे;
गृहस्थ धर्मने योग्य दयानी रहेणी राखे,
साधु निज पर हेतु दयाथी शिव सुख चाखे;
दया धर्मनी माहात्म्यथी अहो देवता पाणी भरे,
बुद्धिसागर दया वहाणथी जगत्‌मां सहु जन तरे. ३
दया धर्मनी कहेणी समजे रहेणी राखे,
दया धर्मना सुख खरेखर ते जन चाखे;
दया धर्मनी परोपकारि वृत्ति मोटी,
दया धर्मवण धर्मनी कहेणी लागे खोटी;
दया धर्मवण जगत्‌मां अहो सुख नहि तलभार छे,
बुद्धिसागर दया धर्मथी जगत्‌मां जयकार छे. ४
जेवुं वावो तेवुं लणशो दया कर्याथी,
दया धर्मथी उच्च भावना सत्य वर्याथीः
दया धर्मथी परम प्रभुता घटमां जागे,
इंद्र चंद्र नागेन्द्र खरेखर पाये लागे;
दयाना बहु भेद भाख्या एक पण जे आदरे,
बुद्धिसागर सिद्ध पदवी प्राणी ते प्रेमे वरे.
दया धर्ममां उच्च खरेखर जूठ न बोले,
दया धर्ममां उच्च खरेखर कूट न तोले,
ब्रह्मचर्यना भेद दयामां सर्व भळे छे.

वस्त्राकर्षक कीचकने तो भीमे मार्यो;
परनारी संगे जन दुःखी ज्यां त्यां होवे,
परनारीना फंद फसीने अंते रोवे;
विष वीर्यने प्राणनो अहो नाश थावे छे खरो,
किंपाक फळने भक्षतां तो प्राणिया अंते मरो. २
लंपट लुच्चो परनारीना संगे थावे,
कीर्तिनो धूपाडो करीने कांइ न पावे;
लागे कूळ कलंक लोक जन म्हेणां मारे,
आयुः प्राणनो नाश पामीने नरभव हारे।
परनारी संगे घात थावे केदमां पडतो अरे,
क्षणिक भ्रांति सुख माटे सत्य धर्मने परिहरे. ३
परनारीनी संगे रोगो केइक थावे,
चित्त न ठरतुं ठाम भटकतुं ज्यां त्यां जावे;
चिंता रोग विकार दोष सहु घेला प्रगटे,
कायानुं सहु जोर खरेखर व्हेलुं विघटे;
लक्ष्मीसत्ता तोरमां जे विषय संगे म्हालता,
पर स्त्रियानो संग करीने दुःख पंथे चालता। ४
परनारीनी संगत बूरी शास्त्र कहे छे,
परनारीथी हसतां मानव आळ लहे छे;
परनारीनी संगे कूळमां लागे बट्टो,
करो मोहने दूर धर्मनो दुश्मन कट्टो;
पर स्त्रियाना पाशमांहि पशु परे जे जन रह्या,
हाय हाय करता अरे ते दुःखना दहाडा लह्या. ५
परनारीनी संगे चेतन शक्ति हणाती,
परनारीनी संगे मनमां कुमतिव्हाती;

परनारीनी संगे जगमां कोण उगरीया,
परनारीनी संगे मुक्ति कोइ न वरिया;
परनारी त्यागे धन्य ते नर द्रव्यभावे वेश छे;
बुद्धिसागर वचन सिद्धि परम सुख हमेश छे. ६

समाधिलय.

धीराना पदनो राग.

समाधिलय लागीरे, आनंदघन परखायो;
झळहळ ज्योति जागीरे, चिदानंद घर पायो;
धरी धारणा ध्यान थयुं निज, तन्मयता थइ आज;
ब्रह्मरन्ध्रमां आसन पूर्युं, पाम्यो भुवननुं राज;
सुखसागरनी लहेरोरे, देखी बहु हरखायो. समाधि. १
हरवुं फरवुं खावुं पीवुं, करूं सर्व व्यवहार;
अन्तर सुरता अन्तर रहेनी, लय लागी निर्धार;
हसती आंखे देख्युंरे, कदी न जायो हुं आयो. समाधि. २
जन्म मरण नहि मुजने जाण्युं, निश्चयनयथी वेशः
कर्मेली व्यवहारदशा छे आनंद [illegible] केदः
सिद्ध बुद्ध स्वामीरे, दया गंग पद न्हायो. समाधि. ३
त्रिगुणी बाजीनी [illegible]. निर्भय आतम [illegible]
आतम दरशन महोदयमां, [illegible] [illegible]
समता देवी वर्धीरे, आनंद [illegible] [illegible] [illegible]. समाधि. ४
जाग्युं अनुभवज्ञुं [illegible] निश्चय, [illegible] आनंद स्वरूप
समताने अन्तरमां देख्युं, [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] प्यालेरे, बुद्धिसागर पद आयो

सदाचार.

छप्पय छंद.

सदाचारथी उच्च खरेखर सर्वे थावे,
सदाचार वण उच्च जाति पण नीच कहावे;
सदाचारथी नीच जनो पण उच्च विचारो,
सदाचार वण धर्म खरेखर ढोंग ज धारो;
सदाचार त्यां धर्म साचो समजशो समजु जनो,
अशुभ आचारो तजी झट सदाचारी झट बनो. १
सदाचार वण सन्त न शोभे ज्ञानी ध्यानी,
सदाचार वण प्रभुपूजा पण कर्मनिशानी;
सदाचार वण ज्ञानिवंश ने कूळ न शोभे,
सदाचार वण दुष्ट विचारो कदी न थोभे;
सदाचारथी जाणशो अहो जगत्मां कीर्ति खरी,
सदाचारथी योग्य पुरुषे धर्मलीला घट धरी. २
सदाचार वण पोपट सम अहो शिक्षा परखो,
सदाचारिमन देखी भव्यो मनमां हरखो;
सदाचारिनुं ज्ञान खरेखर समजो सारुं,
सदाचार वण ज्ञान खरेखर समजो कडवुं;
धामधूम पण सदाचार वण शोभती नहीं छे नरा,
सदाचारने पाळता जन धन्य जगमां अवतर्या; ३
सदाचार वण धर्म क्रियाथी ढोंग जणावो,
सदाचार वण ढोंगी अंते दुर्गतिमां जानो;
सदाचार वण शेठ न शोभे शेठ बरोबर,
सदाचार वण सन्त न शोभे जगमां दुःखकर;

सदाचार वण पोपलीशा जगत्‌मां मसरी रही,
धामधूमे मूर्ख राच्या सदाचार वण सुख नहीं. ४
सदाचार वण नगर शेठिया नीच कहाया,
सदाचार वण धामधूममां ढोंग कहाया;
सदाचार वण भक्ति नकामी शुष्क विचारो,
टीलांटपकां करो हजारो पण नहि आरो;
सदाचारथी उच्च थाता जगत्‌मां सहु जन अरे,
बुद्धिसागर सदाचारमां भव्य जन राची रहो. ५

नगरशेठ पुत्रो.

छप्पय छंद.

नगरशेठना पुत्र घर घेर धर्म न धारे,
नाम मोटुं पण दर्शन मूंडुं शुं अनुसारे;
नगरशेठना पुत्र अरे बेइ हुन्नर पावे.
हुन्नर संगी जन्मी सोबत सभ्य न भावे;
होली सरखी देव करता छेल छबीला थइ फरे,
भान मलती छित नहि मन वालता बेइ अवसरे. १
धर्म क्रियाने ढोंग धरीने त्यांइ न करता.
नहि देवनी द्रव्य आचरण ज्यां त्यां फरता;
साधु गुरुनी पासे जातां बहु शरमाता,
दरनागी वेश्याना संगे धन धमकाता;

जनक जननी नमन करे नहीं ठाठमाठमां रत रहे,
धर्म कर्मनी समज नाहि अरे धर्म करणी शुं लहे. २
दारुमां बेभान रहे मन आव्युं बोले,
नहि प्रभुपर प्रेम खरेखर टका तोले;
लोक लाजथी धर्म करे छे सत्य न धारे,
नहीं धर्मनी दाझ धरणीने मारे मारे;
धामधूममां हळी पडे छे सदाचारने परिहरे,
प्रभु उपर नाहि प्रेम किंचित् जन्मीने ते शुं करे. ३
नगरशेठना पुत्र अहो केइ धर्म करे छे,
नगरशेठना पुत्र अहो केइ सुख वरे छे;
नगरशेठना पुत्र अहो केइ धर्म सुणे छे,
नगरशेठना पुत्र अहो केइ ज्ञान भणे छे;
नगरशेठना पुत्र सारा कीर्ति तेनी सहु करे,
सदाचारमां मग्न रहेवे धर्मनी सिद्धि वरे. ४
साधु गुरुने वंदन करता भाव धरीने,
धर्म झनून धरे बेश हृदयमां सत्य वरीने;
करे धर्मिजन सहाय संग सारानो राखे,
धर्म टेक धरी बेश अनुभव अमृत चाखे;
धन्य धन्य अहो ते जगत्मां श्रेष्ठ पुत्रो जाणीए,
बुद्धिसागर योग्य न्यायी धर्मी भव्य वखाणीए. ५



आत्मशक्ति खीलववी.

व्हाला वीर जिनेश्वर–ए राग.

खरेखर शक्ति अनंति चेतननी वखणायछेरे,
ध्यानथी शक्ति अनंति अंश अंश प्रगटायछेरे;
आत्मज्ञानथी ध्यान धरो वट. अनुभव अमृत स्वाद लहो झट;
आत्मनुं सुख अनंतु ध्यान विना न जणायछेरे, खरेखर. १
बाह्यदृष्टिथी बाह्य घसो छे, आत्मदृष्टिथी मांह्य वसोछो;
दृष्टि जेवी तेवा मानव थायछेरे. खरेखर. २
रत्नत्रयीनो धर्म खरो छे, अनुभवीए मनमांहि वर्यो छे;
रत्नत्रयी वण कुलाचार गणायछेरे. खरेखर. ३
बाह्य क्रियाथी केईक राच्या, साध्य शून्य थई केईक माच्या;
आत्मज्ञानवण सत्य अरे न ग्रहायछेरे, खरेखर. ४
आत्मज्ञानथी शक्ति प्रकाशे, आनन्दमय जीवन झट भासे;
जिनपद निजपदनो त्यां ऐक्यभाव वर्तायछेरे, खरेखर. ५
जे जाणे तेने छे प्रीति, आत्मज्ञानथी जाय अनीति;
प्रेमे बुद्धिसागर शाश्वत सुख प्रकटायछेरे. खरेखर. ६

दुःख समयमां समता.

व्हाला वीर जिनेश्वर–ए राग.

अरे जीव दुःख समयमां समता मनमां धारजेरे,
दुःखनुं कारण जाणी मूर्च्छा तेह निवारजेरे;

यश अपयशमां चित्त न देशो, सम्यग्दृष्टि निज घर रहेशो;
परम धन अन्तरनुं छे तेने सद्य विचारजेरे. अरे जीव १
संकट समये सत्य न चूको, हिंमत धारी धर्म न मूको;
आत्म धर्ममां मनडुं प्रेमे ठारजेरे, अरे जीव. २
कोइक निंदे देवे गाळो, करीश नहि निन्दानो चाळो;
अन्तर चेतन शक्ति पामीने नहि हारजेरे. अरे जीव. ३
दुःख समय पण उत्सव सरखो, खरी कसोटीए मन परखो;
दुनिया दीवानीनुं बोल्युं नव संभारजेरे. अरे जीव. ४
आत्मधर्मनी खरी कमाणी, आत्मधर्मनी सत्यम ल्हाणी;
चेतन धामधूमथी मनडुं पाछुं वाळजेरे. अरे जीव. ५
स्थिरोपयोगे अन्तर समजे, पुद्गलमांहि कदी न रमजे.
प्रेमे शुद्ध समाधि बुद्धिसागर धारजेरे. अरे जीव. ६

सुपननो शोध.

म्हारा वीर जिनेश्वर—ए राग.

सुपना माटे दुनिया ज्यां त्यां बहु भटकायछेरे,
सर्वेश्वर आत्मधर्म वण स्वप्नना भेद न पायछेरे;
धर्म संबन्ध पुद्गल कोल्युं, नित्य सुख पण त्यां नहि भाळ्युं;
सर्वेश्वर निजस्वरूपाधारे मन भटकायछेरे. सुपना. १
भावसुपना बहु समज्या, क्षणिक सुपना ज्यां छे वामा;
दुःखनी पाछळ दुःखो बहु वळी जह आवछेरे. सुपना. २

धीरवीर धारे नहि ममता, सम विषयमां धारे समता;
चेतन चेतनभावे जडमां जडत्व ग्रहायछेरे, सुखना. ३
समनिस्सरणिथी शिव महेले, चढतां अनहद आनंद रले;
शुद्ध समाधि चेतन घर परखायछेरे, सुखना. ४
पुद्गलमां छे दुःखना दरिया, अनंत सुख चेतनमां भरिया;
मेमे बुद्धिसागर परमानन्द हृदयमां ग्रहायछेरे, सुखना. ५

परोपकार.

छप्पय छंद.

प्राण लक्ष्मीने सत्ताथी उपकार भलेरो,
धन्य धन्य उपकारीनो जगमांहि घेरो:
सूर्य चंद्र घन पृथ्वी सरखो उपकारी जन.
दुःख पडे पण उपकारिने धरशो सज्जन:
तृणथकी पण तुच्छ मानुं अनुपकारी जन अरे,
तृण रक्षण करे पशुनुं भीरु जननुं जग खरे १
आत्मार्थे तो सर्व जनो जगमांहि जीवे छे.
आत्मार्थे तो सर्व जीवो शीत नीर पीवे छे:
परोपकारे जीव्यो ते जगमांहि वखाणुं,
अनुपकारी पामर जीवन वेश न जाणुं:
उपकृतिथी शून्य जीवनुं जीवन निष्फल जाणवुं,
समजीने अरे भव्य जीवो सारुं मनमां आणवुं. २

चर्म वडे उपकार करे ते पशुओ सारा,
करे नहि उपकार जगत्मां तेह नठारा,
मनः वचनने काया शोभे परोपकारे,
स्वार्थ विषे जे लीन तरे शुं परने तारे;
परोपकारे जीवन जातुं उच्च तेने मानीए,
स्वार्थ लंपट मूढ जननो जन्म फोकट जाणीए. ३
वित्त छतां पण दान न आपे ते जन पापी,
शक्ति छतां पण स्हाय न आवे व्यर्थ विलापी;
खाय नहि ने खावा नहि आपे ते खोटो,
उपकृति वण जाणो परभव नक्की तोटो;
नदी तरुने सज्जनोनो धन्य धन्य अवतार छे,
धन्य धन्य उपकारी जगमां जीवन जयजयकार छे. ४
परोपकारी आप तरे ने परने तारे,
परोपकारीनो यश जगमां वर्ते भारे;
परोपकारी निर्धन पण जगमां छे डाह्यो,
परोपकारी सन्त खरेखर विश्व गणायो;
उपकृति कृत सन्त शूरा दान शूरा जयकरा,
बुद्धिसागर परोपकारी सन्त माथा अवनर्या. ५

धीर प्रशंसा.

छप्पय छंद

धन्य धन्य नर तेह विपद्मां धीरता धारे,

चळे सूर्यने मेरु गिरि पण धीर न चळता,
संकट पडे हजार कदी नहि पाछो वळतो;
धैर्य धारी धीर पुरुषो कार्य सिद्धिज इष्ट करे,
साहसगुणने स्त्रीलवता मन कदी नहि पाछा फरे. १

निंदे निंदक लोक शत्रुओ पूंठ न मूके,
तोपण तजे न टेक धीरता धीर न चूके:
विघ्न थाय कई लाख राख तेनी ते करतो,
धरे सिंहनी वृत्ति अन्यने नहि करगरतो:
लक्ष्मी जाओ के रहो पण धीर धैर्यथी नहि चळे,
धन्य धन्य ते धीर जगमां परोपकारे पग भरे. २

धन्य धन्य ते धीर जगत्मां परोपकारी.
लजवी जननी कूख धीरता लेश न धारी;
धर्म कृत्यमां धीर खरेखर ते अवतारी,
समजी धीरता गुण धरो मन नरने नारी:
धन्य धन्य ते धीर जनने मोक्ष नगरी संचरे,
सदाचरणने धरी जगत्मां कीर्ति कमळा कर वरे. ३

धैर्य धरे ते शिव नगरी जावानो पहेलो,
धैर्य सद्गुण सत्य स्त्रीलववो ते नहि रहेलो;
सचा लक्ष्मी धीर वरे छे जगमां जोशो.
धीर जनोनुं धैर्य सुणीने सद्गुण लेशो:
धैर्य सद्गुण स्त्रीलवीने धर्म कृत्यो बहु करो.
धर्म अर्थने काम लक्ष्मी चार वर्गो सुख वरो. ४

अधोमुख यदि वन्हि करो पण शिखा ज उंची,
धैर्यवृत्ति कदी दुःख पडे पण थाय न नीची:

धैर्य शौर्यने गौरवशाली धैर्य सजाया,
धीर जगत्मां धन्य सोरठर कृतयथी डाबा;
धैर्यनानुं अतुल वर्णन अनुभवीए अनुभव्युं,
बुद्धिसागर धन्य सानुं धैर्य फळ मनमां लह्युं. ५

सत्पुत्रप्रशंसा

छप्पय छंद.

सत्य पूत जे धन्य जगत्मां सद्गुण धारी,
मात पिताने नमन करे छे प्रेम वधारी;
मात पितानी आज्ञा प्रेमथी मनमां धारे,
कुटुंबमांनी रीति सदाने सुखमां म्हाले;
वंदित विनयने मानवंतीने जगत्मां उन्नत रहे,
पर स्त्रीने बेन माने वाणीथी मानुं कहे. १
कदे नहि कोइ मात पिताने वाणी बोले,
सत्य असत्य जे बात न्यायथी तेने तोले;
सत्यवृत्तने धरी वधुने पूज्य [illegible]
धरी पूर्ण उत्साह कार्यनी सिद्धि [illegible]
मात पिता [illegible],
मात पितानी भक्ति [illegible] २
न्याय नीतिनी [illegible]
सत्पुत्र [illegible]
[illegible]

धरी भावना चार धर्मना फन्द निवारे;
द्रव्य क्षेत्रने काल भावे शुद्धधर्मने आदरे,
अचल श्रद्धा अचल भक्ति धर्मनी करी सुखवरे. १
धरे प्रभु पर प्रेम गुरुनी भक्ति करे छे,
सदाचारथी पाछो अरे ते नहि फरे छे;
सह सुधारा करे कुधारा दूर करीने,
प्रभु आज्ञानो लोप करे नहि प्रेम धरीने;
सत्य प्रभुनो धर्म पाळे सत् क्रियाओ सहु करे,
क्लेश कदीया परिहरीने धर्म रीति दिल धरे. २
करी शक्तिनो तोल यथाबल कार्य करे छे,
आत्मिकशुद्धस्वभाव दृष्टिथी धर्म वदे छे;
वदे गुरुना पाय गुरुनी आज्ञा पाळे
करी धर्म अभ्यास दोषना फन्दने टाळे;
धन्य धन्य ते पुत्र तारा जननी कुखे अवतर्या,
बुद्धिसागर अनेकान्तनयज्ञानपाथोधि भर्या. ३

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

धरे धर्मपर प्रीतिरीतिने दुःखिजननां दुःख हरे,
धन्य धन्य ते जनक जगमां कीर्ति कमळा कर वरे. १

पुत्र पुत्रीपर प्रेम धरीने शिक्षा आपे,
केळवणी देइ सत्यपुत्रनां दुःखडां कापे;
धार्मिक विद्या सत्य अपावे गुरुनी पासे,
आपी विद्यादान प्राणिनां हृदय विकासे;
सगां संबंधी साचवेने देश अभ्युदय करे,
गरीब जनने स्हाय आपी दुःख मळथी उद्धरे. २

परस्त्रियाने वेश्यासंबंधी दूर रहेछे,
लक्ष्मी जाय ने दुःख पडे पण सत्य कहेछे;
लाभालाभ विचारी सर्व कार्य करेछे,
समभावे सहु कर्म भोगवी शर्म वरेछे;
धर्म अर्थने काम मोक्षज वर्ग चारे आदरे,
धर्म श्रद्धा अचळ धारी उच्चचेतन इष्ट करे. ३

खर्च नकामां करे नहि धन नाश करीने,
धामधूममां धर्म न धारे सत्य वरीने;
रत्नत्रयीमां धर्म खरेखर चित्त विचारे,
गुरुवचनविश्वास भक्तिथी धर्म वधारे;
सत्य धर्मनो तोल करीने बोल्य पाळे टेकथी,
द्रव्य क्षेत्रने काळ भावे वर्तनोज विवेकथी. ४

योग्यकाळे जे योग्य जाणे ते आदरतो नित्य,
योग्य नीतिथी ग्रहण करेलुं जाणे शुभवित्त;
करे पुण्यनां कृत्य पापनां परिहरे छे,
विवेक दृष्टया सत्य ग्रहीने धर्म धरे छे;

विनाना जे योग्य धर्मो साधवे संपद्रुवरे.
बुद्धिसागर जनक साचा सत्य करणी जग करे. ५

जननी प्रशंसा.

छप्पय छंद.

माता ते कहेवाय प्रजानुं पालन करती.
पुत्र पुत्री पर प्यार धर्म निज सहु अनुसरती;
करे न कजीया क्लेश द्वेष नहि धारे मनमां,
पतिव्रता व्रत धरे सदा गुणकारी तनमां;
आवक देशने काळ जाणी खर्च करती विवेकथी,
भणे भणावे पुत्र पुत्रीओ वर्तती शुभ टेकथी. १

पति आज्ञा धरे शिर विचारी वाणी बोले,
हिताहित जे कार्य विचारी सत्यम तोले;
क्षण क्षण करे न क्रोध बोध बाळकने आपे,
दुःखी जनने स्हाय करी दुःखडांने कापे;
धर्म उपर सत्य श्रद्धा गुरुदेव भक्ति करे.
कुटुंबनो निर्वाह करती अशुभ स्थाने नहि फरे. २

करे पतिने स्हाय सुधारा शास्त्राधारे.
मीठा बोले बोल कदि नहि जीवने मारे;
संकटमां धरे धैर्य आळ पण आव्युं सहती.
कर्म करे ते थाय विचारी समता वहती.

धर्म अर्थने काम मोक्षनी चोवट राखे चोगणी,
सत् कथाओ करे सदा ते जननी छे सोहामणी. ३
सगां संबंधी साथ संपथी निशदिन चाले,
अवसरनी बहु जाण शुभाशुभ कार्य निहाळे;
नखरी रहे न वेश वेष धारे गुणकारी,
गंभीरता धरे दिल वहे जे शुभ हुंशियारी;
धर्म करतां धाड आवे तोपण धर्म न त्यागती,
देवगुरुने नमन करती रात्री वहेली जागती. ४
द्विधा केळवणी वेश बाळकने प्रेमे आपे,
सदाचार धरे वेश भजानुं संकट कापे;
करे दया उपकार संपीली सहुनी साथे,
सत्य प्रभु विश्वास धरे आज्ञा निज माथे;
धन्य धन्य ते जननी जगमां स्वपर हित करती रहे,
बुद्धिसागर जननी शिक्षा पामी सर्वे सुख लहे. ५

पुत्री प्रशंसा.

छप्पय छंद

पुत्री ते कहेवाय धर्मनी श्रद्धा धारे,
जननी शिख धरे चित्त नीतिपर प्रेम वधारे;
देशकाळ निज धर्म विचारी वेष धरे छे.
अपकीर्ति नहि थाय योग्य ते स्थान फरे छे;
बहुविध केळवणी लहीने उन्नति करे आपनी,
उपकारीने चित्त आणी भक्ति करे मातापनी १

भणेगणे देइ चित्त रहे नाहि कलेश करीने,
संपी रहे सहु साथ हृदयमां सत्त धरीने:
सर्व साहेली साथ प्रेमथी वर्ते निशदिन,
सदाचारमय अंग सुजनता जेना छे मन;
सर्व जीवनुं भव्य इच्छे दया हृदयमां धारती,
यतनाथी सहु कार्य करती त्रसजीवो नहि मारती. २
धार्मिक विद्या धरे हृदयमां श्रद्धा राखे,
मातपिता गुरु देव विनयथी शिवसुख चाखे;
विकथानो करी त्याग कुलेशमां कदी न पडती,
करे दान बहु रीत करे निज धर्मनी चडती:
शिल्प धारे धैर्यधारी सर्व विद्या जाणती,
सर्व दोषो परिहरीने धर्म उत्साह आणती. ३
कुटुंब जातिने देशतणुं जे भव्य विचारे,
दीपावे कुलवंश सर्वनुं दुःख निवारे;
नीतिथी सहु उच्चसूत्र ते साचुं धारे,
दुःखिजन उद्धार करे छे निजने तारे:
धर्म सेवा साचवेने जननी आज्ञा पाळती.
अशुभ विचारो प्रगटे तेने धैर्यथी झट टाळती. ४
घरनां करती कार्य धर्मनां तत्त्व विचारे,
यथाशक्ति अनुसार सज्जननी सेवा सारे:
लडे नहि कोइ साथ हृदयमां ममता मारे
सत्य तत्त्व स्याद्वाद भणीने अनुभव चाखे:
धन्य पुत्री जगतमां जे धर्म कृत्यो बहु करे,
बुद्धिसागर शुभ विनयथी जगतमां सुखडां वरे. ५

१२०
मित्रप्रशंसा

छप्पय छंद.

मित्र खरेखर तेह दुःखमां साथ करे छे,
मित्र खरेखर तेह सुजनता चित्त धरे छे;
मित्र खरेखर तेह विपद्‌मां दूर न रहेतो,
मित्र खरेखर तेह सदा जे साचुं कहेतो;
मित्र खरेखर जाणीए ते धर्म विद्या आपतो,
दोष बुद्धि शब्दोने जे दुःखवल्लि कापतो. १
गुप्त मित्रनी वात कोइनी अग्र न कहेवे,
करे मित्र गुण प्रकट विघ्नने अवसर देवे;
देशकाळ अनुमान मित्रनुं भव्य विचारे,
स्वार्थ तजीने मित्रपणामां निजमन ठारे;
सूक्ष्म बुद्धि वापरीने भलुं करे छे मित्रनुं,
हामीदाना मित्र खोटा शुं कहुं रे विचित्रनुं. २
वात वातमां लडी पडी ते मित्र न साचा,
निन्दा करता अन्यनी आगळ ते जन काचा;
स्वार्थ धरी मित्राइ करे ते मित्र न होवे.
खरा प्रेमथी मित्र करे ते सुखव्र जोवे;
मित्र हक ने साचवीने उच्च कृत्यो जे करे,
परोपकारे रक्त रहेवे मित्र एवा भवतरे. ३
सदाचरणमां प्रेम नेम छे सारा माटे,
व्हेम अनीति त्याग करे जे शिवपुर वाटे;
मन धरे छे वेश क्लेशथी दूर रहे छे,
सज्जन एवा मित्र हृदयनुं चिन्ह लहेछे;

मित्र सद्गुण धारवो मन उच्च जीवन गाळतो,
बुद्धिसागर मित्र सज्जन सर्वनां दुःख टाळतो. ४

हितवचन.

छप्पय–छंद.

करो क्रियानुं कष्ट ज्ञान वण धर्म न परखो.
उपर उपरनी शून्य क्रियाथी लेश न हरखो;
अन्तरना उपयोग विना नहि कर्म टळे छे,
अन्तरना उपयोग विना नहि मुक्ति मळे छे;
माळा मणका फेरवो पण ज्ञान विना नहि मुक्ति छे,
आत्मज्ञाने सहज शांति ध्याननी त्यां मुक्ति छे १

पूजानां पाखंड करो पण सुख न मळशे,
टीलां टपकां करे अरे कंई कर्म न टळशेः
मननी स्थिरता यथा विना तुखडां नहि पावे,
बाह्य वेशने क्रिया कपटथी धर्म न थावे;
अन्तरमां यदि धर्म छे तो बाह्य क्लेशे शुं थयुं.
अन्तरमां यदि धर्म नहि तो बाह्य क्लेशे शुं रयुं. २

सम्यग् नहि आत्मार्थपणुं तो मौन रहे शुं.
सम्यग् यदि आत्मार्थपणुं तो वचन वदे शुंः
हृदय सरळ नहि यदि नदानो क्रिया करे शुं,
हृदय सरळ यदि नित्य मज्ञा नो क्रिया करे शुं;
...धायों नहि हृदय नो ढोर हगाया मन गणो.
...युं तो केम भटकवुं अरे तत्त्व विधा दिल भणो. ३

१२०

मित्रप्रशंसा

छप्पय छंद.

मित्र खरेखर तेह दुःखमां साह्य करे छे,
मित्र खरेखर तेह सुजनता चित्त धरे छे;
मित्र खरेखर तेह विपद्मां दूर न रहेतो,
मित्र खरेखर तेह सदा जे साचुं कहेतो;
मित्र खरेखर जाणीए ते धर्म विद्या आपतो,
दोष बुद्धि टाळीने जे दुःखवल्लि कापतो. १
गुह्य मित्रनी वात कोइनी अग्र न कहेवे,
करे मित्र गुण प्रकट विघ्नने अवसर देवे;
देशकाळ अनुमान मित्रनुं भव्य विचारे,
स्वार्थ तजीने मित्रपणामां निजमन ठारे;
सूक्ष्म बुद्धि वापरीने भलुं करे छे मित्रनुं,
हामीदाना मित्र खोटा शुं कहुं रे विचित्रनुं. २
घात घातमां लडी पडी ते मित्र न साचा,
निन्दा करता अन्यनी आगळ ते जन काचा;
स्वार्थ धरी मित्राइ करे ते मित्र न होवे,
खरा प्रेमथी मित्र करे ते सुज्ञजन जोवे;
मित्र हक ने साचवीने उच्च कृत्यो जे करे,
परोपकारे रक्त रहेवे मित्र एवा भवतरे. ३
सदाचरणमां प्रेम नेम छे माग माटे,
द्वेष अनीति त्याग करे जे शिवपुर वाटे;
व्रत धरे छे वेश कलेशथी दूर रहे छे,
सज्जन एवा मित्र उत्तमनु चिन्ह कहे छे;

मित्र सद्गुण धारतो मन उच्च जीवन गाळतो,
बुद्धिसागर मित्र सज्जन सर्वनां दुःख टाळतो. ४

हितवचन.

छप्पय-छंद.

करो क्रियानुं कष्ट ज्ञान वण धर्म न परखो,
उपर उपरनी शून्य क्रियाथी लेश न हरखो;
अन्तरना उपयोग विना नहि कर्म टळे छे,
अन्तरना उपयोग विना नहि मुक्ति मळे छे;
माळा मणका फेरवो पण ज्ञान विना नहि मुक्ति छे,
आत्मज्ञाने सहज शांति ध्याननी त्यां युक्ति छे. १
पूजानां पाखंड करो पण सुख न मळशे,
टीलां टपकां करे अरे कंई कर्म न टळशेः
मननी स्थिरता थया विना सुखडां नहि पावे,
बाह्य वेशने क्रिया कपटथी धर्म न थावे;
अन्तरमां यदि धर्म छे तो बाह्य क्लेशे शुं थयुं,
अन्तरमां यदि धर्म नहि तो बाह्य क्लेशे शुं रह्युं. २
सम्यग् नहि आत्मार्थपणुं तो मौन रहे शुं,
सम्यग् यदि आत्मार्थपणुं तो वचन वदे शुं;
हृदय सरळ नहि यदि तदा तो क्रिया करे शुं,
हृदय सरळ यदि नित्य सदा तो क्रिया करे शुं;
धर्म धार्यो नहि हृदय तो ढोर हरायां सम गणो,
जाण्युं तो केम भटकवुं अरे तत्त्व विचा दिल भणो. ३

गुरु गुरु करी बहु भटकयाथी पार न आवे,
गुरु मळ्या यदि आत्मज्ञानी तो अन्य न आवे;
जाण्युं जो यदि आत्मरूप तो तीर्थ न रहेतुं,
जाण्युं यदिहि आत्मतत्त्व तो शिव सुख वहेतुं;
समानदृष्टि सर्व जीव पर आनंद उभरा घट अहो,
बुद्धिसागर समजे ज्ञानी तत्त्वमां निर्भय रहो. ४

धर्मभेद

छप्पय छंद.

धर्म भेदमां खेद घणो छे विना विचारे,
धर्म भेदमां घसी पड्या केइ कर्म वधारे;
दया धर्मथी दूर रहीने पक्ष ज ताणे,
अनेकान्तनयवस्तु विचारे सत्य ज जाणे;
म्हारु त्हारु करी घणा जन क्लेश कजीया बहु करे,
युक्तिथी निज पक्ष ताणी हठ कदाग्रह मन धरे. १
सत्ता तर्कनी शक्ति विशेषे पक्ष सबळ छे,
सत्ता तर्कनी शक्ति अभावे पक्ष अबळ छे;
उदय जेहनो ते जन फावे पक्ष वधारे,
जळ तरंगो पेठे कोइ न कार्य सुधारे;
जन्म्या त्यारे कंइ नहिने भण्या गण्याथी मत पड्या,
ज्ञाननो नहि दोष तेमां मोह योगे लडथड्या. २
जे जे पामे जइ पुछो ते कहे निज साचुं,
धार्मीनुं सहु जूठ बतावे छे बहु काचुं;

आप आपनो पक्ष वधारे मत रंगाणा,
तर्क शक्ति अनुसार करे छे ताणंताणा;
हठ कदाग्रह पोषवाने अन्य दोषो उच्चरे,
आपानो बहु डोळ राखे कोइक साचुं अनुसरे. ३
बाह्य क्रियाना भेद अनेको नजर पडे छे,
करीने ताणंताण अन्यने बहु कनडे छे;
साधनयोगो बाधक रूपे करता प्राणी,
आत्मधर्मनी वात हृदयमां लेश न आणी;
हेय वातो आदरे छे उपादेयने त्यागता,
अनुभवामृत परिहरीने मोह भिक्षा मागता. ४
एक एकनो पक्ष उथापे मनमां माचे,
धामधूममां धसी पडीने मन बहु नाचे;
अनेकान्तनय पक्ष विचार्या वण सहु भूल्या,
समता राख्या विना जगत्मां सहु जन झूल्या.
सापेक्षदृष्टि मन रहे तो पक्षपात हणाय छे,
बुद्धिसागर नय अपेक्षा समजुने समजाय छे; ५

दयाभाव.

छप्पय छंद.

दयाभाव नहि चित्त अरे ते क्याथीज उंचो,
दयाभाव नहि हृदय अरे ते निशदिन नीचो;
दयाभाव नहि हृदय अरे धर्मीज शानो,
दयाभाव नहि हृदय अरे ते मूढ पिछानो:

टीलां टपकां बहु करे ने प्राणी अंगो कापतो,
धर्म ढोंगी कदी [illegible] निर्मल दुःख जीवने आपतो. १
प्रभु दर्शननी होंश धरे पण जूठ न मूके,
नाम प्रभुनुं मुखथी बोले गुणथी चूके;
घंट बगाडे प्रभु भजनमां कपट न त्यागे,
दुःखी उपर नहि दया तो दूरज भागे;
भलुं करे नहि अन्यनुं लव भक्त नामे शुं थयुं,
रासभ उपर रत्न पोठी ज्ञानवण त्यां शुं रह्युं. २
ओ इश्वर तुं तार प्रार्थना मुखथी बोले,
पशु पक्षीना रक्त पीवे ते राक्षस तोले;
सर्व जीवनो नाश करीने हिंसक थावे,
ओ इश्वर तुं तार मुखथी जूठ जगावे;
प्रार्थना प्रभुनी करे बहु पाप कृत्यो बहु करे,
इश तेने केम तारे नरकमां ते अवतरे. ३
दया दया पोकार्याथी भाइ कांइ न वळतुं,
दया कर्या वण पाप कर्म तो लेश न टळतुं;
सर्व जीवनी दया करे ते धर्मी विचारो,
मनथी पण कोइ जीव न मारे धर्मी सुधारो;
दया भावथी जगत् सघळुं कुटुंब भासे छे अहो,
बुद्धिसागर दया विचारो धर्मथी शिवसुख लहो. ४



भलुं करनार.

छप्पय छंद.

भलुं करे ते भक्त जगत्मां संपत् पामे,
भलुं करे ते भव्य जगत्मां ठरतो ठामे;
भलुं करे ते नदी चंद्र सम जगमां प्यारो,
भलुं करे ते सुजन अन्य सहु दुर्जन धारो;
सर्व जीवनुं भलुं करे ते धर्मी साचो जाणशो,
धर्म इयत्ता जे करे ते भला न जगमां आणशो. १

भलुं सर्व करनार दयाथी मन उभरातो,
भलुं सर्व करनार खरेखर उत्तम थातो;
भलुं सर्व करनार खरेखर पूज्य गणातो.
भलुं सर्व करनार भक्तमां मुख्य भणातो;
सर्व जीवनुं भलुं करे ते उच्च जानि विचारीए.
भलुं कर्यामां भाव साचो राखी चेतन तारीए २

दुःखि जीवनुं भलुं करे नहि ते केम धर्मी,
सर्व जीवनी घात करे ते होय अधर्मी;
मुख थकी प्रभु नाम रटेने मनमां कानी.
स्नान करे शतवार पापमय वर्ते छावी;
भलुं करे शुं अधमजीवो नास्तिको भवमां भमे.
पापमां सहु जीवन जातुं रौरव दुःखडां ते खमे. ३

भलुं करे तें जीव जगत्मां जन्म्यो सारो.
भलुं कर्या वण जीव जगत्मां जाण नठारो;
धिक् तेनो अवतार स्वात्म पर भलुं न कीधुं,
धिक् तेनो अवतार जन्मीने सत्य न लीधुं;

धन्य धन्य ते नर जगत्मां भलुं करे शुभ टेकथी,
बुद्धिसागर धन्य मानव वर्ते जेह विवेकथी. ४

उत्तमजाति

छप्पय छंद.

उत्तम तेनी जात मधुरी वाणी बोले,
उत्तम तेनी जाति अन्यनां मर्म न खोले;
उत्तम तेनी जात पड्या पर पाद न मारे,
उत्तम तेनी जात बोलीने कदी न हारे;
जाति उत्तम ते जनोनी दोषीना दोषो हरे,
अभक्ष्यनुं भक्षण करे नहि स्वार्थे माया परिहरे. १
उत्तम तेनी जाति दीनता दिल न राखे,
परनी निंदा कलंक वचनो कदी न भाखे;
उत्तम तेनी जात अन्यने दुःख न आपे,
उत्तम तेनी जात प्राणिनां अंग न कापे;
सत् क्रियामां शूर रहेवे अशुभ वर्तन परिहरे,
नीचने पण उच्च करतो दया हृदयमां बहु धरे. २
उत्तम तेनी जाति कोइने गाळ न देवे,
उत्तम तेनी जाति गुरुनां पदकज सेवे;
उत्तम तेनी जाति न्यायथी वृत्ति चलावे,
उत्तम तेनी जात परस्त्री संग न जावे;
मांस दारु परिहरीने उच्च वर्त्तन धारतो,
गरीब जनने स्हाय आपी दुःखथी उद्धारतो. ३

दुर्जननुं पण दया भावथी भव्य विचारे,
स्वार्थ धरीने अन्य जीवोने कदी न मारे;
बोले निशदिन सत्य चोरीथी दूर रहे छे,
उत्तम तेनी जाति भावना उच्च लहे छे;
प्रभु गुरुनी भक्ति करतो चिदानंद राजी रहे,
बुद्धिसागर जाति उत्तम सदाचरण ज्ञाने वहे. ४

गुरुनिन्दा.

छप्पय छंद.

गुरु निन्दाथी नाश कूळनो प्रथम विचारो,
गुरु निन्दाथी मूढ वन्या केइ दिलमां धारो;
गुरु निन्दाथी वित्त विनाशे ज्ञान न प्रगटे,
गुरुनिन्दाथी उच्चमति पण क्षणमां विघटे;
सद्गुरु निंदक जनोनुं चित्त ठामे नहि ठरे,
नीचमां पण नीच निंदक चतुर्गतिमां अवतरे. १
गुरु निंदा करनार बुडे ने अन्य बुडाडे,
गुरु निंदा करनार भमे ने अन्य भमाडे;
गुरु निन्दा करनार पापनो पुंज ग्रहे छे,
गुरु निन्दा करनार दुःखना दीन लहे छे;
गुरु निन्दा करनारनुं अहो पाप जीवन जाय छे,
उपकार घातक जाय भवमां भटकीने दुःख पाय छे. २
गुरु निन्दा करनार खरेखर अधम कह्यो छे,
गुरु निन्दा करनार खरेखर दुःख लह्यो छे;

गुरु निन्दा करनार पक्षी ईश्वर छे आघा,
गुरु निन्दा करनार पक्षी उत्तम छे दाघा;
गुरुनी निंदा पाप मोटुं गुरु भजीने वारीए,
बुद्धिसागर सत्य समजी उत्तम सद्गुण धारीए. १

कलंक पाप.

छप्पय छंद

आळ चढावे जेह अधम नर पापी पूरो,
धरे साधुनो वेष तोय पण पाप मनुरो;
परने देतां आळ अनन्ता भवमां फीरवा,
परने देतां आळ पापना प्याला पीवा;
परने आळ चढाववाथी पातकी नर घोर छे,
पर पीडानुं कार्य करे जगतमां महा चोर छे २
परने आळ चढावे जे नर पावन दूषी,
परने आळ चढावे ते नर पाप न मूकी;
आळ चढावे जे नर तेनुं [illegible]
आळ चढावे ते नर [illegible]
[illegible]
[illegible] ३
[illegible]
आळ चढावी [illegible],
[illegible]
[illegible]

आळ देतां जे न अटके तेह पापी जाणवो,
कर्म आधीन जीव जाणी दयाभाव मन आणवो. ३
कलंक चढावे तेमां सघळा दोष प्रवेशे,
कलंक चढावे ते जन ठरीने ठाम न बेसे;
धिक् तेनो अवतार कलंक चढावे मुख,
धिक् तेनो अवतार दोषनुं घर छे मुख;
कलंक दाता दुःख पामे जाणी दोष न परिहरो,
बुद्धिसागर सत्य समजी मोहपाथोधि तरो. ४

सहुनुं सारुं इच्छो.

छप्पय छंद.

इच्छो सहुनुं श्रेय द्वेष मनमांथी काढी,
इच्छो सहुनुं भव्य वैरनी वृत्ति वाढी;
सर्व जीवो मुज मित्र मित्र तेमां शुं केवुं,
जेवुं मारुं इष्ट तेवुं हुं सहुनुं लेखुं;
सारुं इच्छो सर्वनुं मन चित्त शुद्धि थवाय छे.
सारुं इच्छे सारुं थाशे मलीन बुद्धि जाय छे. १
शुभ इच्छक मन उच्च विचारे धर्म वरे छे,
शुभ इच्छक जन भव्य मोहाब्धि शीघ्र तरे छे;
शुभेच्छक जन आप तरेने परने तारे,
उच्च जीवनो भेदभाव सहु दूर निवारे;
भलुं करंतो अन्य जननुं कठीन कर्म हणाय छे,
देव भक्ति शीलवती शुभ धर्म मर्म जणाय छे. २

सहुनुं सारु इच्छे ते जन सन्त प्रमाणो,
सूर्य किरणवत् कदी न रहेशे ते जग छानो;
सहुनुं सारु इच्छे नहि ते खोटो साधु,
ढोंगी जनोए समज्या वण जग फोली खाधुं;
सहुनुं सारु इच्छतांथी परम प्रभुपद झट मळे,
सर्वना दुःख टाळवामां द्वेष क्लेश इर्ष्या टळे; २
सहुनुं सारु इच्छे तेनुंज सारु थाशे,
धर्म जय पामे सत्य वाक्यज सत्य मनाशे;
सर्व शुभेच्छक त्रिभुवन पूज्य प्रतिष्ठा पामे,
सर्व शुभेच्छक जनने जग जन मस्तक नामे;
सर्व शुभेच्छक मनुष्य मोटो देवता पाय पडे,
सूर्य चंद्रने दृष्टि करवा कोई साथे नहि लडे. ४
सर्व शुभेच्छक दया विना नहि उत्तम थवातुं,
दया धर्मनुं मूळ वाक्य पण अम गवातुं;
सर्व शुभेच्छक सत्य प्रकाशे सत्यज बोले,
सर्व शुभेच्छक न्याय न त्यागी साचुंज तोले;
परस्त्रियाने मात लेखे चिदानंद पद झट वरे,
बुद्धिसागर सारु थाशो सर्वनुं सम उचरे ६

क्लेश न करवो.

मनहर छंद.

क्लेश न करीए कंईक सर्वनी निज भलाई,
क्लेश न करीए जरा आपसमां दाने साथी;

क्लेश न करीए पंडित साथे विद्या नावे,
क्लेश न करीए शिक्षक साथे सद्गुण जावे;
क्लेश करीए नहि कदि अरे मातपितानी साथमां,
जाणी शिक्षा धारशो तो सुख जीवन हाथमां. १
प्रिया साथे पण क्लेश न करीए लक्ष्मी टळे छे,
भाइ साथे पण क्लेश न करीए प्रीति गळे छे;
मित्र साथे पण क्लेश न करीए टळे विसामो,
सन्तनी साथे क्लेश करे पण दुःखडां पामो;
क्लेश दुःखनुं मूळ जाणी परिहरो शुभ टेकथी,
क्लेश जातां सहु टळ्युं अरे समजशो विवेकथी. २
जेना घरमां क्लेश थतो त्यां वित्त न रहेतुं,
क्लेशे धर्म विनाश क्लेशथी सुख न रहेतुं;
क्लेशे संप विनाश जंप पण क्यांथी होवे,
देश राज्यमां क्लेश प्रवेशे स्वपना जोवे;
धर्मना बहु पन्थमां जो क्लेश पेठो जो खरे,
विष समाज्ञान नाटक लहीलहीने जन मरे. ३
क्लेश कर्याथी सुख टळे छे प्रगट विचारो,
क्लेश कर्याथी महाजन मंडळ भेदक धारो;
क्लेश क्लेशथी सदा हठीलो नहुने मारे,
हेव मूरुं देहुं ने जन नरक न धारे;
क्लेश करे ते दुष्ट जगतमां क्लेश हठे दुःख टळ्युं,
बुद्धिसागर संत कहता सूर्य. मावत सुख टळ्युं. ४

बाळलग्न.

छप्पय छंद.

हानिकारक रीति तजो अरे उन्नत थावा,
पडी कुटेवो परिहरो झट सत्य स्वभावा;
बाळलग्नने देशवटो द्यो बळ्ना माटे,
बाळलग्नथी अवनति सहु अवळी वाटे;
बाळलग्नथी देशनी बहु पायमाली थइ अरे,
आर्य पुत्रो त्वरित जागो आदरो सद्गुण खरे. १
बाळलग्नथी संतानो निर्बळने रोगी,
बाळलग्न परिहार कर्याथी मजा निरोगी;
बाळलग्नथी चित्त हानिने धर्मनी हानि,
बाळलग्नथी लहे न विद्या सत्य मजानी;
रोग क्षय जे दुष्ट पापी बाळलग्नथी संपजे,
शरीर दुर्बळ तामसीमन समजीने सज्जन तजे. २
बाळलग्नथी कोम बापली धरे न हिंमत,
बाळलग्नथी मूर्ख कोमनी थाय न किंमत;
बाळलग्नथी कोम रांकडी वधे न आगळ,
बाळलग्नथी देश रांकडो रहेज पाछळ;
बाळलग्नथी बुद्धि हानि पवैयासम कोम छे,
बाळलग्न ते जाणजो अरे मनुष्य जाति होम छे. ३
बाळलग्नथी निर्वेशी थइ जे केइ मरिया,
बाळलग्नथी भण्या न केइक चिंता भरिया;
बाळलग्नथी केइक दुःखी विश्व जणाता,
बाळलग्नथी दोष अनेकज मगट भणाता;



१३४

हानिकारक रीवाजोनो त्याग करवो.

छप्पय छंद.

हानिकारक तजो रीवाजोने नरनारी,
खर्च नकामां करो अरे तेथी दुःख भारी;
नात जमणमां खर्च कर्याथी थाय न सारु,
दारुखानुं फोडयाथी अरे थाय नठारुं;
कीर्ति माटे वित्त व्ययथी धूळधाणी थाय छे,
विना प्रयोजन वित्त व्ययथी देश जन लुंटाय छे
खर्च नकामां करे अरे ते दुःख लहे छे,
जमण करी लखलुंट करीने माण वहे छे;
वरघोडानी धामधूममां धर्म न मळशे,
परोपकारे काइ न खर्चे दुःखमां पळशे;
रमतगमतमां वित्त व्यय बहु करे अरे ते मूढ छे,
दुःखी जननी दया करे नहि मनडुं मोहे गूढ छे.
एक छतां पण अन्य नारीने परणे प्रेमे,
बे नारीनां वेर्णा दुःखी बहु रहे न क्षेमे;
करे जे वृद्धविवाह दुःखमां रडतां नाखे,
करे जे वृद्धविवाह दुःखना [illegible] बहु चाखे;
वस्त्रमां बहु वित्त व्ययथी [illegible] कहे,
चोर जननी [illegible] कहे.
आतक करता [illegible] पल्लानो.
देवु करीने जमण करे न [illegible].
कन्याविक्रय पाप [illegible],
फुलण पेटे [illegible] न [illegible]



सुरता पद.

अजपा जापे-ए राग.

परम प्रभुनां दर्शन करवा, सुरता अन्तरमां उतरी;
विवेक दृष्टिथी सहु देखो, पूर्णानन्दे स्थान ठरी. परम प्रभु. १
माया शोधी खटपट बोधी, समभावे त्यांथी चाली;
असंख्यप्रदेशीचेतन शोध्यो, सत्तरूप देखी म्हाली. परम प्रभु. २
आत्मप्रभुजी पूर्ण जणाया, अनंतगुण पर्याय भर्यो;
पोते कहेतो पोते करतो, स्वयंशक्तिथी स्वयं तर्यो. परम प्रभु. ३
दर्शन करतां एकमेक थई, समाई सुरता भेद टळ्यो;
लूण गांगडो सागरमां जई, एकमेक थई त्यांज गळ्यो. परम प्रभु.४
सुरताचिति शक्तिमय थईने, क्षायिकभावे सिद्ध ठरे;
बुद्धिसागर गहनशैली छे, अनुभवी मनमां उतरे. परम प्रभु. ५

ब्रह्मरन्ध्रध्यान.

राग उपरनो.

अघळी वाटे गुरु कृपाथी, हंस गगन गढ आयारे; हेजी.
षट् चक्रोने भेदी नेथे, अलख देश सुख पायारे; हेजी.
झळहळ झळहळ ज्योतिरे झळके, ब्रह्मरूप मन भ्यारोरे. हेजी.
अनुभवामृत चढी खुमारी, नेति नेति पद गायोरे; हेजी.
शब्दतीर पण ज्यां नहि पहोंचे, महिमा त्रिभुवन छायोरे हेजी. २
पूर्ण प्रकाशी ज्यां त्यां देखुं, पूर्ण पूर्ण सुहायारे; हेजी.
...ं ब्रह्मनां पण पूर्ण. नहि जाया नहि आयारे. हेजी झळ. ३

पूर्णस्वरूपी षट्कारकमय, पूर्णानन्द विलासीरे; हेजी.
तिरोभाव पण पूर्णमयीते, आविर्भाव प्रकाशीरे. हेजी. झळ ४
नामरूपथी न्यारो प्यारो, स्थिरोपयोगी भासुंरे हेजी;
हुं तुं व्यवहारे उच्चरवुं, लोकालोक प्रकाशुंरे. हेजी. झळ. ५
जेवो हुं तेवा सहु आतम, कोने दड साबाशीरे; हेजी.
बुद्धिसागर परम प्रभुमय, घटमां गंगा काशीरे. हेजी. झळ. ६

सर्वं स्वात्मवशं सुखं ॥

थाळ राग

स्वाश्रयना करनारारे, साधु सहु सुखी;
पराश्रयी नरनारीरे, जगमां बहु दुःखी.
स्वाश्रय सुखनी क्यारी, स्वाश्रयनी बलिहारी;
स्वाश्रय धर्म विहारीरे, साधु. १
पराश्रयिजगजीवो, पाडे छे बहु रीवो;
स्वाश्रयी जगमां दीवोरे, साधु. २
परवश जगमां प्राणी, दुःखी छे रंकने राणी;
स्वाश्रय सुखनी खाणीरे, साधु. ३
परवशता जेणे धारी, मायाना ते भिखारी;
स्वाश्रयता जयकारीरे, साधु. ४
मायामां दुःखदां धारी, चेतोने नरने नारी;
बुद्धिसागर सुखकारीरे, साधु. ५

आतमशक्ति.

श्री वीरप्रभु चरम जिनेश्वर ए राग.

सहु करी शके आतमशक्ति अनंतिनी तुंहि खाण छे,
त्रणभुवन विषे शक्ति अनंति प्रगट थयां सुलतान छे;
दुनियामां ज्योति विकासी रह्यो, निजरूपनो ज्ञाता तुंहि थयो;
निजपदनो अनुभव शुद्ध लह्यो. सहु १
तुं त्रणभुवनमां छे दीवो, अनुभव अमृत पाणी जीवो;
परमातमपद अनुभव पीवो. सहु २
तुं शाश्वत आनंदनो दरीयो, तुं ज्ञानादिक गुणथी भरियो;
आतमज्ञाने निजपद वरियो. सहु. ३
तुं सहजस्वरूपी विश्रामी, रूपी नहि निश्चय निर्नामी;
बुद्धिसागर शिवसुखरामी. सहु. ४

चिदानन्दस्वरूप.

लग्या कलेजे छेद गुरोकारे–ए राग.

चिदानंदघनरूप हमारे, बाकी पुद्गल माया काची;
अनुभवथी में निश्चय कीधो, तत्त्वमसिपद राची चिदानंद. १
चिदानंदसागरनी लहेरो, घटमां उछले भारी;
अन्तरनो मस्तेज्ञो भेटयो, परम प्रभुना धारी चिदानंद २
मन मक्कामां गुदा प्रभुजी, अळख अगमग पावे;
त्रणभुवनमां शोधी लीधा, पण आ प्रभुजी पावे चिदानंद ३

शक्ति अनंति खोलवुं निशदिन, अन्तर स्थिरता वासी;
देहदेवळमां झळहळ दीवो, शक्ति अनंत विलासी. चिदानंद. ४
अलख जगावी अलख देशनी, अलख धूनमां रहीशुं;
बुद्धिसागर आतम उजागर. निश्चय ध्रुवपद लहीशुं. चिदानंद. ५

खटपट खोटी.

लगा कलेजे छेद गुरोकारे–ए राग.

खटपट सर्वे खोटीरे, तेमां म्हारु कांइ न वळशे;
मान मूर्ख मन जूठी माया, जन्म मरण दुःख टळशे खटपट. १
सर्व कार्यमां म्हारु म्हारु, ममता दूर निवारी;
अन्तरथी तुं अळगो रहेजे, समजण सत्य विचारी. खटपट. २
सर्प दाढनुं विष जतां तो. सर्प थकी शुं थाशे;
राग द्वेष अभावे जगमां, आतम नहि बंधाशे. खटपट. ३
वस्त्र चीकणाने रज लागे, निर्मळ नहि लेपातुं;
अन्तरथी न्यारा रहेतां तो. कांइ न थातुं जातुं, खटपट. ४
खटपट लटपट झटपट त्यागी, अन्तर मांहि जागी;
बुद्धिसागर अनुभव अमृत. स्वादंतां सौभागी. खटपट. ५

माया.

चेतानुं चेती लेजेरे. ए राग.

माया महा मस्तानीरे, सहुने फन्दामां ते लेती;
जोगीने पण ते डोलावे, करती शिघ्र फजेती. माया. १
मायानुं अंधारु मोटुं, भलाभला पण भूल्या;
नरपति सुरपतिने नहि छोडे, डहापणीया केइ डूल्या. माया. २
मायानी पूजारी दुनियां, माया सघळे घहेली;
चौदभुवनमां बहु रखडावे, पाप कार्यमां पहेली. माया. ३
माया मीठी पापी जनने, मस वात नहि सुझे;
मायाथी गांडा छे जगमन, समजाव्या नहि बुझे. माया. ४
मायाना उंडा छे कूवा, तेमां डो हुशियारी;
बुद्धिसागर शिक्षा सारी, समजो ल्यो नरनारी. माया. ५

ममता.

लगा कलेजे छेद गुरोकारे–ए राग.

ममता मनथी वारीरे, चेतन अवसर पामी चेतो;
ममता योगे दुःख घणां छे, काळ अनादि देखो ममता. १
मननी ममता तनुनी ममता धननी ममता खोटी;
अवसर आवे सघळुं त्यागी, साथ न आवे कोडी ममता. २
ममताथी बूडा छे भारी. समजो ल्यो नरनारी;
ममता त्यागे त्याग प्रमाणो, परमानन्द पदकारी ममता. ३
कोना चेला कोना गुरो. मळी मने जाडूं.

हाय हाय शा माटे करवी, केम अरे मकलावुं. ममता. ४
ममता मोटी दुःखनी क्यारी, दुःख बहु देनारी;
ममतानुं बंधन नासे तो, मुक्ति शिघ्र थनारी; ममता. ५
घर जंगलमां भेद न कांइ, ममता त्यागे परखो;
बुद्धिसागर आत्म उजागर, दशा लहीने हरखो. ममता. ६

संतो चेत्या.

कोई संत वीरले जाणीयुंरे भाई-ए राग.

कोई संत वीरला चेतीयारे, कोई संत विरलो चेतीयारे;
दुनियामां दुःखडां जाणशोजी. कोई.
जूठी गाडी लाडी माया, एवुं मनमां आणशोरे. भाई. दुनिया. १
म्हारु म्हारु मिथ्या समजो, खोटो पक्ष न ताणशोरे; भाई दुनि.
दुनियामां स्वारथनां सगपण जुठां तन धन मानशोरे भाई दुनि. २
स्वार्थनणी छे मारामारी, वैराग्य मनडुं वाळशोरे; भाई दुनि.
मरतां साथे कांई न आवे, पाप कर्म नहि आचरशोरे. भाई दुनि. ३
खरी टाणी शुं फरो फोगट, व्रत नियमने पाळशोरे. भाई दुनिया.
बुद्धिसागर धर्म खरोछे, धर्मे शिवपुर म्हालशोरे. भाई दुनिया ४

प्रभुप्रीति.

लगा कलेजे छेद गुरोंकारे. ए राग

प्रभुनी प्रीति मजानीरे, जीवलडा सत्य धर्मथी करीए;
जड वस्तुथी प्रीति हरीने, प्रभु उपर सहु धरीए. प्रभु
परम प्रेममां तन्मय थइने, आनंद मंगळ वरीए. प्रभु. १
ज्यां त्यां प्रभुनुं ध्यान धरीने, तन्मय थइने खेलो;
दुनियादारी दुःखनी क्यारी, जाणी पडती मेलो. प्रभु. २
प्रभुनी प्रीति विना शुं खावुं. नाहक ज्यां त्यां जावुं;
परम प्रभुमां प्रेम मजानो, परमब्रह्म झट पावुं. प्रभु. ३
प्रभु प्रेमना प्याला पीने, चिदानन्द पद ध्यावुं;
एकमेकता प्रभुनी साथे, अन्तरदृष्टि जगावुं. प्रभु. ४
अलख अरुपी असंख्यप्रदेशी. प्रभु साथे रंगायो;
बुद्धिसागर सोऽहं सोऽहं, परम प्रभुता पायो. प्रभु. ५

गुरु स्तुतिः

दुहा.

यतिततिपतिसुखकरगुरु, जयजयभवभयनाथ;
मरसवचन रस अर्पीने, निशदिन करो सनाथ. ॥ १ ॥

चतुर्भंगी छंद.

जप तप विचारी, दीक्षा धारी; संयम सारी, जयकारी.
बहु पाप निवारी, समतागारी; समिति धारी, गुणधारी.

सम्यक्त्व वधारी, छाचीनिहारी; देश विहारी, सुखकारी.
गुण व्यक्ति मचारी, कर्म विदारी; जगदुपकारी, बलिहारी. १

तें मोह निवार्यो, जाय ते हार्यो; आतम तार्यो, उर धार्यो.
तें शिष्य सुधार्यो, पार उतार्यो; गुणमां ठार्यो, भव तार्यो.
जग धर्म वधार्यो, प्रेम प्रसार्यो; राग विसार्यो, शिवकारी.
गुण व्यक्ति मचारी, कर्म विदारी; जगदुपकारी, बलिहारी. २

तुं सद्गुण गामी, जयनिष्कामी; अन्तर्यामी, स्वर्गामी.
तुं छे निष्कामी, ब्रह्म अनामी, निजपद पामी, बहु नामी.
जगजय गुणकामी, मन विश्रामी; वाणी स्वामी, कामारि.
गुणव्यक्ति मचारी, कर्म विदारी; जगदुपकारी, बलिहारी. ३

तुं छे पूर्णाशी, गंगाकाशी; त्यजी उदाशी, विश्वासी.
कापी तें फांसी, लेश न हांसी: पूर्ण प्रकाशी, गुणवासी.
शिवपुर निवासी, धर्म विलासी; कीर्तिराशी. छे तारी.
गुणव्यक्ति मचारी, कर्म विदारी; जगदुपकारी, बलिहारी. ४

तुं मनमां प्यारो, निश्चय सारो; प्राण हमारो, निधार्यो.
हुं शिष्य तमारो, उर उतारो; शिघ्र सुधारो, जन्मारो.
उर प्रेम वधारो, करो न न्यारो; पाप निवारो, त्यो तारी.
गुणव्यक्ति मचारी, कर्म विदारी; जगदुपकारी, बलिहारी. ५

कोइ वात न छानी, नहि अभिमानी, आतम ज्ञानी, गुण गानी;
समतामृतपानी, अन्तर्यानी, आतम ध्यानी, मस्तानी
गुणगणनी खानि, लेश न हानि. सद्गुणदानी, कामारी;
गुणव्यक्ति मचारी. कर्म विदारी. जगदुपकारी बलिहारी. ६

लळीलळी करगरशुं. विनति करशुं. सन्य उच्चरशुं, सुखवरशुं:
सुख निर्मल धरशुं, भ्रांति हरशुं. कदी न डरशुं, संचरशुं.

अन्तर उतरशुं, ठापन ठरशुं, गुरु अनुसरशुं, मनधारी;
गुणव्यक्ति प्रचारी कर्म विदारी, जगदुपकारी बलिहारी.

दुहा.

गुरु कृपालु गुणस्तवुं, पूर्णानन्द अखंड;
तारो सेवक आपनो, कर्मारि देइ दंड, १
श्रद्धा भक्ति साचवी, क्षण क्षण गावुं गान;
कृपा करीने तारजो, अर्पी अनुभव ज्ञान. २
असंख्यप्रदेशी सद्गुरु, ध्यावुं थइ लयलीन;
आतम ते परमातमा, निजपदमां छे जिन. ३
गुरुगम ज्ञाने रीजीए, गुरुगमथी छे मुक्ति;
गुरु देव आराधना, धर्म मार्गनी युक्ति. ४
बुद्धिसागर सद्गुरु, नमीए वार हजार;
द्रव्य भाव मंगलमयी, गुरु मूर्ति जयकार. ५

समज साचुं.

भजन करले. ए राग.

समज साचुं समज साचुं. अथिर आ संसाररे;
स्वारथनां सगपण अरे सहु, नक्की मनमां धाररे. समज. १
मननी बाजी त्यां शुं राचो. नाटक सम सहु खेलरे;
जोइ जोइने जोइ लीधुं, माया ममता मेलरे समज. २
शिष्य कोना पुत्र कोना, कोना गुरुने यापरे;
धर्म मनना जाणीने सद्, दूर कर भवन पंथ समज ३

खराखरीनो खेल आतम, भूल न वारंवाररे;
मननी वृत्ति ज्यां मळे त्यां, सुख गणे नरनाररे. समज. ३
सत्य दीलथी सत्य नेमे, आतमनी धर टेकरे;
अलख अरूपी तत्त्वमसि तुं, धरजे सत्य विवेकरे. समज. ४
आडुं अवळुं जगत् बोले, तोपण धर्म न छोडरे;
धर्म करतां धाड आवे, तोपण अंग न मोडरे. समज. ५
नास्तिकोना संगथी जीव, सत्य टेक न हाररे;
बुद्धिसागर धर्मयोगे, सफळ छे अवताररे. समज. ६



निश्चयरहस्य.

श्रीराग.

हवे जाण्युं जगत् सहु काचुंरे, मने लाग्युं आतमरूप साचुंरे; हवे.
कोइ न जगमां मारु निश्चय, मारु मारु जाणी शुं माचुंरे. हवे. १
चेला चेली कोइ न मारु, शा माटे अहो शुं राचुंरे; हवे.
अन्तरनो अलबेलो मजीयो, सत्य बुद्धिसागर गुण राचुंरे हवे. २



प्रभुस्तुति.

प्लवंगम छन्द.

नमुं नाथ त्रिभुवन पूज्य प्रभु जयकार तो,
जय दिननाथ दीनदयाल विभु सुखकार छो;

जय जिनवर श्री जगदीश निरञ्जन जग धणी,
नमुं जिनवर पदकज प्रेम कर्म हरवा भणी. १
निरक्षर अक्ष अनंत भदंत विराजता,
प्रगटावी केवलज्ञान जगतमां छाजता;
जय अशरण शरण अखंड महेश विलासी छो,
जय गुणपर्यायाधार अज अविनाशी छो. २
जय अजरामर अरिहंत स्मरण शिव पन्थ छो,
जय श्री वीतराग महेश श्रुति श्री ग्रन्थ छो;
मारे क्षण क्षण प्रभु आधार अन्य शुं आणवुं,
बुद्धिसागर सहजानन्द परमपद आणवुं. ३



आत्मसाधन.

॥ दुहा ॥

अजरामर निर्मल प्रभु, चिदानन्द भगवान्;
घट घटमां व्यापी रह्यो, देखे सो मस्तान. १
बाह्य वस्तुमां शोधवुं, अन्ते कशुं न हाथ;
आत्मरमणता आदरे, लहिये त्रिभुवन नाथ. २
आत्मरमणता साधीए, पुष्टालंबन सार;
अन्तरना उपयोगथी, लहिये भवजलपार. ३
अनन्त सुखनी ल्हेरियो, अन्तरमां प्रगटाय;
परमप्रभुता पद मळे, जन्म मरण विघटाय. ४
बाह्यवृत्तिमां शर्म शुं, शोधो अन्तर शर्म;
अन्तर मांहि शोधतां, प्रगटे शुद्ध सुधर्म. ५

त्याग सकल परिहरी, ध्यान धरो निर्दोष:
सहजानन्द स्वरूपमां, रहिए निशदिन मौन. ६
सार सार सहु ग्रन्थनुं, साधकस्वनी सिद्धि;
आत्मवीर्यथी साधना, ज्ञानादिक गुण ऋद्धि. ७
शुद्ध रमणे साधना, जन्म सफळता थाय:
बुद्धिसागर धर्मथी, चेतन जिनपद पाय. ८

आत्मविवेक.

दुहा.

अनन्त ज्ञानमयी प्रभु सहजानन्द स्वरूप;
पुरुषोत्तम करुणानिधि, स्मरतां नासे धूप. १
एकरूप हुं आतमा, द्रव्यार्थिक नयवाद:
अनेक हुं पर्यायथी, घोषे टळे प्रमाद. २
श्रुतज्ञानालंबीपणे, परम प्रभुनुं ध्यान;
करतां शिवसुख संपजे, व्यक्तिपणे भगवान. ३
आत्मज्ञाननी सेवना, आत्म रमणता सार;
आत्मारामी मुनिवरा, जगमां छे जयकार ४
बाह्यदशा व्यवहारमां, कांई न आवे हाथ,
पुद्गलमां निज शोधतां, भूल्यो त्रिभुवननाथ. ५
त्रिगुप्तिगुप्ता जना, ध्यावे आत्मस्वरूप;
अनन्त आनन्द स्वादीने, थाय छे जगभूप ६
बाह्य दशामां हुं नहि, निश्चय निर्मळधार
परम महोदय स्वामी हुं, अन्तरमां अवधार. ७

लेख लख्यांथी शुं थयुं, बहु बोले शुं थाय;
अन्तरमां निश्चय रहो, परमप्रभु परखाय. ८
सार सार सहु ग्रन्थनुं, समजो आतमदेव;
बुद्धिसागर आत्मनी, भावे कीजे सेव. ९

परमप्रभुता.

अलख देशमें वास हमारा–ए राग.

परम प्रभुता घटमां भारी, चिदानन्दमय परखाणी;
लागी लगनी अलख देशमां, सप्त धातुओ रंगाणी. १
शरीरनी परवाह नथी कंइ म्हारु में शोधी लीधुं;
पोतानुं पोते में जाण्युं, भाव दान निजने दीधुं. २
उच्चभाव अन्तरथी प्रगट्यो, आत्मभाव ज्यां त्यां प्रसर्यो;
भूलाणी सहु दुनियादारी, मोहभाव मनथी विसर्यो ३
जे जे अंशे निरुपाधिरव, ते ते अंशे धर्म थयो;
जे जे अंशे सुरता लागी, ते ते अंशे धर्म वर्यो. ४
जे जे अंशे शुद्ध समाधि, ते ते अंशे छे मुक्ति;
जे जे अंशे शुद्ध रमणता, आनन्दनी अंशे भुक्ति. ५
आत्मराग छे जे जे अंशे, पर प्रीति अंशे उतरी;
ज्ञानी ज्ञाने सर्वे समातुं, सुरता निजपद ठाम ठरी ६
हेय ज्ञेयने उपादेयथी, मोझीलो हुं मलकायो;
सहु ऋद्धि घट अन्तर भासी, समताभावे हुं आयो. ७
अलख देशनी अलख फकीरी, पामी परमानंद वर्यो;
बुद्धिसागर चिदानन्दमय, निश्चय निजपद ठाम ठर्यो. ८



अंधाधुंधीमां बहु राची, करे निजगुणनी झट हाणीरे, सत्य. ३
सत्यकृत्यनुं नाम न जाणे, मची रही स्वारथमां खालीरे.सत्य.
बुद्धिसागर सत्य धर्ममां, लयलीन थया अहो ज्ञानीरे. सत्य. ४

पत्र संदेशो.

हरिगीत छंद चाल.

आ शिष्य पामे पत्र प्रेमे सत्य वात जणाववा,
देही अमर करी चित्तमां वंछी स्वात्म सन्मुख आवमे;
नहि भडको तो प्रेम साचो प्रेम शुं पर द्रव्यमां,
छे आत्म साक्षी सर्वोपयोगे प्रेम छे निज द्रव्यमां. १
आ देहथी न्यारो रहे छे प्रेम धेलो थई अरे,
संयोग त्यां वियोग अंते ध्यान साचो मन धरे;
शुद्ध चेतन धर्म करवा वसवा दिल धारीए,
परमात्म साथे प्रेम जोडी विषय मोह विसारीए. २
सहु जगत् जीवने उच्च गणवा नीच गणवा नहि कदी,
वश ध्याने उच्च थाओ उदधिमां जेवी नदी;
सहु जीव साथे मित्रताने राखवी ज्यां त्यां अरे,
मात्सर्यना नाम्यो हृदयमां दोष मनना दूर करे. ३
दोषीना पण दोष देखो [illegible]
आनंद साचो मन्न [illegible] ने,
[illegible]
[illegible] ४

शुद्धचिद्घनक्षेत्र पामी शुद्ध प्रभुने पामीए.
ए अकल निर्भय आत्म धारी दोष सघळा वामीए;
छे चौद भुवने वस्तु जे जे शरीरमां ते ते अहो,
कदि बाह्य भावे भटकशो नहि आत्मभावे दृढ रहो. ५
सागर हृदयने स्वात्मविष्णु चेतना लक्ष्मी खरी,
योगियोए आत्मध्याने साधी क्रिया दृढ करी;
आत्मज्ञान विना नहि शिव बाह्य तपनां शुं दहो.
क्रिया कष्टनी मुक्ति नहि दे सार समजी मन वहो. ६
ओ मित्र म्हारा अन्तररूपी अकल देवे म्हालजे,
दृढ समजी बाह्य दुनिया, सत्य शिवपुर चालजे;
रंगाईने तूं आत्मभावे शुद्ध स्थिरता लावजे,
बुद्ध्यब्धि संगी मित्र मारा आत्मदेवे आवजे. ७

संसारनी अनित्यता.

हरिगीत छंद चाल.

संसारमां संयोग त्यां वियोग तो व्यापी रह्यो,
संसारना संबंधमां शुं जीव हरखाई रह्यो;
राजा अने वळी रंक सर्वे मृत्यु वाटे चालता.
विश्वास श्वास तणाय ना क्षण अन्य गति संचारता. १
केनी रहे धनमां मुंझे जडु तेना तनने,
धनवानों पालीता ओ धर्म करेने अनुभने;
अभिमानना बहु लोकना के कठोर मृत्यु नहीं दने.

अंधाधुधीमां बहु राची, फरे निजगुणनी झट हाणीरे, सत्य.
सत्यकृत्यनुं नाम न जाणे, मचो रही स्वारथमां खाळीरे.सत्य.
बुद्धिसागर सत्य धर्ममां, लयलीन थया अहो ज्ञानीरे सत्य.

पत्र संदेशो.

हरिगीत छंद चाल.

आ शिष्य पासे पत्र प्रेमे सत्य वात जणाववे,
पंढी असर करी चित्तमां वळी स्वात्म सन्मुख आववे;
नहि अज्ञनो तो प्रेम साचो प्रेम शुं पर द्रव्यमां,
छे आत्म साक्षी प्रभूपयोगे प्रेम छे निज द्रव्यमां. १

आ हेतथी राची रहे छे प्रेम घेलो थई अरे,
संयोग त्यां वियोग अंते न्याय साचो मन खरे;
उच्च चेतन धर्म करवा उच्चता दिल वारीए,
परमात्म साथे प्रेम जोडी विषय सर्व विसारीए. २

सहु जगत् जीवने उच्च गणवा नीच गणवा नहि कदी,
उच्च ध्याने उच्च थाशो उदधिमां जेवी नदी;
सहु जीव साथे मित्रताने राखवी ज्यां त्यां अरे,
माध्यस्थता राखो हृदयमां दोष सघळा दुर हरे. ३

दोषीना पण दोष टाळो निन्यदृष्टि टाळीने,
आनंद पामो सन्त देखी चित्त अन्तर वाळीने;
कारुण्यना गंगा नदीमां स्नान निशदीन कीजीए,
ते स्वात्मदृष्टिकाजी पामी हृदयथी गुण रीजीए ४

शुद्धचित्तमक्काक्षेत्र पामी खुदा प्रभुने पामीए,
ए अलख निर्भय आत्म धारी दोष सघळा वामीए;
छे चौद भुवने वस्तु जे जे शरीरमां ते ते अहो,
कदि बाह्य भावे भटकशो नहि आत्मभावे झट रहो. ५
सागर हृदयने स्वात्मविष्णु चेतना लक्ष्मी खरी,
योगियोए आत्मध्याने साची विद्या झट वरी;
आत्मज्ञान विना नहि शिव बाह्य दवमां शुं दहो.
क्रिया कपटनी मुक्ति नहि दे सार समजी मन वहो. ६
ओ मित्र म्हारा अलखरूपी अलख देशे म्हालजे,
जूठ समजी बाह्य दुनिया, सत्य शिवपुर चालजे।
रंगाईने तुं आत्मभावे शुद्ध स्थिरता लावजे,
बुद्ध्यब्धि संगी मित्र मारा आत्मदेशे आवजे. ७

संसारनी अनित्यता.

हरिगीत छंद चाल.

संसारमां संयोग त्यां वियोग तो व्यापी रह्यो,
संसारना संबधमां शुं जीव लल्चाई रह्यो;
राजा अने वळी रंक मर्से मृत्यु वाटे चालता.
विकराळ काम कराळ थई कई अन्य गति संभाळता. १
जेनी हाके धरणी धुजे शत्रु सेना थरहरे,
पलकमांही चालीया अं कर्या कर्मने अनुसरे;
अभिमानना बहु नोरमा जे म०ही मूछो मरडी फरे.

अंधाधुधीमां बहु राजी, करे निजगुणनी हाट हाणीरे, सत्य. ३
सत्यकृत्यनुं नाम न जाणे, मची रही स्वारथमां लालीरे. सत्य.
बुद्धिसागर सत्य धर्ममां, लयलीन थया अहो ज्ञानीरे सत्य. ४

पत्र संदेशो.

हरिगीत छंद चाल.

जा शिष्य पासे पत्र प्रेमे सत्य वात जणावजे,
ऊंडी असर करी चित्तमां वळी स्वात्म सन्मुख आवजे;
नहि अज्ञनो तो प्रेम साचो प्रेम शुं पर द्रव्यमां,
छे आत्म साक्षी प्रभूपयोगे प्रेम छे निज द्रव्यमां. १

आ हेतथी राची रहे छे प्रेम घेलो थई अरे,
संयोग त्यां वियोग अंते न्याय साचो मन खरे;
उच्च चेतन धर्म करवा उच्चता दिल धारीए,
परमात्म साथे प्रेम जोडी विषय सर्व विसारीए. २

सहु जगत् जीवने उच्च गणवा नीच गणवा नहि कदी,
उच्च ध्याने उच्च थाशो उदधिमां जेवी नदी;
सहु जीव साथे मित्रताने राखवी ज्यां त्यां अरे,
माध्यस्थता राखो हृदयमां दोष सघळा दूर करे. ३

दोषीना पण दोष टाळो निन्द्यदृष्टि टाळीने,
आनंद पामो सन्त देखी चित्त अन्तर वाळीने;
कारुण्यना गंगा नदीमां स्नान निशदीन कीजीए,
ने स्वात्मदृष्टिकाजी पापी हृदयथी गुण लीजीए. ४

शुद्धचित्तमक्काक्षेत्र पामी खुदा प्रभुने पामीए,
ए अलख निर्भय आत्म धारी दोष सघळा वामीए;
छे चौद भुवने वस्तु जे जे शरीरमां ते ते अहो,
फदि बाह्य भावे भटकशो नहि आत्मभावे इष्ट रहो. ५
सागर हृदयने स्वात्मविष्णु चेतना लक्ष्मी खरी,
योगियोए आत्मध्याने साची विद्या इष्ट वरी;
आत्मज्ञान विना नहि शिव बाह्य दवमां शुं दहो.
क्रिया कपटनी मुक्ति नहि दे सार समजी मन वहो. ६
ओ मित्र म्हारा अलखरूपी अलख देशे म्हालजे,
जूठ समजी बाह्य दुनिया, सत्य शिवपुर चालजे;
रंगाईने तुं आत्मभावे शुद्ध स्थिरता लावजे,
बुद्ध्यब्धि संगी मित्र मारा आत्मदेशे आवजे. ७

संसारनी अनित्यता.

हरिगीत छंद चाल.

संसारमां संयोग त्यां वियोग तो व्यापी रह्यो,
संसारना संबधमां शुं जीव छलचाई रह्यो;
राजा अने वळी रंक सर्वे मृत्यु वाटे चालता.
त्रिकाळ काम कराळ थई कई अन्य गति संभाळता. १
जेनी हाके धरणी धुजे शत्रु सेना थरहरे,
पलकमांही चालीया अरे कर्या कर्मने अनुसरे;
अभिमानना बहु तोरमां जे मरडी मूछो महीं फरे.

अंधाधुधीमां बहु राची, करे निजगुणनी हाण हाणीरे, सत्य. ३
सत्यकृत्यनुं नाम न जाणे, मची रही स्वारथमां खालीरे. सत्य.
बुद्धिसागर सत्य धर्ममां, लयलीन थया अहो ज्ञानीरे सत्य. ४

पत्र संदेशो.

हरिगीत छंद चाल.

जा शिष्य पासे पत्र प्रेमे सत्य वात जणावजे,
उंडी असर करी चित्तमां वेळी स्वात्म सन्मुख आवजे;
नहि अज्ञनो तो प्रेम साचो प्रेम शुं पर द्रव्यमां,
छे आत्म साक्षी प्रभुप्रयोगे प्रेम छे निज द्रव्यमां. १
शा हेतथी राची रहे छे प्रेम घेलो थई अरे,
संयोग त्यां वियोग अंते न्याय साचो मन खरे;
उच्च चेतन धर्म करवा उच्चता दिल धारीए,
परमात्म साथे प्रेम जोडी विषय सर्व विसारीए २
सहु जगत् जीवने उच्च गणवा नीच गणवा नहि कदी,
उच्च ध्याने उच्च थाशो उदधिमां जेवी नदी;
सहु जीव साथे मित्रताने राखवी ज्यां त्यां अरे,
माध्यस्थता राखो हृदयमां दोष मनना दूर हरे. ३
दोषीना पण दोष टाळो निश्चयदृष्टि ढळीने,
आनंद पामो सन्त देखी चित्त अन्तर वाळीने;
कारुण्यता गंगा नदीमां स्नान नित्यहीन कीजीए,
ते स्वात्मदृष्टिकाशी पामी हृदयथी गत रंजीए ४



आयु खूटे पळ पळ विषे ते जोत जोतामां मेर. २
व्यापारमां मशगुल व्यापारीज अंते चालीया,
महीनाथ मोटा जगत चावा दातीया के चालीया;
जे युद्ध वीरो अस्त्र शस्त्रे दाट दुश्मन वाळता,
अमर रह्या नहि जगतमां ते जेओ तनु पंपाळता. ३
कई मित्र चाल्या पुत्र चाल्या कैंक वळी हजी चालशे,
अध्यात्मव्यक्ति साची समजी ज्ञानी धर्म निहाळशे;
तुं चेत प्राणी चेत प्राणी समय सारो आ मळ्यो,
जूठा जगत्मां म्हालवाथी जन्म फेरो नहि टळ्यो. ४
शुभ समय पामी समय पामी चेत चेतन ज्ञानथी,
आनंदमय तुं अलख योगी शोधी ले शुद्ध ध्यानथी;
तुं भस्म करजे ज्ञानथी सहु कर्मने झट वारमां,
झट साध्य सिद्धि साची छे जीव मनुजना अवतारमां. ५
व्यामोह वशमां म्हालवुं शुं, अंतमांतो दुःख रवुं;
खसतुं खणवुं दुःख माटे, ज्ञानीयोए बहु कह्युं.
छे स्वप्न भोजन तृप्ति खोटी, बाह्यमुख तेवुं अहो;
वधि याह्य सुखनी आश तजीने, आत्मसुख राची रहो. ६
अध्यात्म ऋद्धिसिद्धि साची. अवर सहु जंजाळ छे;
टाळो हृदयथी मोहभ्रांति, नेत्र वृद्ध विशाळछे;
निज आत्मरूपमां म्हालवुं छे, शुद्ध ध्याने सहजमां;
आ आत्मा परमात्मा छे, मस्त थाशे समजमां. ७
तुं अटल देशे चाल योगी, थाय मपनः परिहरो,
छे धाम तुं सत्सुखनुं शुभ, जैनवाणी मनधरो;
अध्यात्मज्ञाति प्राप्त करवी सत्यश्रद्धा मन धरो,
समजी सदा शुभ बुद्धिसागर परमप्रभुना पद वरो. ८

१५३

जगतनुं भलुं इच्छवुं.

हरिगीत छंद चाल.

आ जगत् सघळुं मित्र मान्युं कुंडुंब मारु खरेखरु,
करुं न हिंसा कोईनी हुं भावना ए चित्त धरु;
क्षण रागीने क्षण द्वेषी एवी वृत्तिने झट परिहरु,
माध्यस्थदृष्टि हृदय धारी सर्वनुं सारु करु.
आ म्हारु ने आ त्हारु एवी मोह वृत्ति परिहरी,
आत्मभावे धर्म जाणी सत्यता दिलमां धरी;
जगत जननुं भव्य करवुं सत्य धर्म बतावीने,
जगत जननुं भव्य करवुं चित्त करुणा लावीने.
सहु आत्म सरखा जगत जीवो कीडीथी कुंजर लगी, २
कोईने संतापुं नहि ए भव्य रटना दिल लगी;
देशी के विदेशीनो नहि भेद मनमां आववो,
सर्व जीवनुं भव्य करवुं प्रेम सत्य बतावतो.
ज्ञाति जाति भेद नहि मन जीव सघळा उच्च छे, ३
जीवने जे उच्च जाणे कदी नहि ते नीच छे;
जगत जनने धर्मी करु हुं भावना दिलमां वसी,
द्वेषवृत्ति दूर नाठी धर्म वृत्ति धसमसी.
धर्मनां हुं कृत्य करतो दुःख कोणज आपशे, ४
पापनां हुं कृत्य करु तो स्वर्गमां कोण थापशे;
धर्म करतां सुख थाशे न्याय मागे हुं शुं.
पाप करतां दुःख थाशे अन्यने नहि करगरु.
आत्मबळ विश्वास लावी धर्म पन्थे संचरु, ५

राग द्वेष जय करीने मोहजलधि झट तरु;
जागजो नरनारीओ झट मोक्ष पन्थे चालशो,
बुद्धिसागर सहजयोगे अखंडानंद म्हालशो. १

सिद्धांतबोध.

हरिगीत छंद चाल.

जाग चेतन जाग चेतन मोह निद्रा परिहरी,
कोण शुं छे क्यांथी आव्यो ज्ञान तेनुं कर खरी;
आ जगत शुं छे कर्म शुं छे रूप तेहनुं शुं खरे,
आदेयने शुं हेय जगमां अमर शुं ने शुं मरे. १
क्यारनुं आ जगत छे ने तत्त्व केवां शां रह्यां,
तत्त्व लक्षण सत्य शुं छे जगतमां कोने कह्यां;
आत्मा ने कर्मनो संबंध केवो जाणीए,
पहेलुं कर्म के जीव तेवो नहि पूरो माणीए. २
ईश्वर कर्ता छे के नहि ते युक्तियोग विचारीए,
सर्व जीवनो आत्मा एक छे नहीं ते धारीए;
सर्वव्यापी आत्मा के देहव्यापी छे खरो.
आत्मानुं चिन्ह कयुं शके तेनो मन करो ३
कर्म मात्र [illegible] तेनो स्वरूप [illegible],
[illegible]
[illegible]
[illegible] ४



ज्ञान दर्शन चरण लक्षण आत्मानुं छे खरु,
एकेन्द्रियी सिद्ध पर्यंत जीवव्यापी अनुसरु;
शुभाशुभ जे कर्म तेनो न्याय कर्मज आपतुं,
अपेक्षाए जीव ईश्वर न्याय मनमां लाव तुं. ११

धर्म करतां कोटी भवनुं पाप आतम टाळतो,
ध्यान अग्नि योगथी जीव कर्म ईन्धन बाळतो;
आत्म शक्ति प्रगटवाथी कर्म मर्म हणाय छे,
निज स्वभावे रमण करतां आतमा शिव पाय छे. १२

आत्मभावे रमण करतां उगरवुं छे आपथी,
कर्ममांहि रमण करतां उगरवुं शुं पापथी;
आत्मना सामर्थ्यथी तो सर्व शक्ति प्रगटती,
आत्मना विश्वास योगे मूर्खता दूरे थती. १३

मृत्यु पाछळ साथ आवे कर्म मनमां जाणशो,
कर्मने वळी धर्म साथे सत्य मनमां आणशो;
दुःखकारक कर्म जाणी धर्मवृत्ति आदरो,
धर्म त्यागी मोहमां अरे केम भूली जन फरो. १४

ज्ञानिगुरुनो संग करीने ज्ञान चेतननुं करो,
जे शुद्ध आत्मस्वभाव ते तो धर्म साचो अनुसरो;
खरे शुद्ध आत्मस्वभावमांहि रमणथी मुक्ति थाय छे,
धर्मना व्यवहार भेदो हेतु रूप गणाय छे. १५

सन्त करणी धर्मनी छे भक्ति मुक्ति हेतु छे.
दोष अष्टादश रहित जिन ईश ए सकेत छे;
आतमाने सिद्ध तेमां भेद कर्मनो जाणवो,
कर्म जातां आतमा ते सिद्धरूप पिछाणवो. १६

कर्मयोगे आतमानी सिद्धता तिरो रही,
अंश अंशे कर्म टळतां सिद्धता आविर् कही.
सिद्धव्यक्ति प्रगट करवा धर्म उद्यम आदरो,
बुद्धिसागर तत्त्वज्ञाने परम महोदय पद वरो.

संसारमां सुधरो.

हरिगीत छंद चाल.

संसारमां सुधरो अरे जन धर्मकरणी साचवी,
धर्मविण नहि उन्नति जग शिख साची मानवी;
मावापनी भक्ति करो बहु दारु ताडी परिहरो,
केफी वस्तु परिहरो झट उन्नति वेगे करो.

छेलछबीला बणीठणीने वित्त व्यय नाहक करो,
खर्च खोटां शुं वधारो सत्य नीति अनुसरो;
सहेलाइमांहि छाकी जइने अवनति पायो रचो,
धर्मनी जो दाझ होय तो धर्म उद्यममां मचो.

भाषा भणीने फुलता शुं दीर्घदृष्टि वापरो,
परोपकारी शिष्ट थाओ धन्य रत्नो ए खरे:
देशनी जो दाझ होय तो देशीओने पाळजो,
दोषनी जो दाझ होय तो दुर्गुणोने बाळजो.

न्यायथी धन मेळवीने न्यायथी वापरो नरे,
करणी जेवी रहेणी राखो सुज्जनना वचन अरे:

आ जगत्मांहि जन्मी जेणे जीवन एळे गाळीयुं,
जननी भारे मारी फोगट दुःख न लेशज टाळीयुं. ४

जनक जननी मित्र बंधु बेन शत्रु समा गणो.
उच्च जीवन नित्य करवा शास्त्र साचां जन भणो;
धर्मना रीवाज जूना मर्म तेनुं आ जाणवुं,
गहन ग्रन्थो पूर्व मुनिना, ज्ञान पामो अभिनवुं. ५

माध्यस्थदृष्टि धारी भव्यो दोष सघळा वारीए,
पुनर्जन्मना हेतु समजी सत्य श्रद्धा धारीए;
धर्म साचो कदी न काचो धर्ममां राची रहो,
बुद्धिसागर धर्म करतां चिदानंद पदने लहो. ६

शुद्धस्वरूपप्राप्तव्य छे.

हरिगीत छंद चाल.

आत्मशक्तिप्राप्त करवा धर्म उद्यम आदरु,
आत्मना सामर्थ्यथी आनंदनी लीला करु;
आतमा परमातमाकर थाय ते निश्चय धरु,
दुःख मांहि धैर्य धरतुं सत्य शाश्वत सुखकरु. १

शुद्ध करी आतमा हुं प्रभुमां वासी रहुं,
शुभाशुभ संयोगमां नहि हर्ष के शोकज लहुं;
निंदा के वंदनाथी जरा न क्षुब्ध कांइ थावुं.
ज्ञान दर्शन धर्म मार्गे अन्यथा नहि धारवुं २

सत्य वस्तु जेह छे ते स्वरूपमां ल्यावुं रहुं.

अलख अरूपी हंस हुंहुं अनुभवे वाणी कहुं,
सुख के नहि दुःखकारी मित्र शत्रु अनुभवुं,
ज्ञाने माठं करु हुं ममता वाणी शीद खोटी लवुं. ३

जगत सारु तेथी शुं मुज खोटुं तेथी शुं गयुं,
अध्यात्मभावे रमण करतां नित्य निर्मल सुख लयुं;
सत्य वाणी जिन प्रभुनी अनुभवीने अनुभवी,
सापेक्ष वस्तु जाणवाथी धर्म पामे जन भवी. ४

अनंतभवमां भ्रमण करतां चित्त ठाम न आवीयुं,
आत्मज्ञाने गुरु कृपाथी चित्त शिव पद भावियुं;
रमण करवुं रमण करवुं ध्यानथी निश्चय कहुं,
बुद्धिसागर सत्त निश्चय लावी मंगलपद लहुं. ५

प्रातः स्मरणीय हितशिक्षा.

हरिगीत छंद चाल.

विश्वासघाती त्रण पापी नरकमांहि अवतरे,
परनी निंदा जे करे ते पापनी पोठी भरे;
आळ परने जे चढावे आळ पामे ते खरो,
परनुं भूंडुं वाछतो जन पामतो दुःखनो धरो. १

परनुं सारु देखीने जे टोळमां दाझी बळे,
दोषी एवा दुःख पामे दुःखी थइने मळवळे;
स्वार्थ साधक जे बनीने स्वपरमां गाजी गरे,
कपटी काळा नाग जेवो दुःख अने बहु न्हे. २

जे जूठ बोले स्वार्थमाटे प्राणी हिंसा बहु करे,
मृत्यु अंते माणिया ते नरकमांहि अवतरे;
सद्गुरुने निंदवाथी नाश कूळनो थाय छे,
मातापनी निंदा करे ते नीच गतिमां जाय छे. ३

क्रोध अतिशय जे करे ते सर्व काळे बहु फरे,
लोभ अतिशय जे करे ते सर्व पापो आदरे;
काम अतिशय जेहने ते देखतो पण अंध छे,
सप्त व्यसनो सेववाथी द्वार स्वर्गनां बंध छे. ४

उचित अवसर जे न जाणे मूढ जगमां गाजवो,
धर्मने धिक्कारतो ते मूर्खजन जग मानवो;
मित्र पण जे दुष्ट मनमां शत्रुथी भूंडो अरे,
शत्रुनो विश्वास राखे मनुष्य ते अंते मरे. ५
मूर्ख आगळ मननी वातो जे करे ते मूढ छे,
कपटीनो आचार भारी चिन्ह पूर्ण गूढ छे;
विना विचारे बोलवाथी शोक बहु करवो पडे,
बुद्धिसागर समजु समजो सत्य समजुने जडे. ६

हितशिक्षारत्न.

हरिगीत छंद पाठ.

ज्ञानियोनी संग करतां ज्ञान दिलमां प्रगटतुं,
सन्तजननी संग करतां पाप सघळुं दूर जतुं;
पंडितोनी संग करतां [illegible] वधे,
दुष्टजननी संग करतां मन्द [illegible] मन वहे. १

धर्म ग्रन्थो वांचवाथी धर्म श्रद्धा उपजे,
गुरुनी भक्ति जे करे ते उच्च जगमां नीपजे;
सर्वनुं सारु करे ते श्रेष्ट जगमां थाय छे;
सत्य पन्थे चालवाथी देवतानी स्हाय छे. २

कोईनो सद्गुण कथाथी झेर कदीय न थाय छे,
सर्व जननुं सारु बोले मित्र सत्य गणाय छे;
कोईने पीडे नहि ते धर्म मूर्ति जग तरे.
माध्यस्थदृष्टि जे धरे ते सत्ययुक्ति अनुसरे. ३

विनय वैरी वश करे छे विनय उत्तम आदरो,
आत्मश्रद्धा हृदय धारी दोष सघळा परिहरो;
उच्च थाशो नक्की जगमां उच्च जन सेवा करे.
गुरु वचनने लोपशो नहि सत्य शिक्षा छे खरे. ४

शुद्ध चेतन रूप समजी धर्म करणी कीजीए,
आत्मध्याने अनुभवामृत नेन प्याला पीजीए;
जागशो नरनारीओ झट पाप हवे परिहरी.
बुद्धिसागर हृदय शुद्धि आत्मश्रद्धा सुखकरी. ५

उच्चबोध.

हरिगीतछंदमान

उच्चदृष्टिथीज माटे उच्चजनपद आदरे.
नीचदृष्टिथीज माटे नीच जनपद संचरे;
विवेकदृष्टिनम्रताविकर सर्वोदित मिथ्या हरे,

मिथ्या जनित मन तिमिर भ्रान्ति क्षणिक स्थिरता थुं करे.१
आत्मभावनदीप्तिवृद्धिदर्पस्वादितयतिपति.
अध्यात्मयोगिकमार्ग बोधे ज्ञानयोगे जिनपति;
कर्णसंपुट गिर् सुधारस हृदय पंकज उतरे,
स्याद्वादशासन पापनाशन भव्यजनमनमां धरे. २

लक्ष्यवृत्ति लक्ष्यमां तो साधथी भिन्न अहो,
अशुभवृत्ति क्षेत्र टाळी शुद्धमां राजी रहो;
सर्वतः निस्संग थइने संग चिद्घन साधीए,
परमात्मव्यक्तिदिव्यप्राप्ति योगथी झट साधीए. ३

सप्त चेतन द्रव्य लक्षण सप्त नयथी धारीए,
शुद्ध निर्मल स्फटिकवत् छे नित्य चेतन धारीए;
परमज्योति परमशांति तत्त्वमसि निश्चय कर्यो,
बुद्धिसागर परम मंगल लाभ निश्चय मन धर्यो. ४

अन्तरमां सुरताप्रवेशना उद्गार.

मन मोर्युं जंगल केरी हरणीने--ए राग.

मारी सुरता अन्तरमांहि लागीरे, हुं तो थइयो अन्तरगुण रागीरे;मारी.
दुनियादारी दूर निवारी, हुंतो बनीयो अन्तर वैरागीरे. मारी. १
नर के नारी नहि नपुंसक. मान भूल्यो रागी के हुं त्यागीरे.मारी.२
दुनिया दरशन दूर निवार्युं. मोह वैरी कुमति दूर भागीरे.मारी. ३
अलख अरूपी अजरामर हुं, शुद्ध चेतना घटमां जागीरे मारी. ४

द्घन चेतन परम महोदय, हुं तो आनंदमय वडभागीरे. मारी. ५
ान दशामां हुं तुं नाठुं, झल झळहळ ज्योति त्यां जागीरे. मारी. ६
य दुःख अन्तरमां नुखडां, एवी स्फुरणा मोरली झट वागीरे. मारी. ७
द्धिसागर आनंदघन प्रभु, एकरूपे मळीने सुहागीरे. मारी. ८

योगी.

श्रीराग.

मन मोह्या जंगल केरी हरणीने—ए राग.

ोगी थइने अलख हुं जगावुंरे, सोऽहंसोऽहं परमप्रभु ध्यावुंरे. जोगी.
दासीनता कंथा पहेरुं, वैराग्यनी भभूति चोळावुंरे. जोगी. १
याभावनी चाखडीओ धरुं, शीलव्रतनो लंगोट लगाउंरे. जोगी. २
र्वत्यागरूप शिर्ष मुंडावुं. प्रभु धारणा खप्पर धराउंरे. जोगी. ३
ध्यान दंडने मेघे धारुं, पवन पावडी उपयोग लावुंरे. जोगी. ४
अन्तर आत्मप्रदेशे विचरु, दया नगरमां म..ने सुहाउंरे. जोगी. ५
अस्ति नास्तिमय परब्रह्ममां, ध्याट आगुं हुं समाउंरे. जोगी. ६
अनुभव अहर भिक्षा मागुं. हुं मो पूर्ण. मंदरनी जगाडुंरे.जोगी ७
अन्तर आनंद परमानन्दनी, अंतर भावना भाग पुरावुं जोगी. ८
मन ध्यानामां मनीने पीनां. टेनुं उन्मनी आवे सुख पाउंरे.जोगी. ९
बुद्धिसागर योग महोदय, पामी निश्चय निर्भय थाउंरे. जोगी. १०

चेतन हंसीनो चेतन हंसने उपालंभ.

हरिगीत छंद चाल.

ओ हंस मान सरोवरे तुं, हंसली साथे रमे,
मोति चारो तुं चरे छे, अन्यत्र मस्यज नाहि गमे;
शुभ श्वेतवर्णे श्वेतचरणे, शोभतो जगमां अरे,
त्यागी कूळवट टेक त्हारी, काक संगति शुं करे. १

तुं स्वच्छ दिलथी दूध जेवो, योगियोना मन गमे,
त्यागी कूळवट मोदथी अरे, काग संगे क्यां भमे;
दुग्ध जल संयोगनो वियोग चंचुथी करे,
चतुराइ चावी जगतमां बहु, लाज मूकी शुं करे. २

पद्मिनीनी गतिने जोती, नाथ चाखुं बहुं कर्युं,
ओ हंस कूळवट मूकवामां चित्त शाथी तव कर्युं;
तुं हंसी साथे हेत हरदम मान सरवर झीलवो,
सूक्ष्म कमळी तंतुओने चाह गतिथी पीलवो. ३

उम कूल मस्यान प्यारा विनति आ उरमां धरो,
फेर तंतु चांचीया शुभ केम शाथी विचरो;
नीत राजा चेतनाश्री उपालंभ ए आपीयो.
बुद्धिसागर आत्मभावे समजनां सुख व्यापियां. ४

१६५

जोया बाद सार नथी.

हरिगीत छंद चाल.

नव लग्न लीलामां मनुं शुं कामी जन राची रहे
सुख जीवननी दोरी कली स्मरण करी मन ते लहे,
डुंगरा रलीआमनीया तो दूरथकी लाग्या सही,
परणीने जोयुं पछी तो सार तेनां कंइ नहीं. १

मरु महीमां हरिण दोडे तरस लागी बहु अरे.
झांझवानां जल निहाळी दोडी दोडी बहु फरे;
जाय पासे तो मळे नहीं दूर जल जाये वही,
परणीने जोयुं पछी तो सार तेनां कंइ नहीं. २

स्वन लाडु जमण जमवां सुख मानी नहि जरी,
जगतूनी जंजाळ मोटी खोटी जोतां त ठरी;
पुष्प आ गुलाबनुं करमाइ जातुं ते सहि.
परणीने जोयुं पछी तो सार तेनां कंइ नहीं. ३

मीन मोहुं मत्स्य माटे मोहथी विंधाय छे.
कमळनी सुवास माटे भ्रमर दुःख लपटाय छे.
सारु लाग्युं चपरथी अरे सुंदरता मननां लही,
परणीने जोयुं पछी तो सार तेनां कंइ नहीं. ४

अनुभवी ए अनुभव्युं ए सर्व विषयो संग्रही.
सुख पाछळ दुःख ने तो सुख जगमां छे नहीं.
बुद्धिसागर मभुपदेशे धर्म साधो गहगही.
परणीने जोयुं पछी तो सार तेनां कंइ नहीं. ५

क्षमापना.

हरिगीत छंद चाल.

खमुं खमावुं सर्वने हुं, वैर सघळां परिहरी;
जगत जीवो मित्र म्हारा, भावना मनमां धरी;
अज्ञानने वळी द्वेषथी कोइ जीवने मार्या अरे,
खमुं खमावुं जीव राशि साम्य भावे जग खरे. १

क्रोधना आवेशमांहि निंद्य वचनो जे कह्यां,
क्रोधना आवेशमांहि चित्त परनां जे दह्यां;
क्रोधना आवेशमांहि जे कर्युं ते नहि खरुं,
खमुं खमावुं जीवराशि साम्यता मनमां धरुं. २

चतुरशिति लक्षयोनि जीव म्हारा मित्र छे,
सिद्धसम सत्ता थकी ते ज्ञानभाव विचित्र छे;
द्वेषी नहि कोइ जगत्मां मम द्वेषवृत्ति नहि खरी,
खमुं खमावुं जीवराशि मित्रता मनमां धरी. ३

सुख दुःख जे सांपडे ते पुण्य पापे अनुभव्युं.
जगत जीवो निमित्त मात्रज अनुभवीने अनुभव्युं;
अशुभ कर्ता को नहि मुज वैरी नाहि कोइ जाणीयुं,
खमुं खमावुं जीवराशि ज्ञान निर्मळ आणीयुं ४

त्रियोगथी अपराध कीधा जगत् जीवोना प्रति,
माफ मागुं तेनी आजे चित्त लावी शुभमतिः
लेख लखीने छापीयाने जीव बहु में दुहव्या,
खमुं खमावुं सर्वने हुं मित्र जीवो अनुभव्या ५

सकळ संघने बहु खमावुं, वैरभाव विसारजो,

भव्य आराधक खमे ते तत्त्व मनमां धारजो;
महावीर प्रभुनीवचनशैलीपियुष दिलमां धारशो,
क्षमापनाशुभबुद्धिसागर वांची धर्म वधारशो. ६

श्री यशोविजय वाचककृत.

अथ श्री सीमंधरजिन निश्चय व्यवहारगर्भित विनतिरुप स्तवन.

श्री सीमंधर साहिब आगे वीनतीरे,
मन धरी निर्मळ भाव; कीजेरे (२)
लीजे ल्हावो भवतणो रे १

बहु सुख खाणी तुज वाणी परीणमे रे,
जेह एक नय पख; भूल्यारे (२)
ते प्राणी भव रडवडे रे. २

में मति मोहें एकज निश्चय नय आदर्यो रे,
के एक जे व्यवहार; भेळारे (२)
तुज करुणाएं ओळख्यारे. ३

शिबिका वाहक पुरुष तणीपरे ते कह्यारे,
निश्चयने व्यवहार; मिळियारे (२)
उपकारी नवि जुजुआरे. ४

बहुळां पण रत्न कयां जे एकल्यां रे,
ते माला न कहाय; माळारे (२)
एक सूत्र जे सांकल्यां रे, ५

तिम एकाकी नय सघळा मिथ्या मतिरे,
मिळियां समकित रुप, कहीयेरे (२)
लहीए संमति सम्मतिरे. ६

दोय पंख विण पंखी जिम नवि चली शकेरे,
जिम रथविण दोय चक्र; न चलेरे (२)
तिम शासन नय बिहु विनारे. ७

शुद्ध अशुद्ध पणुं सरखुं छे बेहुनेरे,
निज निज विषे शुद्ध; जाणोरे (२)
पर विषे अविशुद्धतारे. ८

निश्चय नय परिणाम प्रणामे छे वडोरे,
तेवो नहीं व्यवहार; भाखेरे (२)
कोइक इंम ते नवि घटेरे. ९

जेकारण निश्चय नय कारण अछेरे,
कारण छे व्यवहार; साचोरे (२)
कारज साचो ते सहीरे. १०

निश्चय नय मति गुरु शिष्यादिक को नहींरे,
करे न भुंजे कोय; तेथीरे (२)
उन्मारग ते उपदिशेरे. ११

नय व्यवहारे गुरु शिष्यादिक संभवेरे,
तिणे साचो उपदेश; भाख्योरे (२)
भाष्य सुत्र व्यवहारमांरे. १२



ढाळ बीजी.

कोइक विधि जोतां थकांरे, छांडे सवि व्यवहाररे; मन वशीयाः
न लहे तुज वचने कयुंरे, द्रव्यादिक अनुसाररे; गुण रसीया.

पाठ गीत नृत्यनी कळारे, जिम होय प्रथम अशुद्धरे; मन०
पण अभ्यासे ते खरीरे, तेम क्रिया अविरुद्धरे. गुण०

मणी शोधक शत खारनारे, जिम पुट सकल प्रमाणरे; मन०
सर्व क्रिया तिम योगनेरे, पंचवस्तु अहिनाणरे. गुण०

प्रीति भक्ति योगे करीरे, इच्छादिक व्यवहाररे; मन०
हीणो पण थिर हेतु छेरे, जेहने गुरु आधाररे. गुण०

विष गरल अनुष्ठान छेरे, हेतु अमृत जिम पंचरेः मन०
किरिया तिहां विष गर कहीरे, इह परलोक प्रपंचरे. गुण०

अनुष्ठान हृदय विनारे, समूर्च्छिम परे होयरे; मन०
हेतु क्रिया विधि रागथीरे, गुण विनयीने जोयरे. गुण०

अमृत क्रियामां जाणीयेरे, दोष नहीं लवलेशरे; मन०
त्रिक त्यजवां दोष सेववांरे. योगबिंदु उपदेशरे. गुण०

किरिया भाकिए छेदीयेरे, अविधि दोष अनुबंधरे; मन०
तिणे शिवकारण ते कह्योरे, धर्मसंग्रहणी प्रबंधरे. गुण०

निश्चयफळ केवळ लगेरे, नवि त्यजीये व्यवहाररेः मन०
चक्री भोग पाम्या विनारे. जिम निज भोजन साररे. गुण०

पुन्य अग्नि पातिक दहेरे. ज्ञान सहज ओल्हायरेः मन०
पुन्य हेतु व्यवहार छेरे, तिणे निरवाण उपायरे. गुण० २

भव्य एक आवर्त्तमांरे, क्रियावादि सुप्रसिद्धरेः मन०
होवे तिम बीजो नहींरे, दशाचूर्णी सुप्रसिद्धरे. गुण० ३

इम जाणीने मन धरेरे, तुज शासननो रागरे; मन०
निश्चय परिणती मुनि रहेरे, व्यवहारे वढ लागरे. गुण०

ढाळ ३ जी

समकित पखज कोइक आदरे, किरिया मंद अणजाण;
श्रेणिक प्रमुख चरित्र आगळ करे, नवि माने गुरु आण.
अंतरजामीरे तुं जाणे सवे.

ते कहे श्रेणीक नवि नाणी हुओ, नवि चारित्र प्रधान;
समकीत गुणथीरे जिनपद पामशे, तेहिज सिद्धि निदान. अं०

ते नवि जाणेरे किरिया तप विना, समकित गुण पण तास;
नरकतणी गति नवि छेदी शके, एह आवश्यके भाष्य. अं०

उज्वळ ताणेरे वाणे मेलडे, सोहे पट न विशाळ;
तिम नवि सोहेरे समकित अविरते, बोले उपदेश माळ. अं०

विरति विघन पण समकित गुण भर्यो, छेदे पल्लिप पुहुत;
आणंदादिक व्रत धरता कह्यो. समकित साथेरे सूत्र. अं०

श्रेणिक सरिखारे अविरति थोडला, जेह निकाचित कर्म;
ताणी आणेरे समकित विरतिने, ए जिन शासन मर्म. अं०

व्रत प्रतिबंधरे विण छत्र समपा, व्रतव्रतनी नहीं आप;
घण कीधां पण लागे अविरतें, सहजे सघळांरे पाप अं०

एवुं जाणीरे व्रत आदर करे, घनने समकितवंत;
पंडीत मीछेरे थोडे जीव मणे, नावे बोल्ले अनंत अं०

अंधा आगेरे दरपण दाखवो, बहिरा आगेरे गीत;

मूरख आगेरे परमारथ कथा, त्रण्ये एकज रीत. अं० ९
एवुं जाणीरे हुं तुम वीनवुं, किरिया समकित जोडि;
दीजे कीजेरे करुणा अति घणी, मोह सुभट मद मोड. अं० १०

दाळ ४ थी.

ईणि पेरे में प्रभु वीनव्यो, सीमंधर भगवंतोरे;
जाणुं हुं ध्याने, प्रगट हुं तो, केवल कमळा कंतोरे;
जयो जयो जगगुरु जगधणी. १
तुं प्रभु हुं तुज सेवको, ए व्यवहार विवेकोरे;
निश्चय नय नहीं अंतरुं, शुद्ध निरंजन एकोरे. जयो० २
जिम जल सकलनदीतणो, जलनिधि जल होय भेळोरे;
ब्रह्म अखंड सखंडनो, तिम ध्याने एक मेळोरे. जयो० ३
तुज आराधन जिणे कर्युं, तसु साधन कुण लेखेरे;
दूर देशान्तर कोण भमे, जे घर सुरमणि देखेरे. जयो० ४
अगम अगोचर कथा, पार कुंणे न लहीएरे;
तिणें तुज शासन इम कहे, बहु श्रुत वयणडे रहीएरे. जयो० ५
तुं मुज एक हृदय वश्यो, तुंहीज पर उपकारीरे.
भरत भविक हित अवसरे, प्रभु मत मुंको विसारीरे. जयो० ६

॥ कळश ॥

ईय विमल केवल ज्ञान दिणयर, सकल गुण रयणायरु;
अकलंक अमल निरीह निरमम, वीनव्यो सिमंधरु.
श्री विजयप्रभ सूरी राजे, विकट संकट भय हरो;
श्री नय विजय बुध चरण सेवक, जश विजय बुध जय करो. ?



अथ श्री आनंदघनजी महाराजनी कृत योग पद

ता योगे चित लाउं, वाला ता योगे चित लाउं (ए टेक)
समकित दोरी शलि लंगोटी, गुण गणि गांठ लगाउं;
तत्त्व गुफामें दीपक जोउं, चेतनराय जगाउं. वाला. १
अष्ट कर्म कंदेकी धूनी, ध्यानसें अंग जलाउं;
उपशम भस्म भस्म छाणके, मिल मिल अंग लगाउं. वाला. २
आद्य गुरुका चेला होय के, मोहसें कान फराउं;
धर्म शुक्ल दोय मुद्रा सोहिए, करुणा नाद बजाउं. वाला. ३
अयेसे योग सिंहासन बेसी, मुक्तिपुरिमां जाउं;
आनंदघन अविनाशि आतम, फेर कलिमें न आउं. वाला. ४



श्री यशोविजय वाचककृत.

॥ श्री पञ्चपरमेष्ठि गीता ॥

प्रणमीइं प्रेमस्युं विश्वत्राता, समरीइं सारदा सुकविमाता;
पंच परमेष्ठि गुण थुणण कीजे, पुण्य भंडार सुपरिं भरीजे. ॥१॥

ढाल.

अरिहंत पुण्यना आगर गुण सागर विख्यात,
सुरथकी चवि उपजे चउद सुपन लहे मात;
ज्ञान त्रणें जू अलंकरिया सूरज किरणे जेम,
जनमे तव जनपद हुई सकल सुभिक्ष बहु प्रेम. ॥२॥

दुहा.

दस दिसा तव होई प्रगट उद्योति, नरकमांहि पणि होई खिण उद्योति.
वाय वाई सुरभि सीत मंद, भूमि पणि मानु पामे आनंद. ॥३॥

ढाल.

दिसि कुमरी करे ओच्छव आसन कंपे इंद,
रण झणे घंट विमाननी आवे मिलि सुरवृंद;
पंचरूप करि हरि सुरगिरि शिखरें लेई जाई.
न्हवरावई प्रभु भगतिं खीर समुद्र जल ल्याई. ॥ ४ ॥

दुहा.

स्नात्र करतां जगत् गुरु शरीरे, सकल देवें विमल कलसनीरे;
आपणा कर्ममल दूरि कीधा, तेण ते विबुध ग्रन्थई प्रसिद्धा. ॥५॥

ढाल.

न्हवरावी प्रभु मेल्हीं. जननी पासे देव:
अमृत ठवि रे अंगुठडे, पान दिये ए टेव.

हंस क्रौंच सारस थई, कानई करई तस नाद;
बाल्क थई भेला रमे, पूरे बाल्य सवाद. ॥ ६ ॥

दुहा.

बाल्यपणा अतिक्रमे तरुणभावे, उचितथिति भोग संपत्ति पावे;
दृष्टि कांताई जो शुद्ध जोवे, भोग पण निर्जरा हेतु होवे. ॥७॥

ढालि.

वरणी तरुणी मन हरणी घरणीने सोभाग,
शोभा गर्व अभाव घर रहेता वयराग;
भोग साधन जब छंडे मंद अनरथुं प्रीति,
तब व्यवहार विराजे वयरागी प्रभुनीति. ॥ ८ ॥

दुहा.

देव लोकांतिका समय आवई, कहै प्रभु स्वामी तीरथ प्रभावो;
इम तप जप करी कर्म गाले, केवली होइ निज गुण संभाले. ॥९

ढालि.

चउवीस अतिशय राजता गाजता गुण पांत्रीस,
वाणी गुण मणी खाणी प्रातिहार्य अडदंस;
मुक्तातिशय जे चयार ते सार भुवन उपगार,
कारण दुःख सब वारण सब तारण भरतार. ॥ १० ॥

दुहा.

देव मनुज तिरिय सव संत [illegible] वंदतो नहीं मंच (?)
भाव धरि मूर्ति ने [illegible], [illegible] पाय प्रणमित स-
मस्त (?) ॥११॥

ढालि

[illegible] भवभवि प्रभुसेवो, भावनमंडन अवतार.

चर्म चक्षु गोचर नहीं जे आहार नीहार; (४)
अतिशय एहज सहजना च्यार धरे जिनराय,
हवे कहइं इग्यार जे होइ गए घनघाय. ॥ १२ ॥

दुहा.

क्षेत्र एक योजनमें उच्छांहि, देवनर तिरिय बहु कोडि मांहीं; १
योजन गामिणी वाणी भाखे, नर तिरिय सुर सुणे नित्य उल्हासें. २ ॥ १३ ॥

चालि.

योजन शत एकमांहि जिहां जिनवर विहरंत,
इति मारि दुरभिक्ष विरोध विराधि नहुंत;
स्वपरभक्र अविद्युष्टि अद्युष्टि भयादिक जेह,
ते सवि दूरि पलाये जिम दव वरसत मेह ॥ १४ ॥

दुहा.

तरणि मंडल परे तेज ताजे, पूंठि भामंडल विपुल राजे। (११)
सुरकृत अतिशय जे ओगणीस लहिए, एक एक एणा हवे वीस कहीए ॥१५॥

चालि.

धर्मचक्र शुचि चामर वसत्रय विस्तार,
छत्रत्रय सिंहासन दुंदुभि नाद उदार;
रत्नत्रय ध्वज उंचो चैत्र द्रुम सोहंत,
कनक कमल पगलां ठवे चउ मुह धर्म कहंत ॥ १६ ॥

दुहा.

वायु अनुकूल सुलमल वाये, कंटक उंध मुख सकल थाए;
स्वामी नवधी अत्र थोग नाखे केश नख रोम नवधी न वाधे. (१३) ॥ १७ ॥

चालि.

कोडि गमे सुर सेवे[१४], पंखि प्रदक्षण दंति (१५)
ऋतु अनुकूल[१६] कुसुमभर गंधोदक[१७] वरसंति;
विषय सर्व शब्दादिक नवि होवे प्रतिकूल (१८)
तरु पण सवि शिरनामे जिनवरने अनुकूल (१९) ॥१८॥

दुहा

हवे कहुं जे पण तीस वाणी, गुण सकल गुण तणी जेह खाणी;
प्रथम गुण जेह संस्कारवंत (१)उदात्त गुण अपर (२) सविहुणे संत, ॥१९॥

चालि.

शब्द गंभिरपणुं जिहां (३) वली उपचारोपेत (४)
अनुनादित्व (५) सरलता (६) उपनीत राग समेत (७)
शब्दातिशय ए साते, अर्थातिशय हवे जोय,
महार्थता (८) अव्याहता, शिष्टपणुं[१०] गुण होय ॥ २० ॥

दूहा.

गुण असंदिग्ध[११] विगतोत्तरत्व[१२] जनहृदय[१३] गामि गुण मधुरत्व,
पूर्व अपरार्थ साकांक्ष[१४] भाव नित्य प्रस्ताव उचित[१५] स्वभाव ॥२१॥

चालि.

तत्त्वनिष्ट[१६] अप्रकीर्ण प्रसृत[१७] निज श्लाघा अन्य निंद रहित[१८],
अभिजात मधुर[१९] अति स्निग्ध,[२०]
ते पन्य[२१] मर्म न वेधक[२२], उदार[२३] त्रिवर्ग विषय प्रतिबद्ध[२४],
कारकादिक अविपर्यय[२५] विभ्रम रहित प्रगट (२६) ॥२२॥

दुहा.

२७ २८
चित्रकर अद्भुतता राति अनति अविलंब (२९)
जाति सु विचित्र (३०) सु विशेष विंव (३१)
सत्त्व पर (३२) वर्ण पद वाक्य शुद्ध (३३)
नहिय विच्छेद (३४) खेदे न रुद्ध (३५)॥ २३ ॥

चालि.

इम पांत्रिस गुणे करी वाणी वदे अरिहंत,
सर्व आयु जो कोइ सुणे तो नहीं भूख न भ्रंत;
रोग शोग न जागे लागे मधुर अत्यंत,
इहां आवश्यक भाष्ये किवि दासी दृष्टांत ॥ २४ ॥

दुहा.

देव दुंदुभि कुसुम वृष्टि छत्र, दिव्य ध्वनि चामर आसन पवित्र;
भव्य भामंडल द्रुम अशोक माति हास्य हरे आठ शोक ॥ २५ ॥

चालि.

रागादिक जे अपाय ते विलय गया सविशेष (१)
उग्यो ज्ञान दिवाकर (२) जय जय हुओ जगियोष;
वाणी कुमति कृपाणी (३) त्रिभुवन जन उपचार (४)
पामे जन जे व्यापक मूलातिशय ए च्यार. ॥२६॥

दुहा.

महा माहण महा गोपनाह, महा निर्यामक महा सार्थवाह;
बिसद महा कथित तणुं जे धरंत, तेहना गुण गणे कुण अनंत ॥२७॥

चालि.

पुण्य महातरु फलदल, किसलय गुण ते अन्य,
अन्य ते क्षायिक संपदि, उपकारे करी धन्य;

ढाल.

काल भेद नहि भेदक शिव सुख एक विशाल,
जिम घन कोडिनी संख्या अनुभवनी त्रिहु काल;
कोडि वरसारे आजना सिद्धमां नहीं कोइ भांति
जाणे पण न कहे जिनजिम पुरगुण भिल्ल जाति. ॥४०॥

दुहा.

जाणंतो पण नगर गुण अनेक, भीलनी पल्लमांहि भील एक;
नवि कहे विगर उपमान जेम, केवली सिद्ध सुख इण तेम ॥४१॥

ढाल.

अश्व वाहने कोइ चाल्योरे नरपति सुरपति रूप,
एक विवेक विराजे ए बीजे ए नाम अनूप;
अश्वे अपहृत सैन्य ते छोडी दोडी जाय,
पाछिने परिसरि मेल्ही ते बेठो एक तरु छाय ॥ ४२ ॥

दुहा.

एक ते भील अविनीत तुरगइं कष्ट उपनीत दुह भरम लगइं;
स्नान सुख देखीओ भील एके तेह पण पमहीमां तास टेके ॥४३॥

ढाल.

एक पहने देखेरे न विशेषे नीत रूप,
एक सुवर्ण अर्द्धहुत एक ने कामज रूप;
इम मन भोळे वधू परिमाता नहि समभाव,
अनुमाने भक्त आणिओ भील तेह नृपने पाय ॥४४॥

दुहा.

मधुर रूप आवी नृपने वधावे, विमने वेत पहि पहि निभावे,
वंदु सिद्ध मायुरी अधिक भाव्यां, भील ने पुहवि पिल आव्यां॥४५॥

चालि.

एतलें आवीरे सेना पगि पगि जोती मग्ग,
गजित गज हेषीत ह्यरथ पादातिक वग्ग;
वाजांरे वाजां जितिनां छांग्यां केसर घोल,
ओच्छरंग वधामगां नव नव हूआ रंग रोल. ॥ ४६ ॥

बंदिजन छंदस्युं बिरुद बोले, कोइ नहीं ताहरे देव तोले;
देइ देइ करव नाचे ते नट्टुआ, गीत संगीत सवान पट्टुआ॥४७॥

चालि.

आगे धरिआरे मोदक मोदकरण सुवरंव,
दिव्य उदक वलि आण्यां सीतल सरस सुगंध;
तृप कहे मील आरोगे, ते तुज आवे भोग,
वेचाती हुं लीचो. इण अवसरि संयोगे ॥ ४८ ॥

दुहा.

वस्त्र अलंकार देहने पहिराव्यां सूभगां तुच्छ अंबर छोडाव्यां;
दिव्य तांबूल स्व तुज ते सोहे, विनय गजराज साथे आरोहे ४९

चालि

कोइ आरोधारे वारण दमक्यां ढोल निसाण,
नादें अंबर गाजे लाजे लवल मंडाणः
नगर प्रवेश महोच्छव अंबरित पाने रे मीत,
जाने हुं सरगनां आविओ रायी देहन थीत. ॥ ५० ॥

दुहा.

देखी नाकार आकार हरस्यो, नगरनो लोक सुरलोक परस्योः
आनन श्रेणि वेस महेभ्य, मानिआ सुगण गजराज सभ्य. ॥५१॥

चालि.

पइरीरे पीन पटोली ओली केश पुनीत.

[३०]अश्रित [३१]अजित [३२]अजेय [३३]अमेय [३४]अभार [३५]अपार,
[illegible]अपरंपर [३७]अजरंजर [३८]अरह [३९]अलेख [४०]अचार ॥ ६४ ॥

दुहा.

[४१]अभय [४२]अविशेष [४३]अविभाग [४४]अमित [४५]अकल [४६]असमान [४७]अविकल्प [४८]अकृत
[४९]अदर [५०]अविधेय [५१]अनवर [५२]अखंड [५३]अगुरुलघु [५४]अच्युताशय [५५]अदेह ॥६५

चालि

[५६]परमपुरुष [५७]परमेश्वर [५८]परममात्र [५९]प्रमाण;
[६०]परमज्योति [६१]परमातम, [६२]परमशक्ति [६३]परमाण;
[६४]परमबंधु [६५]परमोज्वल ,[६६]परमवीर्य [६७]परमेश;
[६८]परमोदय [६९]परमागम, परम [७०]अव्यक्त [७१]अदेश. ॥ ६६ ॥

दुहा.

[७२]जगप्रभुगुरु [७३]जगतगुरु [७४]जगततात, [७५]जगतिलक [७६]जगतमणि [७७]जगतभ्रात;
[७८]जगतशरण [७९]जगकरण [८०]जगतनेता, [८१]जगभरण [८२]शुभवरण [८३]जगतजेता.॥६७॥

चालि.

[८४]शांत [८५]सदाशिव [८६]निर्हन, [८७]मुक्त [८८]महोदय [८९]धीर;
[९०]केवल [९१]अमृत कलानिधि, [९२]कर्मरहित [९३]भवनीर;
[९४]प्रणवबीज [९५]प्रणवोत्तर, [९६]प्रणवशक्ति [९७]शृंगार.
[९८]प्रणवगर्भ [९९]प्रणवांकित, [१००]यशपुण्यआधार ॥ ६८ ॥

दुहा

दर्शनातीत दर्शन प्रवर्ता, निजदर्शन अदर्शन निवर्ता;
बहुनमन नम्य जगतनत-अनाम, सिद्धना छे इत्यादि नाम.॥६९॥

ढाल.

नमस्कार ते सिद्धने, वासित जेहनुं चित्त.
धन्य ते कृत पुण्य ते जीवित तास पवित्त;
आर्तध्यान तस नवी हुई. नवि हुई दुरगतिवास,
भवक्षय करवांरे समरतां लहिई सुकृत उल्लास. ॥७०॥

दुहा.

पद त्रीजे ते आचार्य नमीए, पूर्व संचित सकल पाप गमिए
शासनाधार शासन उल्लासी. श्रुतबले तेह सकल प्रकाशी. ॥

ढाल.

कहिई कुगति पयार्थारे. जिनवर दाखी पंथ,
धरेईरे आचार्य आर्दनीति प्रवचन निग्रंथ;
मुरख शिष्यने शिखवी. पंडित करेरे प्रधान.
ए अचरिज पाषाणे, पल्लव उदय समान. ॥ ७२ ॥

दुहा.

भाव आचार्य गुण अति मनूप. परम आलंबन देहि भूप:
ते कहीओ सुर्वे जिनराज सरिखो. तेहनी आणना कोई धरखे

ढाल.

कुलकुल कुलकर्ना धर्माधार दाप.
नित घर मन स्वकरानी. गुण धर्गी अरधीन
हृदिना कन नव तो आचार्य गुणवद
ते आराधे आणना जिन कहि आनंद. ७४

दुहा

पहर पहिचन पहुत इमान नर्गि कहुर पनह दल दरान:
सार गुण भावनानी श्रेणा. पद उत्तम गुण नहीं केणा ।

ढाल

प्रतिरूप तेजे सुरूपी, तेजस्वी बहु तेज,
युग प्रधान तत्कालइं, वर्तना सूत्रस्युं हेज;
मधुर वाक्य मधुभाषी, तुच्छ नहीं गंभीर,
धृतिमंत ते संतोषी, उपदेशक श्रुत धीर. ॥ ७६ ॥

दुहा.

नवि झरे मर्म ते अपरिश्रावी, सौम्य संग्रह करे युक्ति भावी;
अकुळ अविकत्थने अचपलशांत, धाद गुण ए धरे सूरि दांत ।७७।

ढालि.

धर्म भावना विश्रुत इम छत्रीसी छत्रीस,
गुण धारे आचारय तेह नमुं निशदीस;
आचारय आणा विण न फळे विद्यामंत्र,
आचारय उपदेशइं सिद्धि लहीं जइ तंत्र. ॥ ७८ ॥

दुहा.

इह हुए पूर्ण जो विमळ नीरे, तो रहे मच्छ तिहां सुख शरीरे;
एम आचार्य गणमांहि साध, सार आचार अंगि अगाध. ॥७९॥

ढालि.

आणा कुशलीरे पाळीइं, विण आचारय देह,
कारणि विक पणि जिहां हुई तिहां आचारय एह;
श्रुत पदिक्रमीमां पणि आचार्य ममत्य,
जिन पणि आचारय हुई नव लागे श्रुत अग्य.

दुहा.

सूरि गणधर वर्गी गच्छ नाथी, पूज्य नर्मितरिक वयोवृद्धाथी;
[illegible] मध्यदश मध्दुभाषी, ८८ [illegible] ज्ञान भोगी।८०।

चालि.

[१२] अनुच्चान [१३] प्रवचनधर आणा [१४] इसर देव,
[१५] भट्टारक [१६] भगवान [१७] महामुनि [१८] मुनिकृत सेव;
गच्छ [१९] भारधर [२०] सद्गुरु [२१] गुणगण [२२] युक्त अधीश,
[२३] गणि [२४] विद्याधर [२५] श्रुतधर [२६] शुभ आश्रय जगीश. ॥ ८२ ॥

दुहा.

नाम इत्यादि जस दिव्य छाजे, देशना देत घन ग्रुहिर गाजे;
जेहथी पामीइं अचल धाम, तेह आचार्यने करुं प्रणाम॥ ८३ ॥

चालि.

आचारय नमुक्कारे वासित जेहनुं चित्त,
धन्य तेह कृत पुण्य ते जीवित तास पवित्त,
आर्तध्यान वस नवि हुइं, नवि हुंइं दुरगति वास,
भव क्षय करतांरे समरतां, लहिइं सुकृत उल्लास ॥८४॥

दुहा.

पद चउत्थे ते उवज्झाय नमिए, पूर्व संचित सकल पाप गमिए;
जेह आचार्य पद योग्य धीर,सुगुरु गुण गाजता अति गंभीर.॥८५॥

चालि.

अंग ईग्यार उदार अरथ सूचि गंग तरंग,
वाचिक रुचि अध्ययन अध्यापत बार उपांग;
गुण पंचवीस अलंकृत सुकृत परम रमणीक,
श्री उवज्झाय नमी जे, सूत्र भणावे ठीक. ॥ ८६ ॥

दुहा.

सूत्र भणीई सस्वर जेह पासे, ते उपाध्याय जे अर्थ भासे;
तेह आचार्य ए भेद लहीए, दोईमां अधिक अंतर न कहीए.॥८७॥

चालि.

संग्रह करत उपग्रह निज विषये शिव जाय,
भव त्रीजे उत्कर्षथी आचारय उवझाय;
एह वचन इहां भाषओ भगवई वृत्ति लेई,
एकज धर्मी निश्चय व्यवहारे दोई भेई. ॥ ८८ ॥

दूहा.

सूरी उवज्झाय मुनि भावि अप्पा, गुण थकि भिन्न नहीं जेमहप्पा;
निश्चय ईम वदे सिद्धसेन, थापना तेह व्यवहार दैन ॥८९॥

चालि.

वृत्ति शुभ उपओगेई करण नई अर्थि सद,
ज्ञायति भाणई पूरई आतम नाणनी हद।
पणि निश्चयि उवज्झाय माहन वाणि प्रसिद्ध,
आवश्यक निर्युक्तई भाख्यो अर्थ समृद्ध ॥ ९० ॥

दूहा.

भाव अध्ययन अज्झयण पूर्ण, भाव उवज्झाय तिम तस्व वर्णों;
जेम श्रुत केवली सपष्ट नाणें, व्यवहारें निश्चई अप्पमाणे ॥९१॥

चालि.

संपूरण श्रुत जाणे श्रुत केवलि व्यवहार,
गुणद्वारार आत्मद्रव्यनो ज्ञान प्रकार;
श्रुतथी आतमा जाणे केवल निश्चय सार,
श्रुत केवली परकासें तिहां नहीं भेदवचार ॥ ९२ ॥

दूहा.

आरिहंत नवही ते ते उपाये, नवही विन्यास केवल समाधें;
देह उवज्झाय पदने विचारें, भेद एक रीत छे जगमसारें ॥९३॥

चालि.

उपाध्याय बुधवाचक पाठक साधक सिद्ध,
करण हरण अध्यापक कृतकर्मा श्रुतवृद्ध:
शिक्षक दीक्षक स्थविर चिरंतन रत्न विशाल,
मोहजयी पारिच्छक जित परिश्रम धृतमाल ॥ ९४ ॥

दुहा.

साम्यधारी विदित पद विभाग, मुनिवादावन विगत दूषे राग।
अप्रमादी सदा निर्विषादी, अध्ययनानंद आतम प्रसादी. ॥९५॥

चालि.

नाम अनेक विवेक विशारद पारद पुन्य,
परमेश्वर आराधन गुण सुविशुद्ध अगण्य:
नमीए शासन भासन पति पावन उवज्झाय,
नाम जपतां जेहनुं नव निधि मंगल थाय, ॥९६॥

दुहा.

नित्य उवज्झायनुं ध्यान धरतां, पामीए गुण निज चित्त ठरतां:
दुरित दुर्बोध [illegible] न लागे, [illegible] विरमी न ठरतां। [illegible] ॥९७॥

चालि

नमस्कार उवज्झायने कीजिए जेहनुं चित्त.
धन्य तेह [illegible] पुन्य है. [illegible] नाम पवित्र:
[illegible] ध्यान मन नहि दूर, नहि दूर दुर्गति [illegible],
[illegible] ॥ ९८ ॥

दुहा

[illegible]
[illegible]

चालि.

कर्म भूमि पन्नर वर भरतैरवत विदेह,
सेत्रमां पंकज नेत्र जे साधु अमाय निरेह;
एक पूजे सवि पूजीआ निंदिआ निंदे एक,
सम गुण ठाणारे नाणी ए पद सर्व विवेक. ॥ १०० ॥

दुहा.

लोक सन्ना वमी धर्म धारे, मुनि अलौकिक सदा दस प्रकारे;
लाभ अणलाभ मानापमान, लेखवे लोढुं कांचन समान. ॥ १०१॥

चालि.

खंती अज्जव मद्दव मुत्ती पण तस मर्म,
ते उपयार वयार विवाग वचन वळी धर्म;
लौकिक भिण्ण लोकोत्तर छई छई ते तस होई,
छट्ठ गुण ठाणु भव अटवी लंघण जोई. ॥ १०२ ॥

दुहा.

तप नियाणे रहित तस अखेद, शुद्ध संयम धरे सत्तर भेद;
पंच आश्रव करण चउ कषाय,दंड त्रिक वर्जने शिव उपाय.।१०३॥

चालि.

गुरु सूत्रानुज्ञाए हितमीत भाषण सत्य,
पापच्छित जले मळगाल्लन शौच विचित्त;
पंखी उपमाए धर्मोपकरण जे धरेत,
तेह अकिंचन भाव छे तेने मुनिराय महंत ॥ १०४ ॥

दुहा.

बंभमण विचित्तिणु फरिसरूप, सद्दमण त्यज तप वियारकूव;
बंभमण विति बंभे जे भाखी, ते क्षयोपशम गनि सूत्र दाखी॥१०५॥

चालि.

ब्रह्मचारीए ब्रह्म कह्यो सघळो आचार,
तिहां मनवृत्ति प्रविज्ञा क्षय उपशम विस्तार;
ते विण बंभ अणुत्तर सुरने नविं हुए तंत,
मन विरोध पण शुद्ध ते बंभ कहे भगवंत ॥१०७॥

दुहा.

एम दस धर्म पाळे विचित्र, मूळ उत्तरे गुणे मुनि पवित्र;
भ्रमर परि गोचरी करीय भूंजे, शुद्ध सज्झाय अहर्निश मजूंजे॥१०७

चालि.

क्लेष नासिनी देशना देत गणे न प्रयास,
असंदीन जिम द्वीप तथा भविजन आश्वास;
तरण तारण करुणापर जंगम तीरथ सार,
धन धन साधु सुहंकर गुण महिमा भंडार ॥ १०८ ॥

दुहा.

सम अनाबाध सुखना गवेषी, धर्ममांहि थिर हृदय हित उल्लेखी;
एहवा मुनिनुं उपमान नाहि, दैत्य नर सुर सहित लोकमांहि॥१०९

चालि.

षट व्रत काय छ रक्षक निग्रहे इंद्रि न लोभ,
खंती भाव विसोही पडि लेहण थिर शोभ;
अशुभ रोध शुभ योग करण तप शुद्धि जगीश;
शीतादिक मरणांतिक सहे गुण सत्तावीश. ॥ ११० ॥

दुहा.

मुनि महानंद अर्थी सन्यासी, भिक्षु निर्ग्रंथ आतम उपासी,
मुक्त माहण महात्मा महेशी, दान्त अवधूत निति शुद्ध लेशी. ११

ढालि.

शान्त पहक वर अशरण शरण महाव्रत धार,
पाखंडी अर्थ खंडी दंड विरत अणगार;
लद्द अभय तीरथी, पूर्ण महोदय काम,
अबुद्ध जागरिका जागर शुद्ध अध्यातम धाम ॥ २१२ ॥

दुहा.

नेष्ठ छुत निज तणो ऊर्ध्व रेता, उन्मनी भाव भावक भवेता;
अनुभवी तारक ज्ञानघन, ज्ञान योगी महाशय भदंत ॥ २१३ ॥

ढालि.

तत्वज्ञानी वाचंयम गुप्तेंद्रिय मन गुप्त,
मोहजयी हपि शिशिव दीक्षित काय अलुप्त;
गोप्ता गोपति गोप अगोप्य अकिंचन धीर,
सर्व मद ममता मय निःमाते कर्म शरीर ॥ २१४ ॥

दुहा.

श्रमण क्षांति द्रव्य पंडित पुरोग, अगर अविपानन्नुष्ठान रोग;
अपुन गर्वेन्नु किरिया विहासी, वचन धर्म शमा शुभ अध्यासी. २१५

ढालि.

शुक्ल शुक्ल अभिजात्य अनुभव उत्तर धर्म,
मग्न अनंत अनंद्रिय मुद्रित करण अकर्म;
दीर्ण शान संकीर्ण मदान ते मंगल मयान,
गति मंध्यान विचक्षण मन्यास्यान विधान ॥ २१६ ॥

दुहा.

नाथ इत्यादि महिमा समुद्र मारू ए अल्पकना छे मुद्र;
मर्द ओंडे जिहे ब्रह्मचारी वदन मनमोज गुण संभारी. ॥२१७॥

ढाल.

श्री नवकार समो जगि मंत्र न यंत्र न अन्य,
विद्या नवि औषध नवि एह जपे ते धन्य;
बहु दन्यां बहु एहने जापे तुरत सिद्ध,
एहना बीजनो विद्या नवि विनशीने सिद्ध ॥ १२० ॥

दुहा.

सिद्ध धर्मास्तिकायादि द्रव्य, नियम नवकार ए भणे भव्य;
सर्वश्रुतमां व्यापक मनाव्यो, महानिशीथे भन्यो परिकर्माद्यो ॥१२१॥

ढाल.

गिरिमांहि जेम सुरगिरि तरमांहि जिम सुरसाल,
सार सुगंधमां चंदन नंदन वनमां विशाल;
मृगमां मृगपति खगपति खगमां तारा चंद,
गंगनदीमां अनंग रूपमां देवमां इंद ॥ १२२ ॥

दुहा

जिम स्वयंभूरमण उदधिमांहि, श्री रमण जिम मदन सुभटमांहि,
जिम अधिक नागमांहि नागराज, शब्दमां जलद गंभीर गाज ॥१२३॥

ढाल.

रसमांहि जिम इक्षुरस फूलमां जिम अरविंद,
औषधमांहि सुधा [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १२४ ॥

दुहा

[illegible]
[illegible] ॥ १२५ ॥

ढालि.

रतनमांहि सारो हीरो नीरोगी नरमांहि,
शीतळमांहि उसीरो, धीरो व्रत धरमांहि;
तिम सर्व मंत्रमां भाख्यो श्री नवकार,
कशा न जायेरे एहना, जे छे बहु उपकार ॥ १२६ ॥

दुहा.

तजे ए सार नवकार मंत्र, जे अवर मंत्र सेवे स्वतंत्र;
कर्म प्रतिकूल बहुल सेवे. तेह सुरतरु त्यजी आप टेवे. ॥ १२७ ॥

ढालि.

एहने बीजेरे वासित होई, उपासित मंत,
बीजो पणि फळदायक, नायक छे ए तंत;
अमृत उदधि कुं सारासारा हरत विकार,
विषना ते गुण अमृतनो, पवननो नहींरे लगार. ॥ १२८ ॥

दुहा.

जेह निर्बीज ते मंत्र जूठा, फळे नहीं सारपुंहुर अपुठा;
जेह महामंत्र नवकार साधे, तेह दोय लोक अलगे आराधे.॥ १२९॥

ढालि.

रतनतणी जिम पेटी भार अल्प बहु मूल,
चौद पूरवनुं सार छे मंत्र ए तेहने तूल;
सकल समय अभ्यंतर ए पद पंच प्रमाण,
महसुअखंध ते जाणो, चूला सहित सुजाण. ॥ १३० ॥

दुहा.

पंच परमेष्ठि गुण गण भीना, जिन चिदानंद मांजे उदीना;
श्री यशोविजयवाचक वखाना, तेह ए सार परमेष्ठि गीता

इति श्री पंचपरमेष्ठि गुणवर्णन गीता समाप्ता.

नयादि घृत पूरीयोजी, तत्त्व पात्र सुविशाल. सुहं ॥१०॥

धूपरूप अतिकार्यताजी, कृष्णागरु जोग शुद्ध;
वासना पद महमहेजी, तेतो अनुभव योग. सुहं ॥११॥

मद स्थानक अड छांडवाजी, तेह अष्ट मंगलीक;
जे नैवेद्य निवेदीए, ते मन निश्चल ठीक. सुहं ॥१२॥

लवण उतारी भावीएजी, कृत्रिम धर्मनो त्याग;
मंगल दीवो अति भलोजी, शुद्ध धरम परभाग. सुहं ॥१३॥

गीत नृत्य वादीत्रनोजी, नाद अनहद सार;
समरनि रमणी जे करीजी, ते साचो थेइकार. सुहं ॥१४॥

भावपूजा एम भावीएजी, सत्य धनाशीरे चंद;
त्रिभुवन मांहि ते विस्तरेजी, टाळे करमनी फाट. सुहं ॥१५॥

इणिपरे भावना भावतांजी, साहेब जस सुपसन्न;
जनम सफल जग तेहनोजी, तेह पुरुष धन्य धन्य. सुहं ॥१६॥

परम पुरुष प्रभु सांभळोजी, मानो ए मुज सेव;
दूर करो भव आमळोजी, वाचक जस कहे देव. सुहं ॥१७॥



श्री यशोविजयजी उपाध्यायजी कृत

समुद्र वहाण संवाद.

दुहा.

श्री नवखंड अखंड गुण, नमी पास भगवन्त;
करशुं कौतुक कारणे, वाहण समुद्र वृत्तांत ॥ १ ॥
एहमां वाहण समुद्रनां, वाद वचन विस्तार;
सांभलतां मन उल्लसे, जिम वसंत सहकार. ॥ २ ॥
मोटा नाना सांभलो, मत करो गुमान;
गर्व कर्यो रयणायरे, टाळ्यो वाहणे निदान. ॥ ३ ॥
वाद हुओ किम एहने, मांहोमांहे अपार;
सावधान थइ सांभलो, ते सवि कहुं विचार. ॥ ४ ॥

ढाल.

(थाहरां मोहलां उपर मेहझरोखें कोयलीरे के [illegible] ॥

श्रीनवखंड जिनेश्वर केसर कुसुमस्युंरे, के [illegible] ।
मंगळ कारण पूजी प्रणमी प्रेमस्युंरे, के [illegible] ।
प्रभू पाय लागी मागी शकुन वधाम[illegible] के [illegible]
विवहारि[1] श्री पासना लेवा भांमण[illegible] के [illegible] ॥ १ ॥
श्रीफल प्रमुखें वधावी रयणायर [illegible] के [illegible]
वाहण हकारीने चालिया ते सवी [illegible] के [illegible]
पणमीदीइं[2] आसीस कहे वहिला [illegible] के [illegible]
हीरचीर पटकुल क्रयाणां लाव[illegible] के [illegible] ॥ २

१ व्यवहारि. २ प्रणमी दीए.

पवन वेग इवे चाल्यां वहाण समुद्रमांरे के वहा०
सढ ताण्या श्रीकेरा डेरा तेगमारे केडे०
तूराइ वाजे गाजे मणिरुचि विजलीरे के गाजे०
मानु के अंबर डंबर मेघ घटा मलिरे के मे० ॥ ३ ॥

के पर्वतपस्थांलाके पुरवालतारे के पु०
उदधि कुमार विमान केइ जलमांहि मालतारे के ज०
केई ग्रह मंडल उतरचो थोक मीलि सहूरे के थो०
इम ते देखी थाके अंबर सुर बहुरे के अं० ॥ ४ ॥

चाटुई[1] जल अवगाहतां चाल्यां ते जलेरे के चा०
साथ दिए[2] जिम सज्जन तिम बंहु मिलिरे के तिम०
फरतरंग विस्तारी साथ ते मलिरेके सा०
जाल प्रवाल छले हुओ रोमांचित वलीरे के रो० ॥ ५ ॥

भरमध्यइं[3] ते आव्या जिहां जल उच्छलेरे के जिहां०
सायरमांहि गर्व न माई तिणें वलेरे के ति०
गाजइं भाजइं नाचतो अंग तरंगसुंरे के अं०
मत थालो करें चालो निज मन रंगसुंरे के चा० ॥ ६ ॥

गर्वे जाणें मुझ सम जगमां को नहिरे के मु०
गर्वे चढावें पर्वत जननें करग्रहीरे के ज०
गर्वे निजगुण बोले न सुणे परकह्यारे के न सु०
रस नवी देंई ते नारी कुचजिम निजग्रह्यारे के कु०॥ ७ ॥

ए असमंजस देषी दृष्टि आकरुंरे के दृष्टि०
एक वाहण न रही सक्यु बोल्युं ते सरुंरे के बोल्युं०

---

१ चाटुए. २ दिये. ३ मध्ये

सुख नवि राखें भाखें साचुं वागीआरे के सा०
राजकाज निर्वाहे ते नवि हानियारे के ते० ॥ ८ ॥

दरिया तुमेंठो भरिया नवि तरिया कुणेरे के न०
तुमे कोईथी नवी टरिया परिवरिया गुणेरे के परि०
तो पिण गुण मद करवो तुमनें नवी घटेरे के तु०
मुटाने वात कहेस्यें वडाऊ जे अटेरे के जे० ॥ ९ ॥

जे निज गुण स्तुत सांभलि सिर नीचुं धरेरे के सि०
तस गुण जाइ उंचा सुरवरनें घरेरे के सु०
जे निज गुण मुखि बोले उंची करी कंधरारे के उंची०
तस गुण नीचा पेखि बेसे तले धरारे के बेसे तले० ॥१०॥

दुहा.

एह वचन सायर सुणी, बोले हलुआ बोल;
सी तुजने चिंता पडी, जा तुं निगुण निटोल. ॥ १ ॥
आपकाज विण जे करइ, सुखरी परनी तात;
पर अवगुण व्यसने हुइ, ते दुखिया दिनरात. ॥ २ ॥
वाहण कहे सायर सुणो, जे जग चतुर सुजाति;
ते दाखें हीतसीखडी, तेमन जाणे तात ॥ ३ ॥
जो पणि परनी द्राख खर. चरतां हांणि न कोय.
असमंजस देखी करी, तो पिण मन दुख होय ॥ ४ ॥

ढाल.

(विनय करी घरी आविया, वंदि करे जयकार ए देशी ॥
सिंधु कहे हवे सिंधुर बंधुर नादविनोद,
घटतो रे गर्व करुं हुं पामुं हुं चित्त प्रमोद;

१ सागर.

मोटा इच्छेरे माहरी सारें जगत प्रसिद्ध,
सिद्ध अमर विद्याधर मुज गुण गाजे समृद्धि ॥ १ ॥

रजत सुवर्णना आगर मुज छे अंतर द्वीप,
दीप जिहां बहु औषधि जिम रजनी मुख दीप;
जिहां देखी नरनारी सारी विविध प्रकार,
जाणीइं जग सवी जोइओ कौतुकनो नहि पार. ॥ २ ॥

ताजीरे मुज वनराजि जिहां छे ताल तमाल,
जाति फल दल कोमल ललित लविंग रसाल;
पूगी श्रीफल एला भेला नाग पूंनाग,
मेवा जेहवा जोईइं ते हुवा मुज मध्य भाग. ॥ ३ ॥

चंपक केतकी मालति आलति परिमलवृंद,
प्रफुल मुकुल वलि अलिकुल मुखर सखर मचकुंद;
दमणो मरुओ मोगरो पाडलनें अरविंद,
कुंद जाति मुज उपवने दीइं जनने आनंद ॥ ४ ॥

मुज एक सरणे राता राती विद्रुम वेलि,
दाखी राखी तेहमां में साची मोहणवेली;
जप माला जपकारणें तस फल मुनिवर लिंत,
वनिता अधरनी उपमा ते पुण्ये लाभंत. ॥ ५ ॥

नवग्रह जेणेरे पलिंइं[1] पांध्या साटनई[2] पाय,
लोकपाल जस किंकर, जेणे जित्यो सुरराय;
किओरे त्रिलोकी कंटक रावण लंका राज,
हुज पसाई[3] तेणे कंचन गढमढ मंदिर साज. ॥ ६ ॥

---

१ पडे. २ साटने ३ पसाये.

पक्ष लक्ष जव तक्षवो पर्वत उपरिधाई,
कोपाटोप धरी घणो वज्र लेई सुरराय;
तडफडी पडीयार ते सवी एक ग्रहे मुज पक्ष,
तव मेनाक रहीओ ते सुखीओ अक्षतपक्ष ॥ ७ ॥

जग जसचराचर जस तनुं माया पीलई चीर,
ते लक्ष्मीनारायण गोवर्द्धन धरधीर:
मुजमांहे पोढ्या हेजे सेज करी अहिराज;
होड करे कुंण माहरी हुं तिहुअण[1] सिरताज. ॥ ८ ॥

वाहण पाहण पणि तुजथी भारें तुं कहेवाय,
हलुओ पवन जकोलें डोलें गडथलां खाय;
तो हलुया बोलडा हलुओ छे तुज पेट,
मुज मोटाई न जाणें ताणें निज मति नेट. ॥ ९ ॥

गिरुयाना गुण जाणे जे हुई गिरुआ लोक,
हलुआनें मति तेहना गुण सवी लागे फोक;
वांझि न जाणेरे वेदना जेहुई प्रसवतां पुत्र,
मूढ न जाणें परिश्रम जे हुइ भणतां सूत्र. ॥ १० ॥

दुहा.

सायर जव इम कही रह्यो, वाहण बदे तव वाच;
मा आगल मोसालनुं, ए सवी वर्णन साच. ॥ १ ॥
वाणीने जिम ग्रंथ गति, सुरतिथि हरिने जेम;
कांई अजाणि मुज नहीं, तुम मोटाई तेम ॥ २ ॥
विस्तारुं हुं गुण अमे, ढांकुं हुं तुम दोष;
तो एवडुं स्युं फुलवुं, सो करवा कंठ सोष ॥ ३ ॥

---

१ त्रिभुवन.

मेघों जिम मृग चंद्लो, जिम किजे सुप्रकाश;
तिम अवगुणना गुणकर, सज्जननो सहवास ॥ ४ ॥
गुण करतां अवगुण करे, तेनो दुर्जन क्रूर;
नालिकेरजल पान दीइं, जो मेलिइं कपूर ॥ ५ ॥
हित करतां माने अहित, ते छांडी जे दूर;
जिम रवि उग्यो तम हरे, घूक नयन तम पूर ॥ ६ ॥

ढाल.

देशी मरकलडानि.

इडुआ जिम तुं आगमी सागर सांभलो,
बहु मनने पार उतारजी; सागर०
मुं कीजइ तुम मीठाईजी, सागर०
ते बांधे लोकेन कालजी. सा० ॥ १ ॥

तुंपे नाम धरावो सो मोटाजी सा०
पणि कामनी वेवारि खोटाजी; सा०
तुंबे केवल आपणुं वाध्यांजी, सा०
न कीधा हित सावधांजी. सा० ॥ २ ॥

तुंमे मोटाइ मन राखोजी, सा०
हलि वातो पणि हीए आखोजी; सा०
का[illegible] उपरकी वात कांईजी, सा०
जिहां मान वेर [illegible]जी. सा० ॥ ३ ॥
[illegible] वरिंदु नाखीजी, सा०
[illegible] ठाम [illegible]. सा०

* जिम

आकाश मोटो पिण कालोजी, सा०
नान्हो चंद्र करे अजुआलोजी. सा० ॥ ४ ॥

आपे मोटाई अपनी कीजीजी, सा०
तिहां तेजवंत ते नानी कीकीजी; सा०
नानो चित्रावेल धीराजेजी, सा०
मोटो एरंडो नवी छाजेजी. सा० ॥ ५ ॥

नान्हो पंचजन्य हरि पूजेजी, सा०
तस नादे त्रिभुवन धुजेजी: सा०
नानो सिंह महागज मारेजी, सा०
नानो वज्र ते शैल विदारेजी. सा० ॥ ६ ॥

नान्ही औषधि जो होइ पासेजी, सा०
तो भूत प्रेत सवि नासेजी; सा०
नान्हे अक्षर ग्रंथ लखायेजी, सा०
तेहनो अर्थ ते मोटो थाएजी सा० ॥ ७ ॥

तुमे रावणनुं सोचविगोजी. सा०
इहां सार असारनो वहिरोजी: सा०
तुमे मोटाई नांखी ढोलीजी, सा०
निज मुखे निज गुण कम बोलीजी सा० ॥ ८ ॥

तुमे रावणनुं वन्न पोळ्युंजी, सा०
पिण नीति शास्त्र नवि पोळ्युंजी: सा०
चोर संगी तुम्हने जाणिजी सा०
रामचंदे बांध्या ताणीजी सा० ॥ ९ ॥

वन द्वीपादिकनी मोहाजी. सा०
ए हमिना गुण संदोहाजी: सा०

ते देखी मद मत वहजोजी, सा०
मद छांडिने छाना रहजोजी. सा० ॥ १० ॥

दुहा.

एह वचन श्रवणें सुणी, पाम्यो सायर खेद;
कहे तुझ स्युं बोलतां, पामु छुं निर्वेद. ॥ १ ॥
जेहथी लक्ष्मी उपनी, परणी देव मोरार;
सिरतिप्रु[1] तेजिहूओ, ते अम कुल निरधार. ॥ २ ॥
ताहरुं तो कुल काठनुं, जे पोलां घणुं खाय;
तुझ मुझ विच जे अंतरो, ते मुख कह्यो न जाय. ॥ ३ ॥
वाहण कहे कुल गर्वश्यो, माहरुं पणि (पण) कुल सार;
सुरतरु जेहमां उपनो, वंछित फल दातार. ॥ ४ ॥
पशु पंखी मृग पथिकने, जे छाया सुख देत;
ते तरुवर अमकुल तिला, पर उपगार फलंत. ॥ ५ ॥
हुं लछि दिउं (दिउ) पुरुषने, ए गुण मुजमां सर्व;
मुझ तुजमां विवाद छई, तिहां कुलनो स्यो गर्व. ॥ ६ ॥

ढाल.

कुल गर्व न किजे सर्वथा, हूओ रुडे कुल अवताररे;
गुणहिणो जो नर देखीए, तो कहिए कुल अंगाररे. कुल० १
जो निज गुण जग उज्वल कर्यो, तो कुलमदनुं स्युं किजेरे;
जो दोषे निज काया भरी, तो कुलमदथी कुल लाजेरे; कुल० २
कचराथी पंकज उपनुं, हुओ कमलानुं कुलगेहरे;
कहो कुल मोटुं के गुणवडा, ए भाखो मन संदेहरे. कुल० ३

---

१ तडवरा. २ लक्ष्मी.

जेह रयण आणुं अभेरे, ते जगि आवे लेखेरे;
जे तुजमांहि पडियां रहेरे, तेहनुं फल कुंण देखेरे. तुझे० ॥ ४ ॥
सार संग्रही हुंअ छुंरे, इम जांणी मत हरखेरे;
सार न जाणे संग्रहीरे, निज मनमां तुं परखेरे. तुझे० ॥ ५ ॥
लाकड तृण उपर धरेरे, रयण तले तुं घालेरे;
ए अज्ञानपणुं घणुंरे, कहो कुणने नवी सालेरे. तुझे० ॥ ६ ॥
तुज कचरामां जे पड्यारे, निज गुण रयण गमावेरे;
ते तुजथी अलगा थयारे, सुलसु ठामें पावेरे. तुझे० ॥ ७ ॥
काकर भेला मणि धरेरे, ए ताहरि छे खामीरे;
तुम कीरती ठांमी रहीरे, तुमथी रयणें पामीरे. तुझे० ॥ ८ ॥

दुहा.

सायर कहे सुं मद करे, पोत विचारी जोय;
जे जगने आजिविका, ते सवी मुजथी होय. ॥ १ ॥
मुज वेला उपर तुझे, खेलो खेलो जेम;
जो मुज नीर अगट छे, तो सहु जगने खेम. ॥ २ ॥

ढाल.

वाहण हवे वाणी वदेरे लो, स्युं तुज नावे लाजरे;
कठिन मन जल घन तुज सुट नहिरे लो, ते आइ कुंण काजरे. १
कठिन मन धननो गर्व न कीजीयेरे लो, जे आचिकने धन छेतरे लो;
नवीदीई कृपण लगाररे, कठिन मन भारणी तेहथी भूमिकारे लो.
नवी तरुअर गिरि भाररे क० ॥ २ ॥
खारां पाणि निरमलारे लो. विण फल जिम तुज भूररे.क०

: याचक.

पणि तरस्या पशु पंखीयारे लो, तेहथी नासे दूररे. क० ॥ ३ ॥
मछादि तुजमां रह्यारे लो, ज्युं विषमां विषकीडरे; क०
पिण हंसादिक तुज जलेरे लो, पांमे बहुली पीडरे. क० ॥ ४ ॥
मारग जे तुजमां थइरे लो, चालई पुण्य प्रभावरे; क०
तिहां एक कुखें अमारडीरे लो, मरु मंडलीनी वावरे. क० ॥ ५ ॥
जो खुटे जल माहरुंरे लो, तो पाडइ जन सोसरे. क०
बहुले पणि जल तुज छतेरे लो, रति न लहे चिहुंओररे. क० ॥ ६ ॥
जे पर आशा पूरवेरे लो, छति सारु दीइं दानरे; क०
थोडुं पिण धन तेहनुंरे लो, जगमां पुण्य निदानरे. क० ॥ ७ ॥
खंड भलो चंदन तणोरेलो, स्यो लाकडमें भाररे, क०
सज्जन संग घडी भलिरेलो, स्यो मूरख अवताररे. क० ॥ ८ ॥
साद हुओ तुम पोषरोलो, बोल्यो एक नाकाररे, क०
जो जाणो जस पामीएरेलो, तो किज्यो दान विचाररे. क० ॥ ९ ॥

दुहा.

सिंधु कहे सुणि वाहण तुं, हुं जगतीरथ सार;
गंगादिक तुजमां मले, तीरथ नदी हजार. ॥ १ ॥
तीरथ जाणी अति बहुं, तुजने पूजे लोक;
गंगा सागर संगमे, न्हे ते जनना थोक. ॥ २ ॥
धारण करे तीरथपणुं, तुज गुण घटो न जाय,
गंगादिक तुजमां भले, स्वाद मधुर रस जाय. ॥ ३ ॥
गंगादिक आवि मले, तुजने रंग रसाल;
जाइ नाम बिन तेहनुं, तुज खारे लवणान. ॥ ४ ॥

१ नाम.

दुर्जननी संगत थकी, सज्जन नाम पलाय;
कस्तुरी कचरे भरी. कचरारूप कहाय. ॥ ५ ॥

दाझे दाह तृषा टले, मलगाळेजे सोय;
त्रिहु अर्थे तीरथ कह्युं, ते तुझमां नहिं कोय. ॥ ६ ॥

तारे ते तीरथ इस्यो, अर्थ घटे तुज मांहि;
जंगम तीरथ साधु पिण, तरे ग्रही भुज बांह. ॥ ७ ॥

दीसें मन जे तुझ मति, ते नावि तीरथ हेत,
गरजें कहींइं खर पिता, ए जाणो संकेत. ॥ ८ ॥

ढाल.

दशरथ नरवर राजीयो ए देशी.

सिंधु कहे सुणी बाहणनुं, हुं जेम जग हितकाररे,
मुज जल लेई घन घटा, वरसे छे जलधाररे;
जलधार वरसे तेणी सघली, हुइ नव पल्लव मही;
सरवर वाविसराई, सिहुं दिशि नीझरण चाले वही;
मद मुदित जोहामयकिन, बोला केकि केकारवकरे;
जलधीन संपत्ति होइ, बहुलि कान जगजननी मरे. ॥ १ ॥

मुज जल जिवन घन भले, मुज उत्पति निम जाणीये;
ए संबंधे मुज मति नाकुंडु, हित आणी ने,
मोलिद हीन अविनीत मुजने, नांगिए छीए ए हीन लिखी;
संबंध घोरो तिम न मूके, मेह तिहया गुणनिधी;
मुज बाल पारट मई हुंदे. मे वेदम कहता मणे;
लोक कठोर होट नो तिम, कर कराम नहि मले ॥ २ ॥

तुं धान तृणनां मूळ छेदे, लूण सघळे पायरे;
तुझ जाति विण कुण जीव पामें, सुख तेणे सायरे. ॥ ६

एरंडो नहि सुरतरू सरुअर, काहिइ दोयरें;
चिंतामणि ने कांकरो, ए बे पथर होयरे;
ए दोय पयरपणि विलख्यणपणुं, निज निज गुणतणुं;
धलि अक सुरही दुध, एक ज वरण पणि अंतरघणुं;
इमनीर जीवन तेह, धन तुं ताहरुं विपरूप;
ए तुं एक शब्दे रखे, भूले जूओ आप स्वरूप. ॥ ७

हुं धनजलथकी सपनो, चाल्योतुं तस दृष्टिरे;
जनम छगे तस गुण ग्रहुं, नवि दीठो तुं दृष्टेरे;
दृष्टि नवि दीठो तुं अने, उपकार स्यो तिहां तुझतणो;
निज जाति धनने तुपे जाणो, एह अम्ह अचरीज घणो;
जो नीरगुणो गुणवंत, दीखी करे ए अम्ह जातिई;
तो जगतमां जे जन भलेरा, तेह सवितुम्ह तातए. ॥ ८।

जलमांहि निज गुण थकी, तरिइं छइं अमे नितेरे;
हुं तारुं तुं एहनें, इम तुं धरे चित्तरे;
इम चित्त म धरे सकट हिंठि,श्वान जिम मनमां धरे;
तो गर्व करवो तुझ घटें, जो पाहण तुझ जलमां तरे;
संबंध गुणनो एक साचो, काज ते विण नवि सरे;
गुण धरें जेम मद मृषा न करे, सुजस तेहनो विस्तरे. ॥ ९ ॥

दुहा.

सिंधु कहे मुझ गुण घणा, स्युं तुं जाणे पोत;
मुझ नंदन जग चंदलो, सघळे करे उद्योत. ॥ १ ॥

मलमूत्र समेटेरे, अपवित्र तुं मेटे रे;
तेणि कारणें बेटे, दूरे परिहर्योरे ॥ ६ ॥
विरहानळ सळगेरे, सुतरहे अळगेरे;
तुं चंदने पलगे, किरणे उच्छलिरे. ॥ ७ ॥
ते पखअंधारे, करवत्त विदारेरे;
इम धारे ते द्विजपति निज पावनपणुंरे. ॥ ८ ॥
शशिस्युं तुझ रंगोरे, इम छे एकांगोरे;
नवि सोहे अभंगो, सज्जननी परेरे. ॥ ९ ॥
तुझमां नवी खूतोरे, सो सवि गुण जूतोरे;
तुझ पूतो विगुतो नवी कोई अविगुणेरे. ॥ १० ॥
सो पिण तुझवालिरे, कुल रेपा कालिरे;
निज गुण जलगाली, टालि नवि सकेरे. ॥ ११ ॥
खल संग जांणीरे, सज्जन गुण हांणीरे;
होय मलीन घन पांणी, यमुनामां भल्युरे. ॥ १२ ॥
कुल अवगुण दोपोरे, निज काया सोखीरे,
तुझ नंदन चोखी, तपस्या आदरीरे. ॥ १३ ॥

दुहा.

इम तुझथी विपरीत जे, तुझथी लाजे जेह,
ते सुत ऋद्धिथी मद किस्युं, तेहस्युं किस्यो सनेह ॥ १ ॥
सगा सणाजाजातीनो, गुण नावे पर काज;
एक सगो भूखे मरे, एकतणि घरि राज. ॥ २ ॥
अत्रि नयनसी उपनो, तुझथी जे पणि[1] चंद;
ते विवापने छेटडे, तुझने किस्यो आनंद. ॥ ३ ॥

---

१ पण.

निज गुण होय तो गाजीए, पर गुण सवि अकथ्य[1];
जिम विद्या पुस्तक रही, जिम वली धन पर हथ्य. ॥ ४ ॥

बीजु तुझ नंदन कह्या, निति निति[2] घटति जाय.
राते केवल तगतगे, दिवसे अगोचर थाय. ॥ ५ ॥
मोटी जसकीर्ति कला, पर उपगार विसेस;
अक्षय अखंडित सर्वदा, मुझथिमे सवी देस. ॥ ६ ॥

ढाल.

इडर आंबा आंबलिरे ए देशी.

सायर कहे धारण सुणोरे न धरे मुझ गुण सार;
बाहे पूरा दुधमांरे, फहेतो दोष विचार.
सबल एम न मान्यगनि वात,
तुम करे मुझ गुण ख्यात. मुझ मोटाइ छे अवदात. सर० ॥१॥
जे दिन कूप सरोवरे, सुंके नदी अने निवाण;
भर उनाले ते दिनेरे, वाधे मुझ उफान. सर० ॥ २ ॥
मछल मताप रविकरणेरे, नवि सुके मुझ नीर;
मेरु अगनथी नवि गलेरे, जो पिण हेम शरीर. सर० ॥ ३ ॥
हुं संतोष धरी रहुंरे, अविचल ने थिरथोभ;
लाभ रहित भमतां रहेरे, धारण तुं रहो अति शोभ. स० ॥ ४ ॥
निरातंक गंभीर छुंरे, नवि लोपुं मर्याद;
हुं मुझ गुण जाणे नहींरे, स्युं तुझ स्युं मुझ वाद. सर० ॥ ५ ॥
धारण करे सुण सायरे, नवि मरे मुझ दांन;
उनाले जल अति वधेरे, तिण नवी आवे कांन. सर० ॥ ६ ॥
मोर न पांडु मोतरीरे, एम कह धरे मन;

---

१ अहंकार २ भिन्न भिन्न

भूलुप करयो पट सुत मुनिरे, तिहां न रही तुझ टेक स० ॥ ७ ॥
एक एकथी अतिघणारे, जगमां छे बलवंत;
तुझ सम जगमां को नहिरे, इम कोय म धरो तंत. स०॥ ८॥
सहस नदी घन कोडथीरे तुझ नवी पेट भराय;
तुं नित्य भूख्यो रहेरे, किम संतोषी थाय. स० ॥ ९ ॥
शसि सूरज घनपरि अमेरे, ममे पर उपकार;
भागे अंगें तुं रहीओरे, हसवुं कई गमार. स० ॥१०॥
परहित हेते उपगारी, सरज्या सज्जन सार;
दुर्जन दुखीया आलसुरे, फोकट फूलणहार. स० ॥११॥
निःकारण निति उच्छलेरे, वलगे वाउल जेम;
हृदयमांहि घणु परजलेरे, सीमावंत तुं केम. स० ॥१२॥
साचुं हुं गंभीर छे वे, नावि लोपे मर्याद;
पिण तिहां कारण छे जुओरे, स्युं फूले निसवाद.स०॥१३॥
विकट घपेटां विहु दिसेरे. वेल धर दीई तुझ;
मर्यादा छोपें नहीरे, तेहथी ए तुझ गुज. स० ॥१४॥
पर अवगुण निज गुण कथारे, छांडो विकथा रूप;
जाणुं छुं सघलु अमेरे, सायर तुझ सरूप. स० ॥१५॥

दुहा.

कहे मकराकर म करि तुं, मवहण मुझस्युं होड;
में तुझ सरणें राखीओ, तो पामी धन कोड. ॥ १ ॥
आसंगो नावि किजीए, जेहनी कीजे आस;
नरपति मान्यो पिण रहे, आप गुलाजइ दास. ॥ २ ॥
सरणें राख्यो चंदनें, जिम मृग हूओ कलंक;
तिम तुं मुझने पिण हूओ, कहतो दोष निःसंक ॥ ३ ॥
सुंदर जाणी संग्रहीओ, हुआ ते निगुण निभूक;
उथापें नज · - ~ज मोटी चूक ॥ ४ ॥

ढाल.

वाहण कहे सरण जगि धर्म विण को नहीं,
तुं सरण सिंधु मुझ केणी भांति;
शरण आव्या तणी सरम ते नवि रहें,
जेह जाया हुई सुजस रांति वा० ॥ १ ॥
काल विकराल करवाल उलालतो,
फूक भूंके मवल व्याल सीरासि;
जूठ अति दूठ जन मूल सरडो हतो,
धर्म महिप सांभरइं जेह निरांसी. वा० ॥ २ ॥
चोर करि सोर मलधारिया धारिया,
भारिया क्रोध आव्यें हकार्या;
भूत अभूथुत यमदूत यम भयकरा,
अंजना पुत नूतन वकार्या. वा० ॥ ३ ॥
हाथि हथिआर सिर टोप आरोपिया,
अंगि सन्नाह भुज वीर वल्यां;
झलके वई नूर दलपूर, विंदु वव मल्यां,
वीररस जलधि ऊधांण वलियां. वा० ॥ ४ ॥
नीलसितपित अविस्याम पाटल धजा,
वसन भूषण तरुण किरण छाजेः
मानुं बहुं रूप रण लछि हृदय स्थलें,
कंचूआ पंच वरणी विराजे. वा० ॥ ५ ॥
भूर रणतूर पूरे गयण गडगडे,
आथडे कटकनी सुभट कोडीः
नावस्युं नावरण भाव भर मेलवी.
केलवी घाउ दीइं मुझ मोडी.

निशितशर धीर जलधार वरस्यें घणुं,
संचरे गगन बक धवल नेजा;
गाज साजे सघल ढोल ग्गजे सबल,
वीज जिम कुंत चमके सतजा. वा० ॥ ७ ॥
क्रूर रसस्तर गज कुंभ सिंदुर सम,
रुधिरनां पूर अविदूर चालें;
स्वर भूरई समर भूमि सुरण परिसीस,
कायर धरा हेठ घाले. वा० ॥ ८ ॥
भेद प्रमंड शत खंड जे करी शके,
उच्छले तेहवा नाल गोला;
वरसता अगन रण मगरोसे भर्या,
मानुं ए यमतणा नयण डोला. वा० ॥ ९ ॥
घोर भूंके महा क्रोध मूंकइ वलि,
वाहण उपर भरी अगन होका;
कोकवाणे चढें सुभट रण रस चढे,
बिरुद गाई तिहां बंदिलोका. वा० ॥ १० ॥
उसरी घोर जालि सोर बहु पाथरइ,
अगन तिहां सबल लागे;
घालतो गालतो टालतो दर्प तुझ.
तेह तुं देख तो किम न जागे. वा० ॥ ११ ॥
शेष पिण सलसले मेदिनी चलचले,
खलभलई शैल ते समर रंगे;
लडथडे मीरू इक एक आगइ पडे,
सुभट सत्राइ माहन अंडे. वा० ॥ १२ ॥
घोर रण जोर चिहु ओर भट फेरवे,

जो हवइ न रहिस्ये निंदा करतो, मर्म उघाडिसि माहरा फिरतो;
पोत तरंग घुमरमां बोळी, तो हुं नाखीस तुझनइं ढोली. ॥ २ ॥
तुझ वीण मुझ नवी हास्ये हांणी, तुझ सरिखा बहु मेलीस आंणी।
जो अखूट छे नृप भंडार, तो चाकरनो नहीं को पार. ॥ ३ ॥
उष्ण अगन तापे हुइं गाढुं, जेह स्वभावें जल छे टाढुं,
तिम तुझ मर्म वचनें हुं कोप्यो,खिमावंत घुरनें आरोप्यो. ॥ ४ ॥
मोटास्युं हठ वाद नीवारयो, निनि मार्ग ते सें विसारयो;
मुझ कोपें तुं रहिय न सकइ, परे एकल हरी नइं धकेंड. ॥ ५ ॥
कोइ तरंग शिखर परि वायें, जइ वाफीर इते अंबर आघे;
एकतरंग सबळ न मागइं, काज घणा हुं स्युं इम लागे. ॥ ६ ॥
पवनझकोळे दिइ जळभमरी, मानुं मद मदिरनी घुमरी;
तेहमां शैलशिखर पणि तूटइं,हरि सप्या फणी बंध छुटइं. ॥७॥
नभ चक्र पाडिन अनुघ उछळता, आछोटइं मुछ जई लागे.
अंबर जळ कणीया छमकइं,ग्रहगण गण ताना मणीया.॥ ८ ॥
हवे मुझ कोपे तुझ सर्व,गळस्यें जे मनमां छे गर्व;
जे बोले असमंजस भाषा,ते फळसे मयंकी सन शाखा ॥ ९ ॥

दूहा.

शाहण कहे मन गमते, मायर पाछुं जोर;
माछे ते कांम्युं वृथा, कृमी कई बंध ॥ १ ॥
वचन गुमान तुझ मांगया, मायनका शिर धाय;
देनां काच्छा कांडीइ. तिमना दृढ ने धाय ॥ २ ॥

ढाल.

मायर स्युं तु उच्छळे, स्यु उछे छ जार;
गरव वचन हुं नहीं सहु, टस्यु उपर वाक ॥० ॥ १ ॥

वात प्रसंगे में कहिया, उत्तर तुझ सार;
मर्म न भेदिया ताहरा, करि हृदय विचार. सा० ॥ २ ॥
निज हित जाणी बोलिइं, नवि शास्त्र विरुद्ध;
रसोपरि वाळि विष भलो, पणि कहीइं शुद्ध. सा० ॥ ३ ॥
छिद्र अमारां संवरे, तुं किहारे गमार;
छिद्र एक जो वनुं लहिइं, तो करेरे गमार. सा० ॥ ४ ॥
शोकनी परें नीत अम्हतणा, ताकें तुं छिद्र;
पणि रखवाळो धर्म छे, ते न करें निद्र. सा० ॥ ५ ॥
बोडें शरणागत भणिं, जे नीर मझार;
कठिन वचन मुख उच्चरें, ते तुझ आचार. सा० ॥ ६ ॥
पणि मुझ रक्षक धर्ममां, नाहि तुझ बल लाग;
जेहथी मुझ बुडे नहीं, भंग वावनमो भाग. सा० ॥ ७ ॥
मनमां स्युं मुझी रहीओ, स्युं माने निःशंक;
अम्ह जातां तुझ एकलो, उगस्ये तो पंक. सा० ॥ ८ ॥
हुं घर समरथ छइं, करवा असमरथ;
श्रम करवो गुण पात्रनो, जाणे गुरु हत्थ. सा० ॥ ९ ॥
हंस विना सरवर यथा, अलिविन जिम पद्म;
जिम रसाल कोकिल विना, दीपक विण सद्म. सा० ॥१०॥
मलयाचल चंदन विना, धन विण जिम ढंग;
सोहे नहिं तिम अम विना, सा तुझ वैभव रंग. सा० ॥११॥
गगन पात मदथी मुझ करि, उडा पय वीगेरी;
जिम तुझ वधा, कल्पित मद धायें. सा० ॥१२॥
उन्हो स्युं धाइ इपा, मोटाई जेह;
तेजो बेहु भली इर, बेहु पजसनेह. सा० ॥१३॥

---

१ रयो.

दुहा.

राजा राज्य प्रजा सुखी, प्रजा राग नृप रूप;
निज कर छत्र चमर धरई, तो नवी सोहे भूप. ॥ १ ॥

मद झरते गज गाजते, सोहे विंध्य निवेश;
विंध्याचल विण हाथीआ, सुख न लहे परदेश. ॥ २ ॥

अगजेंय[1] वन ते दूर, सिंह करें जिहां वास;
वनने कुंज छाया विना, न लहें सिंह विलास. ॥ ३ ॥

हंस विणा सोहे नहिं, मानस सर जलपुर;
मानस सरवर हंसला, सुख न लहें मह मूळ. ॥ ४ ॥

इम सायर तुझ अमथीली, मोटाई विहु परिख्य;
जो तुं चूकइ मद कर्यो, तो तुझ सम गुन लख. ॥ ५ ॥

हंस सिंह करिवर करे, जिहां जाइ तिहां लील;
सर्व ठामि तिम सुख लहे, जे छे साधु सुशील. ॥ ६ ॥

सायर कहे तुझ गुज विना, भरी न सकें डग्ग;
तुझ प्रसाद विलसें घणो, हु दिओ तुं तुझ मग्ग. ॥ ७ ॥

तुझ साहसुं बोले घली, जो तुं छांडी लाज.
तो स्वामी द्रोहातणीं, सील होस्ये तुझ आज. ॥ ८ ॥

वाहण कहे सायर सुणो, स्वावि ते संसार;
गिरुओ गुण जाणी करइ, जे सेवे नीसार. ॥ ९ ॥

भार वहो जन भाग्यनो, बीजो स्वामी मूढ,
जिम खरवर चंदन तणो, एतुं जाणे गूढ. ॥ १० ॥

---

१ अगजेन्द्र.

ढाल.

भोलिढारे हंसारे वि० ए देशी.

परवें सयणेरें हवे कोपेइ चड्यो, सायर पाम्योरे खोभः
पवन झकोलेरे जल भर उच्छली, लागे अंबर मोभ. एहवे० १
भमरी देतांरे पवन फीरी फीरीरे, वाले अंग तरंग.
अंबर वेदीरे भेदी आवता, भाजे ते गिरिशृंग. एहवे० २
भूत भयंकर सायर जब हुओ, वीज हुई तब हास;
गुहिरों गाजीरे गगने घन करे, डम डम डमरु विलास. एहवे० ३
जलनइ जोरइरे अंबर उच्छलई, मच्छ पुछ करी वंक;
वाहण लोक नइरे जो देखो हुइ, धूमकेतु शतसंक. एहवे० ४
शेष अगननोरे धूम जलधि तणो, पसर्यो घोर अंधार;
भयभर त्रासेरे मस्तक परितदा, वाहणना लोक हजार. ए हवे० ५
गगन चढावीरे वेग, तरंगनें तले घालिजेरे पोत;
त्रट त्रट तुटेइरे बंधन दोरनां, जन लखजो तारे जोत. ए हवे० ६
नांगर त्रोडीरे दूरि नांखीइं फूल तणा जिमविंट;
गगनउलालीरे हरिइंपाजरी, मोडि मंडप मिंटि. ए हवे० ७
छुटे आडारे बंधन थंभनां, फूटइ बहु ध्वज पंड;
सूरु वाहण पणिछो तापरि हुइ, कुया थंभ सत खंड. ए हवे० ८
सबल शिला वचि भागा पाटीयां, उच्छलते जल गोट;
आश्रित दुखथीरे वाहण तणो हूओ, मानु हृदयनो फोट. ए हवे० ९.
ते उत्पातेरे प्रलय परि हुंति, लोक हुआ भयभ्रांत;
कायर रोवेरे धिरवे धृत धरी, परमेश्वर समरंत. ए हवे० १०

दुहा.

इमसायर कोपे हुओ, देखी वाहण विलख;
विचि आवि वाणी वदे, उदधि कुमरनां करक.

पारण न कीजे सर्वथा. मोटा साथे झूझ;
जो जिपुं तो फल लह्यो, मुझे काई अशुभ. ॥ २ ॥
तुमथी कोप न उपर्यो, थाइ जाण अजवेल;
इम मांगि हित चाहतो, करि समुद्र स्युं मेल. ॥ ३ ॥

ढाल.

ममणी माम करे जल्पराज ए देशी.

संकट विकट लइ गयइं, फिर गत थई थामई तुम;
तुर सागर जो विचई तो गुणे तुम थंडित आस,
मोह करे मतिहीन विमास. सागर जो० १
तुम लयता टलस्यें तत क्रोध गिरया ते मन गरज्ञ सायुध सा०
वहिइ साहिब माण अभंगा आप करी नई नथी आ संग. सा० २
गत गाजे अंतग मंडर्गन हेगई तेनी इगइगीत. सा०
साहिब मुनि जस मर अंडार गमकु निजागमन थाइ गरार. सा० ३
जे परंपरें मोटा कीधा, तेहनी सागरनी सुप्रसिद्ध. सा०
ते साहिबनी रिजं मन हांडि नर्मा नवी त्रिमे देव. सा० ४
सपद अं दातु दुःख देर [illegible] तेहने ममथेर. सा०
[illegible] तहने [illegible] साहिब [illegible] जाय. सा० ५
[illegible] दरव इसप [illegible] नई मन; सा०
ते साहिब [illegible] भगुराग. सा० ६
[illegible] दर्शोवदार. सा०
[illegible] साहिब [illegible] दीवार. सा० ७
[illegible] नई नई; सा०
[illegible] सुतिर सा० ८
[illegible] सा०
[illegible] पाया तुम शाम. सा० ९

दुहा.

सायर सेवक देवनी, साम भेदनी वाण;
वाहण एहवी सांभली, वहे मान मनि आण. ॥ १ ॥
पण तुम्हे पोतो करो. निज साहिबनो टेव;
गुण अजांणनी परें हरी, पणि एहनी सेव. ॥ २ ॥
मत जाणो ए संकटे, मान टलें अम्ह आज;
जे अमे साहिब आदर्यां, ते वहस्यें अम्ह लाज. ॥ ३ ॥

ढाल.

नाभिरा थांके बाग चंपे मोर रहोरि—ए देशी.

श्री नवखंड जिणंद, तेहनो सरणागि भोरी;
घोघा मंडण पास, साहिब तेहनि ओरी. १
जेणें निज तनुं नव खंड, देखा आय हलोरि;
ते हत्तु हुत तनुं खंड, मेलव्यें भगति भलेरे. २
उमास मदर थार, सुरनर सेव करेरी;
जे समरयो तत्खिण, संकट सबल हरेरी. ३
अरि घरि वैसरी आणि, अरिजन रथु हलारी;
अदभुत एह साहिब, सरव सुखारी. ४
ते जे त्राणहार, रवि पनी मेहेरेरी;
इन्द्र अमर मुनि हद. [illegible] ५
[illegible]
[illegible] ६
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

कोइ नहीं मय मुझ जो प्रभु चित धरोरी;
जाओ तुम उदधि कुमार, सायर मेलकीसोरी. ॥ ९ ॥
जे साहिब शुभमय कादिरे न रोसमजीमोरी;
ते अर्थे संल्यो दूत, सायर दूरित्यजोरी. ॥ १० ॥
आसपूरण प्रभु पास, हरस्ये चित्त पतीरि;
लहस्युं जगजसवाद, आरति नहीं अरतिरी. ॥ ११ ॥

दुहा.

इणी आकाँनइं पर्भने, तूठा सुर अनुमान;
कुसुम वृष्टि ऊपर करे, अंबर परी विमान. ॥ १ ॥
सुरि मार्थे धन धन्य तूं, तुझ सम जगि नहीं कोइ;
जुगनइं करवी धर्म मति, संकट आवे होइ. ॥ २ ॥
हरख नहीं वैभव लहे, संकटि दुख न लगार;
रण संग्रामे धीरजे, ते विरला संसार ॥ ३ ॥
एम प्रसंसा सुरकरी, हल्लें सबी बलवान;
फिरि सात भवनी बन्यो, हुआ मना भवदान. ॥ ४ ॥
सुरवर जमसानिध करें, नेहस्युं निमि दिस;
इम सायर धर्णी उदसमी, धरइ बाहन जिम शीस ॥ ५ ॥

ढाल फागनी.

हरमित दवदशाहि हुआहो कन्या कांदिक ढ़ांज;
हठी बाहनर्थी भारठाहो जिन हुआ न मनगाज. ॥ १ ॥
प्रभु पामनी नामर्थी दूण ठनाइ इ. बना बति कुलवा;
मंदि मन्वो पुण भवाग. नभु मंग ॥ २ ॥
दिवा आरमा भांत घमा हा कसर्दि नरुप्राय.
मानु भकट रदनी नरन नाम वांा पुन्य बाह नभु ॥ ३ ॥
मतो रव्यष ररना वदि मदन नर, पानदिद्र देन.

वातें फिरत अंबर पताका, उज्वल फरिहरया केतु प्रभु०॥ ३ ॥
ध्वजथंभ शिरि सकाकीओहो, मानुं नाचको वंस।
नाचें फिरथी नर्तकी हो, श्वेत अंशुक धरी अंस. प्रभु० ॥ ४ ॥
सोहे मंदिर चिहुं दिसें हो, पट मंडपचोसाल;
मानुं जगलछीतणो हो, होत विहार विसाल. प्रभु० ॥ ५ ॥
बेठो सोहे पांजरीहो, ध्वजथंभ अग्र भाग;
मानुं के पोपट खेलडोहो, अंबर तरुभर लागि. प्रभु० ॥ ६ ॥
नव निधान लछि लही हो, नवग्रह हुआ प्रसन्न;
नव सट हाण्दा ते भणी हो, मोहीं तिरांजन मन. प्रभु० ॥ ७ ॥
हावे भावे नावे बहुजन, सब ही बनावत साज;
बाजे बाजा हरखना हो, पाम्युं ते अभिनव राज. प्रभु० ॥ ८ ॥
मेघाडंबर छत्र बिराजे, पट मंडप अति चंग,
वींजे बिहु पखसोहोहो, चामर जलधि तरंग. प्रभु० ॥ ९ ॥
एक बेठि सायर तणी हो, दूजी जनरंग रेही;
त्रिजी पवननी प्रेरणा हो, बारण रहे जिनगेहि. प्रभु० ॥ १० ॥
पवनाधिप दूजो वधो हो, पवन निवासो हि.
तन मन हुवा थीरहो, वेग विना अति हेज. प्रभु० ॥ ११ ॥
थाये छप्पन दिहुं दिसे हो, आवय देवी न्हाय;
मानुं जिनकना लोकनांहो, नाचें हालिड़ धरी लाड. प्रभु० ॥ १२ ॥
हलिहरे बहुआडंबरे, एहवो वारण हुविन्ना;
जिन हाजि मंदिर करीहो, पम्या ते हुक्म न्हान. प्रभु० ॥ १३ ॥

चोपाई.

[illegible]
[illegible] १
[illegible]

सोनइया नविजाए गण्या, रुपाराल तणी नही मणा. २
मोल्यो मोती तिहां वहू मूल. मानुं ज्यार न्तानुं फूल;
पासे मांडी मरकत हारि ते सोहे अलिकुल अनुंहारि. ३
लाल कांति पसरे तिहां सार भूमि लह लाली बाजार;
मानुं आवि कपच्छा रंगि, नाव चरण अलतानइ संग ४
रयण पारखि परखी पासि, करे रयणनी मोटी रासि;
परखे नाणां नाणावटी, करें रेंड जिम सुरगिरि तटी. ५
विविध देस अंबर अनुकुल, दोसि विस्तारे पटकुल;
चीन मसजरनें जर बाफ, जीपे रवि शशिकर ओ साफ. ६
सोवन तंतु खचित पामरी, जे पासें भीका भामरी;
मांगेरो इणगिरिना कंति, ते जोतां पुहुंचे मन खंति. ७
जिमवसंत फूले मणीआर, मणि माला मंडइ मणीआर;
तेल फूलेल सुराहि आभरइ, तस सुवास अंबरि विस्तरे. ८
कस्तुरी आकुल तोलत, सौरत निश्चल अलि गुनंत;
नवि जांणे तिहां लीनो लोक, सोर जोर करतें जन थोक. ९
केसर छवि अगनि तनु धरी, मानुं धीज कस्तुरी करी;
टाली नीच घणा निशंक, तो आदरिइ जगिनि कलंक. १०
अंबर चंदन अगर कपुर, गंभित धरणी परिमलपूर;
मानुं ते भारे नविफरे, अलि गुंजित आक्रंदित करें. ११
घणां वखाणांनो विस्तार, ते कहेतां नवि लाभे पार;
सुरलो कंइ पणि न मिलइं जेह, ते लहिइं तिहां वस्तु छेह. १२
पखेण मे विस्तार, दरिआ समगाजइ बाजार;
तिहां व्यापार कया अति घणा, मुलि लाभ हुआ सो गुणा. १३
लोक थोक जिम वेलि भराय, एक एकना हृदय दलाइं;
तर्पा वखाणें निज निज जिहाज, कीधो घर आव्यानो साज.१४

ढाल.

(गच्छपति राजिआ हो लाल—ए देशी.)

भरियां किरियाणां घणां हो, हीरचीर पटकूल;
वेल्यां निज बंदिर भणी, हवे वाहण पवन अनुकूल. १
हरखित जन हुआ हो लाल, पाम्या जय तांसारि सुखलील; आ०
दोय पंखि जिम पंखिआ हो रथ जिम दोय तुरंग. ह० २
रणकइ ध्वजवणीकिंकीणी हो, कनक पत्र झंकार;
वाहण मिसें आवे रमा, मानुं गरुड करी संचार. ह० ३
वापइं जलओलंबिइं हो मानुंसरे मदपूर;
वाहण चडे जिम हाथिओ, सिरकेसर छवि सिंदुर. ह० ४
भरयसी सगर नारीइं हो, बाहिर तेह न जाइं;
पवने वेगे चालिआं मनि वाहण हरखइ न माइ. ह० ५
वाहण भाणरखुं तोली हो पर स्वर गणी सार;
तुला दंड थंभे करी, जोइ लेजो वह विचार ह० ६
कामिकराई जिम कामीनि हो हृदय स्थल परिणाह;
सायर तिम अवगाहतां रवइ वाहण चल्या उच्छाह ह० ७
गुन जितपो सायर रहूओ हो सहजे आनिघकार;
देल्यां बंदिर आपणां, हवे हुआ जय जयकार. ह० ८
बंदिर देखि वावटा हो धरिया लाल अग्र भाग;
मानुं वहुं दिननो हुंतो, तेह प्रगट कीओ चित्तराग. ह० ९
बंदिर देखि हरखइं हो, मेहलि नाली आवाज;
जे आगइं सुर गज्जतो बलि देहनो रयो गाज. ह० १०
वाज्यां वाजां हरखनां हो, दो नाद गीत गान,
पद पंदे पुरिसे लिइं मानुं नादवरनमान ह० ११
मारमा मिलवा आवीया हो, सज्जन तेह नाव।

अंगों अंग मिलावडे, सो टळियां विरह भाव. इ० १२
आव्या वाहण सोहामणां हो, धे घा बेला कुल;
घरघर हुवा वधामणां, श्री संघ सदा अनुकूल. इ० १३
वियारा व्यवहारी भेटे मुदा हो, प्रथम पाम नवखंड;
सुरभि द्रव्य पूजा करे, लई केसरने श्रीखंड इ० १४
मोतीना कर्या साथीयाहो, आंगीरचण बनाव.
ध्वजा आरोपी अतिभली, पलिक कलश सुरिभाव इ० १५
इण परि जेहना द्रव्यना हो, आव्यो मयुनो भोग;
सायरथी मोटुं करओ तेजिराज मिलि सवि लोक. इ० १६
ए उपदेश रच्यो भलो हो, गर्वत्याग हित काज;
तपगच्छ भूषण सोभतां, श्री विजयप्रभसूरिराज. इ० १७
श्री नयविजय विबुद्ध तणो हो, सीस भणे उल्लास.
ए उपदेसे जे रहे, ते पावे सुजस विलास. इ० १८
मुनि विधुय संयम जाणी यहो, ते हर्ष प्रमाण;
कवि जसविजय ए रच्यो, उपदेश चयो सुपमाण इ० १९.

इति यानपत्र यादरत्नयोः परस्परं मत्सरयसंवादात्मकः समाप्तः॥
श्री थोथा बंदिरे.

श्री योगनिष्ठबुद्धिसागरेण शोधितम्.



पन्नरस तापस भवि, गोतम दीक्षा दीध;
ते केवल कमलावरे, कोन क्रिया तीन कीध. १२
कृतअपराध खमावती. निजगुरणी के साथ.
मृगावती शुद्ध भावमें, सिद्ध स्वरूप सनाथ. १३
साधुक्रिया केसे सधे, घाणीमें पीलंत;
शुद्धभावते शिवलहे, खंदक शिष्य महंत. १४
नाच नचन किरिया करी. साध क्रिया नही कीध.
अषाढभूति भावशुद्ध, सिद्ध सुधारस पीध. १५
ते दिन दीन दिसा ग्रही, क्रिया कौनसी होय.
ये शुद्धभावे सिद्धता, गजसुकुमाले जोय. १६
गुणसागर केवल लह्यो, सांभल प्रथवीचंद;
दोने केवल पद लहे, शुद्धभाव शिव संध १७
हिरणी भले शरीर जब, मुनि करणी किम होय.
साथ सुकोमल शिव लहे, कारण अन्यन कोय; १८
खंदक खाल उतारतां, साधु क्रियाकी सिद्ध;
भव निवास तज भाव शुद्ध, सिद्ध बुद्ध पद लीध. १९
दरजनो अेक पहोरमें, केवल ज्ञान अनंत;
भाव अशुद्ध ते नव लहे, श्रीदमसार महंत. २०
असंख्यात दृष्टांतहें, कोलु वरणे जाय;
ये जेने बुद्धिमें धरे, ते ते दीप बताय. २१
भाव शुद्धता सिद्धको, कारन निर्नु काल;
क्रिया सिद्ध कारण नहीं. निश्चयनय संभाल. २२
ज्ञान सकल नव भावीव करणी दर्मी भाय;
शुद्ध भावना सिद्धता. कारण करन कहाय २३
ज्ञानातम समभाव है किरिया जड सर्वथ;

भाव छतीसी भविक जन, भावे भज निज भाव;
निज सुभाव भवोदधि, तरन नाव शुभभाव, १७
शरस गम शशी संवते, गौतम केवल लीन;
कीसन पदे चोमास कर, संपूरन रस पीन. १८
अति रति श्रावक आग्रहे, विरची भाव संबंध;
रत्नराज गणि सिस मुनि, ज्ञानसार सुचि नंद. १९

इति श्री भावषट त्रिंशिका समाप्ता.

गुंहली.

हांरे मारे ठाम धरमना साडा पचवीस देशजो–ए देशी.

हांरे सखी नगरीमां आव्या छे गुरु गुणवंतजो,
भाव धरीने वांदो तेने वंदवारे लोल;
हांरे ते तो रत्नत्रयी आराधक सद्गुरु संतजो,
जस मुख जोतां दीन जाए आनंदमांरे लो. १
हांरे वचनामृत जेनुं पुष्प नक्षत्रनो मेहजो,
सींचेरे भविजन मन रूपी भूमीकारे लो;
हांरे करे प्रफुल्लीत विकसित कमळतणीपरे तेहजो,
टाळेरे अज्ञान तिमिर रवि उगतांरे लो. २
हांरे जस नाम प्रमाणे गुणगणनो नहि पारजो,
बुद्धिसागर बुद्धिना निधि हुं कहुंरे लो;
हांरे वळी पंचमहाव्रत पाळे शुद्धाचारजो,

पण जाय न प्यारी, हृदय विहारी, अद्भूतकारी, अमरामर!
जय जय योगाकर, बुद्धिसागर पूर्ण प्रभाकर, प्रेमाकर. ३
छो शुभ संस्कारी, मद मोहारि, धर्म प्रचारी, क्रोधारि,
दुर्जन संगारि, दुर्गुणहारि, तत्त्वागारी, तृष्णारि;
भगवत् भजनारी, वृत्ति तमारी, सदैवसारी, भजनाकर!
जयजय योगाकर, बुद्धिसागर, पूर्ण प्रभाकर, प्रेमाकर. ४
जेनी थिति जळमां, वसुधातळमां, प्राणिसकळमां, ने पळमां,
वळी दावानळमां, तळ वितळमां, द्रव्य सकळमां, ने छळमां;
ज्ञानीना दळमां, रहि सहु पळमां, ते विभु दिल्मां, तत्त्वाकर!
जयजय योगाकर, बुद्धिसागर, पूर्ण प्रभाकर, प्रेमाकर. ५
धीरज धरनारा, प्रभु भजनारा, तारण हारा, तरनारा,
यहु कर्या सुधारा, सुख करनारा, संकट भारा, हरनारा;
बहु भक्ताधारा, जय करनारा, सद्‌गुरु सारा, स्नेहाकर!
जयजय योगाकर, बुद्धिसागर, पूर्ण प्रभाकर, प्रेमाकर. ६

दुहा.

छुं हुं आपतणो सदा, आज्ञा शिर धरनार;
हे सुंदर श्री सदगुरु, उतारो भवपार. ७
निर्जितेन्द्रिय सकळ गण, निर्जित विषय विकार;
अजित सागरनी वन्दना, होशो वारंवार, ८
संवत् विक्रम ओगणिश, पांसठ शान्त सुहाय;
अधिक कृष्णनी अष्टमी, पट्टकथी सुम थाय. ९

लेखक—श्री बुद्धिसागरजीना शिष्य—अजितसागर,

संवत १३२७ मां रचाएलो गुर्जर भाषा साहित्यनो रास.

॥ श्री सात क्षेत्रनो रास ॥

॥ ॐ नमो वीतरागाय ॥

सवि[1] अरिहंत[2] नमेवि, सिद्ध[3] सूरि[4] उवजाय[5]

पनर कर्म भूमि साहु[6], तीह पणमिव पाय ॥ १ ॥

जिणसासणमांहिं जो सारो, चउदह पूरवतणउ समुधारो

समरिउ पंच परमेष्ठि नवकारो सप्त खेत्रि हिव[7] कहउ[8] विचारो॥२॥

धुनु[9] धुनु तेजि संसारे, जिहं[10] जिणवरु[11] स्वामी,

गुरु सुसाहु[12] जिणभणिउं[13], धम्मु[14] सुगइ गामी[15] ॥ ३ ॥

चारि अंगि दुलहु[16] मणु जम्मु[17], अतीअविशेषि (अत्यंत विशेषे) जिहि[18]

---

१ सर्व. २ अरिहंत=तीर्थंकर. ३ सिद्ध=अष्ट कर्मथी रहित परमात्मा. ४ सूरि=आचार्य. ५ उवजाय=भणावनार उपाध्याय. ६ साहु=साधु. ७ हिव=हवे. ८ कहउ=कहु. सर्व अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय अने पन्नर कर्मस्थित साधु ए पंच परमेष्ठिना पादमां नमस्कार करीने सात क्षेत्रनो विचार कहुं छुं. पंचपरमेष्ठिरूप नवकार छे ते जिन शासनमां सार छे. तेमज चौद पूर्वनो समुद्धार छे. ॥ २ ॥ ज्यां जिनेश्वर स्वामी छे ते देव तरीके छे. सुसाधु गुरुरूप छे. सुगति देनार जिनकथित धर्म ए त्रण रत्ननी जेने प्राप्ति थइ छे ते जीव जगत्मां धन्य धन्य छे. ॥ ३ ॥

९ धुणु धुणु=धन्य धन्य. १० जिहं=ज्यां. ११ जिणवर=जिनवर. १२ सुसाहु=सुसाधु. १३ जिणभणिउं=जिनभणित. १४ धम्मु=धर्म. १५ सुगइ गामी=सुगति गामी. १६ दुलहु=दुर्लभ. १७ मणु जम्मु=मनुष्य जन्म १८ जिहि=ज्यां. १९ धम्म=धर्म.

जिणवर धम्म[19] सम्मतरयणु[20] विति निवसय जीह, सोहग उपरि मंजरि तीह् ॥४॥
पुणु[21] जिणसासणु[22] दुलहउं जीव संभलि कयं तु निरुपमु[23]
नाणुपहाणु[24] पक्कुजि जिनवर धम्मु ॥ ५ ॥
भरहखित्ति[25] खट्खंडह[26] "घिन्निकेवलि[27] नाणि" जिणवर जंपित
वैताढ्य परहां त्रिखंड होइ, तहि धरमनाम्नुनाणुनवरतहोइ॥६॥
उल्या[28] त्रिहुखंडि थित्ति (थिति;) केवलि इम आपय, (भापइ;)
ताहमाहि दुनि पंडने पडिया पापइ ॥ ७ ॥
पजि पंडइ कुवइनी मडिउ, तेउ त्रिहुभागि पाछइ पडिउं,
चउथउ भाग धरमनइ लागे. तेउ जोइ जईसय विभागे ॥ ८ ॥
ते न धाटंणवइभाग साहू, मिथ्यातिहि जडिन थाकतउं
कुमति कुबोधि कुगुरुगहि पडिउं ॥ ९ ॥
योडा जीव केई दीसइ तेजे जिणन भणअंमनिहिकरंति हिव[29]
तिहुयणिहि[30] साह समिकत्तो पामिउ जीवि जिनमणि उत्ततचो[31]॥१०॥
बार वरततईं पामिउ जे जिणवरि वुत्ता सुगइति
बंधण सत्ता जीव मुकति[32] दीपंता ॥ ११ ॥
माणातिपातव्रतु पहिलउं[33] होइ बीजउ[34] सत्यवतु जोइ

---

२० सम्मत्त रयणु=सम्यक्त्व रत्न. २१ पुणु=पुनः २२ जिणसासण=जिन शासन. २३ निरुपमु=निरुपम. २४ नाणुपहाणु=ज्ञान प्रधान. २५ भरहखित्ति=भरत क्षेत्रे. ६ पट् खंडह=छ खंड. २७ धिन्नि केवली नाणी=धन्य केवलज्ञानी. २८ चउथउ भाग=चतुर्थ भाग. २९. हिव हवे. ३०, तिहुयणिहि सारु=त्रण भुवनमां सार. ३१ तचो=तत्त्व. ३२ मुक्ति=मोक्ष ३३ पहिलउ=पहेलुं. ३४ बीजउ सत्यव्रतु=बीजु सत्य व्रत.

त्रीजइव्रति परधन परिहारो, चउथइ[३५] शीलतणउ सवारो ॥१२॥
परिग्रहतणउं प्रमाणु व्रतु पांचवइ कीजइ
ईणपरि भवपहसमुद्दो जीव निश्चय तरीजइ ॥ १३ ॥
छट्ठउं[३६]व्रतु दिसि[३७]तणउ प्रमाणु, भोगु[३८]वभोगव्रत सातमइ जाणु[३९],
अनरथ व्रतु दंड[४०] आठमउं होइ, नवमउं व्रत सामायकु तोइ ॥१४॥
देसावगासी दसमुव्रतु नयी मूह पोपध
व्रतु अग्यारमसउ जम समतूलु ॥ १५ ॥
व्रतुबारमउं अतिथि[४१]संविभागुओ तोइ सुकतिपरतनमागो
जईण[४२] मारगि चालइं संसारे, धनु[४३] सकिपारथें ते नरनारे ॥१६॥
समकितमूल व्रतु[४४] बारइ गाहिय धरमि पालेउ
सप्त क्षेत्रि जिन भणिया तिह वितु वावेउ[४५] ॥ १७ ॥
सप्तक्षेत्रि जिन कहिया[४६] महामुनि वितु[४७] वावेजिउ विवहपार जिन
वचनु आराधीउ अत्रकनु साथिउ लहइ पारु संसारुसारे॥१८॥
सपते क्षेत्रि जिनसासणिहि सगली कहीजइं, अथिरु रिधि धनु
इण्यु बीजनुनहि जिवावीजइ तेहि क्षेत्रि वावे त्रण थानकि
लाभइ देवलोको कणनी थाहरु मुक्तिफलो पामउ निसंदेहो॥१९॥

पहिलंइ[४८] क्षेत्र मुजिगइभुवण करावउ वंगृनीछे महिमाकरइ
महु श्री चउविह संघमृत्नाना रउ गृह मंडइ पुछ कुवडकी सहिउ

३५ चउ=चोथे ३६ छठ्ठं व्रत. ३७ दिशिनुं परिमाण ३८ भोगोपभोगव्रत ३९ जाण ४० अनर्थ दंड आठमुं. ४१ अतिथि संविभाग ४२ यतिना मार्ग ४३ धन्य. ४४ व्रत. ४५ वावो. ४६ कह्यां. ४७ वित्त ४८ पहेलुं क्षेत्र.

आगइ कीजइ रंगमंडपु[४९] जो पुस्तक कहिउ ॥ २० ॥

तेहिं आतरइ बलाणपु कीजइ आधेरउ जिमजिनभवनइ नालिमाहि दीसइ, नीकेरउंचउचंगतोरणु[५०] थंभ येरु घांटु अति· नीक उफडीयइ नानाविधि रूपि सारुवारु तहि नीकालु जडिउ॥२१॥

बिहु पक्ष फरती ' देहरी कीजइ इविरुडीव बीजमूर्ति जिन हतणीमाहि तेयड तेवडी कणयकलस दंड[५१] घांटीइं पजपूरीप[५२] किपजइ[५३] छोई पकत[५४] प्रासादु[५५] भलउ[५६] जीवनीपाइ वाजइ[५७] ॥२२॥

तहि जिनबारिं[५८] कमाडभलां कीजइ, आति सुविघट्ट मणहजाइ सुरतउ अनिघुघुटुसादुभार हदद्रागुणज आवइ[५९] संपुट तां कूंची सांकली अतिनीसलकीजइ[६०] जव आथमगह जाइ स्वरतउ ! संपट दीजइ[६१] ॥ २३ ॥

अतिति सपउ जिणहभुयणु[६२] किरिअमरविमाणु[६३] दीसइ[६४] सुरति वीतरागमाहि तिहुयणुभाणु[६५] कउणुरूप वीतरागतणु जोइ कवणु विशेषु[६६] अष्टप्रतिहारिज[६७] जिणहतणइ वृक्ष होइ अशोकु[६८]॥२४॥

---

४९ रंगमंडप. ५० उंचु तोरण. ५१ कनक कलश. ५२ ध्वज ५३ कीजे. ५४ पंक्ति. ५५ प्रासाद ५६ भलो. ५७ वाजे ५८ त्यां जिन बारणे. ५९ आवे. ६० कीजे. ६१ दीजे. ६२ जिन भुवन. ६३ अमर विमान. ६४ देखाय. ६५ त्रिभुवन भानु. ६६ विशेष ६७ अष्ट प्रातिहार्य (अशोक वृक्ष) २ सुर पुष्पवृष्टि. ३ दिव्य ध्वनि ४ चामर. ५ आसन ६ भामंडळ. ७ दुंदुभि. ८ छत्र. अष्टप्रातिहार्य छे तीर्थंकरने ए अष्ट प्रातिहार्य होय छे. ६८ अशोक

तउ सीलमइ करावीयइ जिनभवन ठवीजइ पारइ पीतलमइ भलांग्रिहिचैति पूजीजइ घरि देवालाइं करावीय तीकाइमणो हइ जीछे तिहूयण[87] सरण सामि[88] पूजीजइ जिणवर[89] ॥ २९ ॥

सुगंधि नीरि सनाधु करइजिण जीणि आणिदिहि ते मंसार इकसमलह नवि छीपइ, विदिय अंगलूहणे सूक्ष्मकरउ सुफरां बहु मूला नियसक्ति करावियइ जेवदेवंगनूला ॥ ३० ॥

कीजइ उरसुरूयडा सिरखंड मसेवा. कपूरवटे वाटीइ कपूर जितस्वी सुणि देवा, मुंकइ जिण भूयणिहि धाति अतिनीकी धूपीवालाकुंची जणी दुपीगाणी कूंपी. ॥ ३१ ॥

अति सुगंधिहि सिरखंडि कपुरिहिआंगी कीजइ सामी वीत राग मभु वनवन वर्त्तगी कसवूरिहिं[90] कुंकुमिहि[91] तितउ निलाडिहिं सामी तेण वितपरिफलइ छली अति नीकइ धामी ॥ ३२ ॥

आभरण घडावियइ सोव्रणमय[92] वडिया, हीरे[93] माणिकि[94] मोतीए[95] बहुरयणे[96] जडिया, अतिरूयडउं[97] आभरणतणउ भलउं[98] कीजइं संपूरउ नीकउं सिहरउं पूठिउं हूतलि अनइ मयूरउ ॥ ३३ ॥

कानिहिकुंडल सिरिसमुकुटुकिरि ऊगिउ[99] भाणू[100] जाणे तिहू-यणि[101] सयल[102] लोक आसिनवउं विंत्राणुं, उरपालहकंठिमांकलउ मुक्तावलिहार नयणि निहालिने वीनतरागु रूयडउ सुर सास ३४

पाहुजुयलि येउ वाहिरखा अतिनीका सोहइं टीलुउं श्रीवत्स

---

८७ त्रिभुवन शरण ८८ स्वामी. ८९ जिनवर. ९० कस्तूरिवडे. ९१ कुंकुमवडे. ९२ सुवर्णमय। ९३ हीरा ९४ माणिक ९५ मोति. ९६ बहु रत्न जडिया ९७ अति रूडुं ९८ भलुं. ९९ उगयो. १०० भानु. १०१ त्रिभुवने. १०२ सकल.

झल्पार मवियण मणिमोहइ सोनाकेरी पालडी कीन जिनपवे सोहइ वींमडहडं सामी जिण इच्छे ॥ ३५ ॥

इणि विवेहि न हुय विशेषि हि जिणवर पूजसलक्खणीय करइ मनरंगिहि नवनवभंगिहि श्री संघनयण सुहामणीय ॥३६॥

एवीअजीइ आभरणवणी पूजा नीपनी हिव आरंभि सुजिणह अंगि सुरहां कुसमपत्नी कीजइ कुसमेव गेरीयए पूजकारणि रूपडी वावरीइ दीहु देव काजि अत्र इच्छा जीछवडी ॥ ३७ ॥

रायचंपु, केवकी, जाइ, सेवती परिमल वउलि, सिरीवालड विअलु अनुकरणी पाडल, नीलडवी विविध पूजामाहि सोहइ अवि विगी विविधवि दीनइ रूयडे भिणि नवनवभी ॥ ३८ ॥

नीकड कणयर, पूजनाहि वरणाकि सोहंवी परिमलु पसरइ असननावि पाच्छइ विहसंवी कुंदु अनइ मचकुंदु वालु जुई परिनावे पास कुलमि कर पूजइ तुम्हि विहुयणरचो ॥ ३९ ॥

सुरहइ सहपइवादवी अअइ इकल्हार, सहुपइ वीतराग सामी सुरमार, नीलडवी नागवेलि पानमाहि जा सोहइ ईणपरिपूजइ सामि नामन नरनारी धन्न ४० ॥

पएहेंगमनीयइ पूजनोट नीशी मंहंनी नइ नमव [illegible] मान्हई [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आर्णी कुमन [illegible] [illegible] [illegible] ४१ ॥

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] वीनराग [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

३ मविजन ४ वीजि. [illegible] हुवे ६ वहुन ७ [illegible] ८ पहेंगमणी ९ नवनवमण्य. १० [illegible] ११ त्रिभुवनमार.

[illegible] नइरीसंरि दरसंनि हुयुक नइ भाव' भला ॥ ४७ ॥

दादर सहू श्रमण संघ मानव गुणवंता जोयइ [illegible]

[illegible] सनिहर धुधूधरंता नीछे [illegible] पटट बहु भाट पढंता

[illegible] लहूडा रम जोडि खेला नाचंता । ४८ ॥

सविहू सरीसा [illegible] [illegible] तेवड तेवडा नाचइ धा-

मीयरे [illegible] कडा सुल्लित वाणी मधुरि सादि जिण-

गुण गायंता ताल्मानु [illegible] मेलु वाजित्र वाजंता ॥ ४९ ॥

तिविलझालरि भेर करडि कंसाला वाजइं, पंचसब्द मंगली

[illegible] त्रिभुवनइं [illegible]. पंच सब्द वाजंति भाइ अंबर गहिरंती,

इणपरि उछवु त्रिगभुवणि श्री संघु करंतउ ॥ ५० ॥

वइ आरती [illegible] काइं आरती पडूपरि [illegible] संघ पारि

विधिहि [illegible] साहीउ [illegible] नीरलूण ऊतारियए कुसम

ऊतारी संघपति [illegible] सेभिभरइं [illegible] माडी संघपति आर

तीछिपा हुइ जइ वा [illegible] आरती जोग थाभली अभाणडग

[illegible] । ५१

पाछइ जिन [illegible] [illegible] [illegible] लोक श्रीसंघरीह

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आरतीअ [illegible] संघपति

[illegible] आवि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ३८ मनो-

हर [illegible] [illegible] ४२

[illegible] व. ४७ नोर

[illegible] [illegible] [illegible] हुसूम.

इ सविलास हुइ मृग० ॥ ६७ ॥

पाठां दोरी वींटणां वरसिद्धांतहमत्ति वानीदोरा ऊतरीय मृग लोयणे पोथीय थाय सत्ति ॥ ६८ ॥

श्रीजउ क्षेत्रु इम वावउनिरुपमलियउः लाभुहंता तणउजिम [७८]अट्ठकम्मगंजीउ भवदुह भंजीउ सिद्धि नयरि [७९]खेमिइ [८०]मुणउ ॥६९॥

हिव श्री श्रमण संघ [८१]भत्तिकर[८२]उजीवतुम्हियथाभक्तिपहि-लाउं कीजइतोइ पावयणा अनीय विशेपिहि आयरियउ वण॥७०

इणपरि श्रमणुक्षेत्रु वावीजइ, निश्चय भवसायरु तरीजइ जे जिनवरिमुनि कहिया आगमि, क्रियासार अनइ [८३]खरतसंजमि॥७१॥

[८४]पंचमहव्वयभारु धरंता, [८५]दसअनुच्चारि उपगरण वहंता, नव कलिपइ विहार करंता, ते मुनि भणियइ चारित्त दंता ॥ ७२ ॥

जे मुनि [८६]पंच समितिच्छइ समिता, त्रिहिं[८७]गुत्तिहिजे अच्छइ गुपिता, सीलंगसहस [८८]अढावरहंता, ते मुनि भाणियइ उपसमवंता ॥ ७३ ॥

जे मुनि निम्मल निरहंकार, सदाचार दीसइ [८९]सुविहार, जे धूरिजूता गणगच्छ भारा, ते मुनि भणिया गुणह भंडारा॥ ७४ ॥

ईणपरिमला क्षेत्र विशेपि, दियउ दानु तुम्हि भाविहरखि, जिम तु च्छूटउभवना भार, पामउ सिवसुहु निरुपमसारु ॥७५॥

---

७८ अष्टकर्म गंजनार. ७९ क्षेमे. ८० जाणो. ८१ भक्ति ८२ करो ८३ तीक्ष्ण संयमे. ८४ पंचमहाव्रतभार. ८५ चौद उपकरण मुनिनां छे. ८६ इर्या आदि पंचसमिति. ८७ मन, वचन अने कायगुप्ति. ८८ अढार हजार शिल्पांगरथना भेदने धारनार. ८९ सुविहार.

जे जिनआण सदाछइ रत्[९०], बावीसपरीसह सहइ अपमत्त जिन आदेसु धरइ सिरिउपरि[९१], तेजिमहामुनि नीपइ सुवारि ॥ ७६ ॥

बइतालीस[९२] दोषनु विसुद्धउ, लियइ आहारु जे जिणवरि दिठ्ठ, इंदिय विषय व्यापिनगृजइ, तवि, नीमि. संजमि खणवि[९३] न मूकइ[९४] ॥ ७७ ॥

किसुं[९५] घणडं[९६] हउं[९७] कहुं[९८] विचारो, मुनिरयण गुण न लहइ पारो, अनुव्रत[९९] वालइ[१००] जे जिन आण, ते मुनि भणीवइ मेरुसमाण[१] ॥७८॥

मसंसीइ मुनिजिहिया तेगुणजिणवरि श्रीमणी[२] कहिया एकु[३] विशेखु[४] पुणी[५] श्रमणी दीसइ उपगरनोइ[६] पंचवीसइ ॥ ७९ ॥

चालइ खड्गधार[७] तोऊपरि, सीलवंत ते नमीइं सुरवरि, महासती[८] जछइ[९] अपमत्त, धाराभणइ तेदिवचित्त[१०] ॥ ८० ॥

जींहां जिन आण[११] हियइ[१२] परिणमी, ते श्रमणी तोइ मेरुसमी[१३] जे सद्दी[१४] जिण आण करंती, धनुधनु[१५] श्रमणीइ महासती ॥८१॥

जिण सासणु[१६] जेहिय इम उज्जाआलिउ[१७], कसिमल[१८] पावपंकु[१९]

---

९० रक्त. (आसक्त) ९१ शिरपर. ९२ बेतालीस दोष रहित आहार लेनार. ९३ क्षण पण. ९४ न मूके. ९५ केटलो. ९६ घणो ९७ हुं. ९८ कहुं. ९९ पांच अनुव्रत. १०० पाळे. १ मेरु पर्वत समान. २ श्रमणी (साध्वी) ३ एक. ४ विशेष. ५ पुनः ६ साध्वी पचीस उपकरणवाळी. ७ तरवारनी धार ८ जे छे. ९ प्रमाद रहित. १० पवित्र. ११ आज्ञा १२ हृदयमां १३ मेरु समान १४ शुद्ध. १५ धन्य धन्य. १६ जैन शासन. १७ अजवाळ्युं १८ पाप. १९ पापपंक

२०
पखालिउ, एउ साहू अनइ श्रमणी सिच, वावन धामी हुइउ स
विनू ॥ ८२ ॥

जा हिवडांवूं संपति अच्छइ, इणीय वरावन पामि सिप्पछइ
२१ २२ २३ २४
जं भलखेत्रि वित्त न वाविसि, पाछइ परभवि किसउ लुणाविसि
॥ ८३ ॥

वरापटली वितु वाविसि सार, ऊगिसिसउ सुकाइ फववाह
जउ भलो, खेत्रि वरापइवाविसि, तउ इक गुणइ अणंतगुण पा
विसि ॥ ८४ ॥

२५ २६
एतलं खेत्रं जिनवरि कहिया, वावे धम्मी भावणसहिया, त
२७
सीचे अनुमोदनापाणी, जिमहुइ सफली गयानिरुवाणी ॥८५॥

२८ २९
ईणपरि वाविजइ सुखेत्र, दीजइ भक्त पानु सूझंट विपादा
नुंज्ञ दीसइं सार, जिणु भणइ ते पुन्य नहीं पार ॥ ८६ ॥

३० ३१
ओषध आदि सह सूझतउं दीजई, नियवर नियघरिहुंतउं
अनिउज्ञ कांइ मुनि उपगरइ, तंसूझतवूं वहरउं फरइ ॥ ८७ ॥

३२ ३३ ३४
जंजंमुनि जोअइ सूझंतउं, तंतं दीजइ नियघरहुंतउं, गुरु
३५ ३६
आवंतो कीजइ अभिगमणउं, दीजइ भक्ति थोभवंदणउ, ॥ ८८ ॥

३७
विनय वयावचमनीउ विशेषिउ, कीजइ सुबीउ महा मुनिदे

२० धोयुं. (पखाल्युं) २१ पछे. २२ परभवमां २३ शुं. २४ लुणीश २५ धर्मि. २६ भावना सहित. २७ अनुमोदनारूप जल.२८ क्षेत्र. २९ सुजतुं ३० सुजतुं. ३१ पोताना घरे होय ते. ३२ जो-इए. ३३ सुजतुं. ३४ पोताना घेर होय ते. ३५ सामा जवुं. ३६ स्थोभ वंदन. ३७ वैयावृत्य.

खीउ, पर्युषासिन तही कीजइ घणीय, जिमजिम जिनवरि आगमि भणीय ॥ ८९ ॥

पहज परिश्रमणी जाणेवी. करउं भक्ति तुम्हि हरिख धरेवी, जेहस महामुनि दीजइ, संतं श्रमणी कीजई ॥ ९० ॥

आगइतोइ[38] पूर्विहि[39] सुणीजइ, धनुधनु[40] सारथवाह कहीजइ, घीउ[41] विहिराविउ[42] जिणमुणिंदउ, तिणि फालि हूयउ[43] पढम जिणंद[44], ॥ ९१ ॥

हथिणाउरि[45] नयरि[46] श्रेयांसि, हियरो विडारिपु सुरिपुरिसि, तिणि फालि तिणभावि केवलु ज्ञानु[47]. दिइतु भविक मुनि इणपरि दानु[48]॥९२॥

वीर जिणेसर छद्दा मास, वंदण पारवेइको मास, तीणि दानि व संपति पामी, दियउ दान[49] तम्हि अनत्रव धामी[50] ॥ ९३ ॥

जोइन संगाविकीडं, मुनिधारावीउ खंड खीरु[51] घीउ[52], तिणि फलि तु सर्वार्थ सिद्धि पामी, पाछइ होसिइ सिवसुहगामी[53] ॥९४॥

इउ भल्लुं[54] खेतु वावउ वितु, सिवसुह संपत्ती देइन भवि न भवि सामि सालु आगमि भणिचि ॥ ९५ ॥

हिव तोइ श्रावक तणओ क्षेत्तु भवी कहीसइ जउ जिण सासण तणी भूमिं अति भलउं फलीसिइ किसउ सुश्रावक जाणिवउ

---

३८ आगेनो. ३९ पूर्वे. ४० धन्य धन्य. ४१ घी (घृत) ४२ वेहराव्युं. ४३ थयो ४४ जिनेन्द्र ४५ हस्तिनापुर. ४६ नगरी. ४७ केवलज्ञान. ४८ दान ४९ दान ५० अनुत्तरधामि ५१ - वीर. ५२ घी. ५३ शिवसुख गामी ५४ भलुं.

जिणागमग भिंतरि, श्री वीतराग तणीय आण मानइ गिर उपरि ॥ ९६ ॥

समकित गुण मूलाधार व्रत, पालइ नरनारि नियमइ हियडइ वीतरागगुरु पूजि सुगमाइ कामदेव जिम चालइ नहीं वीतरागइ धर्म वीरनाइ निजवर दियइ नगुनी उत्तम ॥ ९७ ॥

सदाचार सुविचार कुशल भनइ निरहंकार, श्रीजयंत निकलंक भनइ दीनगण आधार, जिनइ वचनि जिम मानधातु जीव श्रावक भेदी, जाणे मीह गर्भवास वेलि मूलहुंनी छेदी ॥ ९८ ॥

सांगइ उचित गइ काज लोचन, विचारउ धातुविमनमाहि वसइ इसु निभइ माह, उत्तमगे भनइ भवतइ एहइ जाण सविसेसु मानियइ श्रावकतणी मारीमय मूर्छा गालीइवइ कुविचिका॥९९॥

जे गुण श्रावकतणा भणिय कहीयइ जिण सासणि ते गुण जिनवसइ श्रीविंबइ जगेवा नियमा ॥ १०० ॥

जिरा मुंडि वीतराग वरइ मनर्धा भिवरि जीइ सुलहइ मि पुरुवनइ वासनी श्रावक नीदेवइ जिणवयण सुणइ मंदेगि संगुणिय मोक्षमनादि वडिदि अमकवाव सुगी ॥ १ ॥

ईइ गुणवइयणइ वेइ वाउ गदि दीस मे तुडिइ मविवइ भवउइ वाइ धर्मरमी उत्तीम जिम मारथेमनिवारी जिमेइमार्द-

---

९५ मस्त. ९६ हुइं. ९७ वीतराग. ९८ वीतराग. ९९. सदाचार ८० मुहित ८१ कुशल ८२ निरहंकार ८३ नामि ८४ दौवि ८५ श्राव ८६ गमां ८७ [illegible] ८८ घारिक. ८९. मुंडि ९० सुरजयणइ ९१ दइ ९२ मार्नेश

दीणे मुहवास ऊपरि ज्ञानुना सुपसरीइ तिहुयणि ॥ २ ॥

तिम तुम्हि वावेउ भलीपरि भविउइ सिंतु लहिमउ लुण निरवाण नयरिति पतिहावुहुतुपहिलुं कीजइ महाविनइं गुणश्रावक मनाद जाणी पाय पोय पखोलीय सइहाविलेउ कुंकुम वाणी ।३।

इणइं भोजनुं भलीयभक्ति सविवेकिहि सयउ दीजइ श्राविकां एइ आगमि कहिउ इपरिउगटि फल पान कापड अनुमानिया दीजइ जिनभक्ति भलागस्यइ बहुमानि ॥ ४ ॥

भद्रेसर जिम श्रावकह दीजइ आवास लीगाजे जिनवयणि भणइ वणहनिवास आछिलनी परि एक कीसइ परिहुइ अइम संताविधि मानु फरसइ सहू नरनारी दुःख ॥ ६ ॥

वाछिलनी परि एकमीतदडंकरीइ नमसारुइ एकहवार स- इसारु तुम्हकहीइ अजमूकिइं जीजो कीजइ कुणवकाजिए अति मलांभलेरांतो कीनइ साहमिय प्रति अजी अधिकेरां ॥ ६ ॥

कीधे काजे सुदेव भाण अनिवणइ संसारेइ सीरे संकीजइ साहमियकेरउम कीजइ साहमिअकाजिने परत भटारो इणपरि वाछिल श्रावकह कीजइ सुवंश हवने कहीसिइ जिणभवणि वा छिउ अंतरंगु ।। ७ ॥

जिणपरि [illegible] एइ [illegible] भावक श्राविक [illegible] ते कीजिनइ परमपदान [illegible]

पहेलि [illegible] दाहिद

[illegible]

[illegible]

33

प्रत जीव आनंदि लहंता प्रतिमा नीम[७८] अभिग्रह संपज्जइ तिणि
हाथ अनेकि[७९] सुकृतऊपजइ कुहिया केद्द वरमाद ॥ ९ ॥

ते छे सुगुरु वखाणु[८०] करइ आगम तदापि सहू समाधिपइ स
विभलइ श्रूप्य नरनारे थापनाचार्य[८१] नउ कीवटओ सिंहासण की
जइ नउकरवाली[८२] चिरवली[८३] मुहपती[८४] मूकीजइ ॥ १० ॥

संथराऊतरउ टपाटिकीजइ पुंछणाकेरे पोसाल[८५] पटेला अ
नइ दंडा[८६]उछणा कानोपलणीय[८७] पडंजणीय[८८] कानाऊधरणी[८९] पाँच
पमारनगइयामि एकानइ करणी ॥ ११ ॥

दीसइ कमठीतणी थया वीजर सिद्धांतूं ज्ञान पईना जी॰
वनी छोनीटि दीसइ आगर पडवडा अनइ नाणाहोई ईह सामई
रोम इमा थोडीया आगम अणुमोदे[९०] पुणतुम्हे वावीये मन्त्रीय परि॰
चित्र आपणारे॰ ॥ १२ ॥

आदि आपत्ययने तुल्लिडं तीड थानदि वाचे जिन सासणि मे
घीनु कुल्हिक मंडपुरडारे अंथ समुद्दाइ मद्द फोड नीरप पंदावे,
देव जाव गुरु भाव कोडि नड मल्ड मणावे. ॥ १३ ॥

इमविनु श्रुरेवड अम्म सु मंगड अर्थ जीवमात्रय सुड
वर्द्धीन नंदि मड मम्मान् प मड केवड मंडलु[९१] मर माणमड ॥१४॥

---

७८ नियम ७९ अनेक. ८० व्याख्यान. ८१ स्थापनाचार्य.
८२ नवकारवाली ८३ चरवला. ८४ मुहपत्ति (मुखवस्त्रिका, मुखानन्तक.) ८५ पौषधशाला. ८६ दंडासण. ८७ कानोदर्णी.
८८ पुंजणी. ८९ कानाउधरणी. ९० आगम अनुमोदे. ९१ मंडल.

सात क्षेत्रनो रास सं. १३२७ नी सालमां गुर्जर भाषामां रचायो छे. बुद्धि प्रमाणे सुधारो कर्यो छे. मूळ प्रति प्रमाणे मूळ छपाव्यो छे, अने तेमां कोइ ठेकाणे शब्दो सुधार्या छे. फुटनोट पण बुद्धि प्रमाणे यथाशक्ति करी छे तेमां दोष होय तो पंडितो सुधारशो, अने आ रास संबंधी गुर्जर भाषाना पंडितो शोध करशे तो आ रासने सारी स्थिति उपर मूकी शकशे. एम आशा रखाय छे गूथे यथाशक्ति यतनीयं ए न्याय अनुसारी प्रयत्न कर्यो छे. जिनमंदिर, जीर्णोद्धार, साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, ज्ञान, आ सात क्षेत्र जाणवां.

शोधक मुनि.
बुद्धिसागर.

अथ श्री यशोविजयवाचककृत.
ब्रह्मगीता.

< >

दुहा

प्रणमिय सरसती विश्व माता, होय कविराज जस ध्यान ध्याता;
कहिश संक्षेपथी ब्रह्मगीता, सांभळो तेह गुण जस वदीता. १

राग काफी

ब्रह्मवादी शिर सेहरो, ब्रह्म मनोहर ज्ञान;
ब्रह्मगीतादिक सूत्रना, ब्रह्म गुणना ध्यान.

मोह अगम्य निवारण तारण तरण जिहाज,
जंबुकुमर गुण थुणतां जन्म कृतारथ आज. २

शेष जस वदने सत मदन जिहा,
आवरु वळी असंख्यात दीहाः
तास पणि जंबु मुनि सुगुण गातां,
पार नावे सदा ध्यान ध्यातां. ३

शील सलिल जे पाले वाले चेतन्य चित्त,
आप शक्ति अजुवाले त्रिहु काले सुपवित्त;
पाप पखाले टाले मोह महामदपूर,
स्वसरूप संभाले ते निज सहज सनूर. ४

एहवा जंबु मुनि पुरुष सिंह,
जेहनी कोय लोपे न लीहः
भववर्धा शील सम्यक्त्व तुंबे,
इसी नदी मांहि ते केम विलंबे. ५

सोहमवयणे जागी वयरागी सिरदार,
सोभागी वडभागी मागी अनुमतिसारः
मातपिता प्रतिबुजवे आठ कन्या उपरोध,
करणी परणी तरुणी जीपे मन्मथयोध. ६

आठमदनी मदा गज गामी,
आठ ए मोह माया निशानीः
जगवशी करणनी दिव्य विद्या.
कामिनी जयपताका अनवद्या ७

प्रेम मटके जगमोहे लटके लोयण चंग,
नव यौवन सोवन तन रूपक रूपित अंगः

शृंगारे नवि माती राती रंग अनंग,
अलवेली गुणवेली चतुर सहेली संग. ८

जेहने देखी रवि चंद थंभे,
थंभ हरिहर अचंभे विलंभे;
कवणनुं धैर्य रहे तेह आगे,
जंबुनी टेक जगि एक जागे. ९

आठ ते भूमि भयंकर शंकर कर जित लेइ माम,
श्रम करि सीखीने सज थयो फिरि जगजय परिणाम;
सरव मंगलालिंगित देखी जंबु कुमार,
जुजे जुजे पंडित तिहां जयभंग प्रकार. १०

चाप जे मयण करि बाण न्हाखे,
जंबुवर धैर्य सन्नाह राखे;
चाप हुइ पंख हुओ मयूह ठामे,
धैर्य पूजा कुसुम जंबु पामे. ११

एणी नयनानी वेणी लेइ धायो नरवारि,
ते तिहां थंभी दंभी सयन्ने पामी हारि;
कांनि झाल जयुके तोली रह्यो भानु चक्र,
तेह सुदर्शन धारीसुं पणि न हुवे चक्र. १२

नाकि मोती ते बंधूक छाकि,
गोलिका ते रह्यो मांनु ताकि;
दृष्टि करि जंबु धैर्य नांइ लोपे,
रहे ढलती ने आभरण रूपे. १३

दिपनग्र हिये फोरमे जोर थाया अंधकार,
जेहमांहि थंभ पुरंदरनो पणि नांहि पार;

गरुविचार उपोतने मुरे ते जंबु कुमार;
मोघ शक्ति करि संवरी पाम्या जगि जयकार. १४

जाणीये काम हत्त्वि मूल,
थाइ संकल्पथी ते त्रिशूल;
ज्ञान परी जो न संकल्प कीजे,
उपजे काम कहो कोणि बीजे. १५

हुओ अनंग तेतारुरे जोतुं परतो अंग,
दाणकरण तांइ ताणीने नांपत होत अनंग;
थोयां कूटये स्युं होइ जो तुं चित्त विकार,
कांटे कांटो काढस्युं चिधिरि ज्ञान विचार. १६

भावना इम क्षमादिक मपंची,
गस लीयां सकल तास पंची;
तेणि न चले ते नाठा कषाय,
पडि अवेलाइ कुणहोइ सहाय. १७

तुं जाणे जित काही जगवासी कीयोजेर,
पणि जिनभांणनी आंणमां वर्ततो हूंहुं सेर;
अम्ह साहामिणी सीतादिक अवलाथी पणि भग्ग,
तुजस्युं झुझस्ये किणिपरे इम कहि नाठा ते नग्ग. १८

सज्ज थाती हुंति मदन फोज,
आठ कन्या कथा सुणत मोज;
जंबुनी अडकथाये ते भाजे,
जंबु जीते अने कंदर्प लाजे. १९

आठ ते कामिनी ओरडी गोरडी चोरडी चित्त,
मोरडी परिमद मासनी नावती गीत;

दीठि गलावइ छोरडी बोरडी पाकी जेम,
जंबुकुमार ते लेखवे कोरडी दोरडी तेम; २१

विश्व वशीकरणथी जेह सबला,
तेहनो नाम किम होइ अबला,
नाम माला तणी माम राखी,
जंबु ग्रंथ तणा सकल साखी, २२

आठ कन्या आप ते जननी जनक समेते,
चोरी करवा आव्या ते चोरने प्रभव सहेत;
ए सवि दीक्षा आदरी विचरी उग्र विहार,
जंबु ते पूर्वधर हुआ सोहम पट्टधार. २३

वर्ष अतिक्रमे अनुत्तर विमानी,
सुर अधिक सुख लहे ब्रह्मज्ञानी.
ते हुआ शुक्ल शुक्लाभिजाति,
आत्मरति आत्मतृप्ति कर्मघाती. २४

ब्रह्मरूप निरुपाधिक आतमज्ञान ते योग,
इन्द्रजाल सम सघला पुद्गलना संयोग;
उपादान पुद्गलथी पुद्गल उपचय होइ,
कर्ता नहि तिहां आतमा निश्चय साखी सोइ. २५

एह अध्यातम ते मोक्ष पंथ,
एहमां जे रह्या ते निर्ग्रंथ;
एह अंतःकरणे होइ शुचि बीजे,
विहित किरिया नैगमादिनी कीजे. २६

नय होइ युक्ति जानां किरिया ज्ञाननी व्यक्ति,
साधन फलता होइमां साधन शक्ति;

आणा विणा आचारमांहि आणे अनाचार;
जेहु मने इम सोहम कहे अंगे आचार. २७

ज्ञान क्रियादिकतणा इम अभ्यासी,
हुइ चिदानन्द लीला विलासी:
स्थानवर्णार्थ आलम्ब अन्य,
योग पांचे हुआ जंबु धन्य. २८
वली इच्छा प्रवृत्तिने थीरवली सिद्धि ए भेद छे चार,
प्रीति भक्तिने वचन असंग तिहां सुविचार;
सकल योग ए सेवी पामी केवलनाण.
मुगते पुहता तेहनुं नाम जपे सुविहाण. २९
खंभनगर थुण्या चित्त हरखे.
जंबु वसुभुवन मुनि चंद वरखे;
श्री नय विजय बुध सुगुरु सीस,
कहे अधिक पुरयो मनह जगीस ३०

॥ इति श्री यशोविजय विरचिता ब्रह्मगीता समाप्ता: ॥

श्री यशोविजय वाचक कृत.

आदि जिनस्य संस्कृतभाषायां स्तवनम्.

आदिजिनं वंदे गुणसदनं,
सदनंतामलबोधं रे:
बोधकतागुणविस्तृतकीर्ति,
कीर्तितपथमविरोधं रे. आ० १

रोषरहितमविस्फुरदुपयोगं,
योगं दधतमभंगंरे;
भंगनयव्रजपेशलवाचं,
वाचंयमसुखसंगंरे. आ० २

भंगनयविपदघनतरंगं,
रंगं जगति ददानंरे;
दानसुरद्रुममंजुलहृदय
हृदयंगमगुण भानंरे. आ० ३

भानंदितसुरवरपुन्नागं,
नागरमानसहंसंरे;
हंसगतिं पंचमगतिवासं
वासवविहिताशंसंरे. आ० ४

शंसंतं नयवचन नवमं,
नवमंगलदातारंरे;
तारस्वरमघघनपवमानं,
मानसुभटजेतारंरे. आ० ५

इत्थं स्तुतः प्रभुः शीलविजयः सूरीशः,
कल्याणविजयवाचकगुणेन
श्री पुरंदरविजयमहिमचरणभाजा
मानेन्दुचरणविनयेन मया गुणविनयेन आ० ६
इति श्री जिनस्तवनम्

मनभ्रमर.

ओधवजी संदेशो कहेजो श्यामने-ए राग.

मनः भ्रमर बहु भ्रमण करे भववनविषे,
घडी घडीमां नवनव वृक्षे जायजो;
गुंजारव करतो गर्वित थइ आथडे,
विषय पुष्पने देखीने हरखाय जो. मन० १

रागद्वेष बे पांखो काळी नेहनी,
षट्पदना मिषे षड्रिपुनुं ठामजो;
नवनवरंगी विषयपुष्पपर बेसतो,
कामकमळमां लपटातो दुःख धामजो. मन० २

काष्ठवंशने कोतरतो जे तुर्तमां,
काळहस्तिथी काम कमळ भक्षायजो.
चौंचों करतो काळकोळीयो थइ रहे,
रविविद्युत् पेठे ते चंचळ थाय जो. मन० ३

काळ अनादि विषय पुष्प सुंघ्यां घणां,
मनभमराने तोपण तृप्ति न थाय जो;
अकळगति मनभ्रमरनी क्षण क्षण विषे,
मनभमरो अहा त्रणभुवनमां जाय जो. मन० ४

मन भमराने पुरो समता पांजरे,
रखे न उडे लेश बहु संभाळजो;
चौदभुवननो मोक्षीलो स्थिरता धरे,
त्यारे पावे ब्रह्ममां मंगळमाळ जो, मन० ५

ध्यान दोरीथी मनमपगने बांधीए,
अनुभव अमृत स्वाद करावो बेश जो;
बुद्धिसागर अन्तरमां समज्या थकी,
आत्मस्वभावे आनंद होय हमेश जो. मन० ६

ॐ शान्ति.

श्री सद्गुरु सत्तरी.

ओधवजीना रागे.

नमन हजो शुभ एवा सद्गुरु ज्ञानीने,
जगत जीवोने शांति दायक देवजो,
समाश्रयण जे करावे समता आदरी,
दर्शनथी शाश्वतपद छे तनसेवजो. नमन ह० १
ज्ञायकभावे वरते सत्य स्वरूपमां,
साध्यक्रियाने करता गुणनी ग्राणनो;
उपशम परिणामे वहेता चारित्रने,
मोडे मिथ्यामोहमणिधरमान जो नमन० २
हरदम समयने जाणे श्वासोश्वासथी,
जिन आज्ञाने छंडे नहि लवलेश जो;
आगमनी साक्षे जाणे नां मानवे,
स्थिर विरागी अन्ये वरता सवेग जो. नमन० ३
दीन कुमतना दूर करे सर्वे कुमत
सहचारी निज शांत नमे भगुर जो;
आत्मस्वरूपे शांत रहे शम शम चिंत.
दृढ मनावागी धरता अवधूत जो नमन० ४

उपसर्गो सहवामां सिंह समा वळी,
समभावे रहे समुद्रसम गंभीर जो;
शुद्ध ज्ञान धरता जे अलख अभेदनुं,
ए चक्रोने भेदे योगि वीर जो. नमन० ५

द्रव्य भावथी परवस्तुने त्यागता,
निर्विकल्पने वैरागे तल्लीन जो
अचळ अडोल अफंद अविकारी सदा,
गुरुपरंपर आगममांहि प्रवीण जो. नमन० ६

त्रण शल्यने तृणवत् जाणी त्यागता,
गारव रस रिद्धिने ज्ञाता साथ जो;
धर्म करण कारणन सहेजे संग्रहे
राग द्वेषनो त्याग दयाना नाथ जो. नमन० ७

निंदा विकथा चारे त्यागे नित्य जे,
कषायने ता कहाडे घरनी बहारजो;
वचन जेहनां पडे हृदयमां सोंसरां,
तत्वज्ञान ने धर्मकथानी वखार जो. नमन० ८

चरण नावमां बेठा मुनिवर साधता,
मुक्तिपुरीनो मार्ग चीकट सुखमेवजो।
चार भावना मित्रादिक जे भावता,
जग जंतुथी वेर शमावे टेव जो. नमन० ९

पंचमहाव्रत विशुद्धताथी पाळता,
गुप्ति समिति अनुआज्ञ स्वयमेव जो;
अतिचारने दूर करी ज्ञानी गुरु,
पंचाचारे चरे ज्ञानामृतमेव जो
छकायना जीवोनी रक्षा बहु करे,

सिद्धसमा सर्वेछे जीवो, सत्ताए गुणवंत,
कोइ न शत्रु तेमां म्हारो, निश्चय चित्तवसंत;
शिष्योने हुं समावुंरे, गुरुओने प्रेमभरी. जीवोने. ६
करुणा सर्व जीवोपर रहेशो. द्रव्यभावथी नित्य.
परगुण परमाणु पर्वतसम. भासो प्रमोदे चित्त;
माध्यस्थभावे रहीनेरे, समुंसमावुं करगरी. जीवोने. ७
अहंभावनो खेद टळो सहु, नासो माया दूर.
द्रव्यभावथी जीव समावुं, ज्ञानानंद भरपूर;
द्रव्यभावपर्यवेरे, मलीनता दूर हरी जीवोने. ८
त्रण भुवननो नाथ अहो हुं, सत्ताए कहेवाउ,
आप स्वरुपे ध्याने रहुं तो व्यक्तिपणे शुद्ध थाउ;
बुद्धिसागर ज्ञानेरे, जागतां शिवनारिवरी. जीवोने. ९

वाणी.

वाणी वाणीरे म्हारा गुरुनी वाणी,
योगिए पकडी घर आणीरे, म्हारा. १
वाणी उपर जे जन बेठा. मुक्ति पुरीमां ते पेठारे. म्हारा. २
वाणी पाणी मांहि पीजाणे, मोक्ष तेनो ठोर खाशेरे म्हारा. ३
वाणी वेश्याना संदेश्या सपजे नहि तो अंदेशारे. म्हारा ४
मार्ग अनेकने नगर ■ एक बुद्धिसागरनी छे टेकर. म्हारा. ५

अवळी वाणी.

ला जग सांभळो संतोरे, के नाव पर दरियो चाल्यो जाय,
ंडिया बावा जति सन्यासी, खाखी जोगी फकीर.
जळमय दुनिया देखी ज्यारे, रही नहि कोइनी धीर. भला १
क कीडीए दरियो पीधो, तो पण तरसी थाय.
ार मेघनां पाणी पीधां, नदीमां डुबी जाय. भला. २
एक सरिता नीची व्हेती, ऊंची चाली जाय;
ए सरितामां स्नान करे ते, हतो न हतो थाय. भला. ३
पूजारीने तीरथ पूजे, रची माछले जाळ;
पकडाणा धीवर ते जाळे, जोया जेवो ताल. भला. ४
एक तमासो एवो देख्यो, ज्यां सहु एकाकार;
हिंदु मुसल्ला पारसी सहु, खाय पीवे एकलार. भला. ५
एक वानवुं अद्भुत देख्युं, त्रण भुवन तोलाय.
बुद्धिसागर अवळी वाणी, कोइकने समजाय. भला. ६



अन्त्यमंगलम्.

श्री संखेश्वर पार्श्व प्रभु जयकारी पग पग जगजयकारीरे. श्री
चिंतामणि तुजमंत्र मजायो. आपणा ध्यानथीज ध्यायो.
भक्ति प्रताप दर्शन पायो. अनुभव आनन्द पायोरे. श्री १

धरणेन्द्रपद्मावती देवी, साय करे जयकारी.
पार्श्वयक्ष बहु साय करेछे, मंत्रचिंतामणि धारीरे. श्री. २

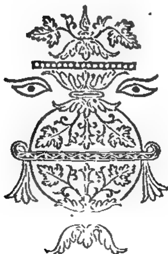
इष्टदेव वामादेवीना नन्दन, शरणुं छे एक तमारुं;
नाममंत्र तुज जगमांहि मोटो, काम करे छे सहु धार्युंरे.श्री ३

दर्शन देइने आनन्द आप्यो. विघ्न हर्यां बहुभारी;
साकारने निराकार तुंहि प्रभु, जिनशासन सुखकारीरे.श्री.४

पुरिसादाणी परमकृपालु, ध्यान धरु उरधारी;
बुद्धिसागर शासन देवो, पग पग मंगलकारीरे. श्री. ५

सं. १९६५ विजयादशमी. अमदावाद.

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः



श्री भजनपद संग्रह चोथा भागनुं अशुद्दि शुद्दि पत्रक.



पत्र.	लीटी.	अशुद्दि.	शुद्दि.
३	१०	वृस	सत्
९	१४	स्वहि	स्वद्दि
९	१८	बुद्दि	बुद्दि
११	११	सनाव	सनाथ
१२	१	औंदपिक	औंदयिक
१६	९	व्यवहार	व्यवहार
२६	१७	शुद्द	शुद्द
२६	१८	बुद्दि	बुद्दि
२८	४	दुख	दुःख
३१	९	खयं	स्वयं
३१	१७	वडी	घडी
४२	१४	सुपुम्ना	सुषुम्ना
४७	२०	स्थिरोपयोगो	स्थिरोपयोगे
४७	२०	शोयवां	शोधवां
५३	१६	चिदान्द	चिदानन्द
५५	५	शुद्द	शुद्द
६९	५	सद्द	सद
७२	९	कथा	कथां
८२	५	मीनथी	मतिथी
८२	१६	मोड	मोड
८४	८	वांदान्मारे	वांदोन्मारे

पत्र.	लीटी.	अशुद्धि	शुद्धि
१००	६	अहां	अहो
१०९	७	धसोछे	धसोछो
१११	३	रले	रेले
११२	६	मूढ	मूढ
११०	१९	पढी	पढे
११३	११	मनमा	मनमां
१२३	१४	झल्या	झूल्या
१२३	२१	अरे	अरेते
१३९	९	नाश	नाश
१४९	९	मम्नुना	मम्रुने
१५१	२१	आत्मा	आतमा
१५३	१९	फरतो	फरुतो
१५३	२३	संवद	संधरु
१५४	१७	आत्मा	आतमा
१५८	२१	वरतु	वस्तु
१६९	४	गी	गीत
१७१	११	आरायन	आरायन
१७२	८	शलि	शील
१७५	१०	वक्र	घत्र
१७६	४	विपय	विपय
२०३	१३	निण	निगुण
२०७	६	दिठ	दिठ
२१३	२१	नहां	निहां
२२०	४	सनजा	सनेम